सूर्योदय : 6:56
सूर्यास्त : 5:37
अधिकतम तापमान : 14.0
न्यूनतम : 7.0

RNI NO : UPHIN/2010/31173

डाक पंजीकरण संख्या:
SSP/LW/NP-422/2014-2016

वर्ष-17 अंक-225 पेज-16
मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, बुधवार, 24 जनवरी 2024
12 रजब, 1445 हिजरी

हिन्दी दैनिक

अवधनामा

www.avadhnama.com

अयोध्या में चार लाख भक्तों ने किए रामलला के दर्शन

भारी भीड़ को देखते हुए सीएम योगी ने खुद संभाली कमान

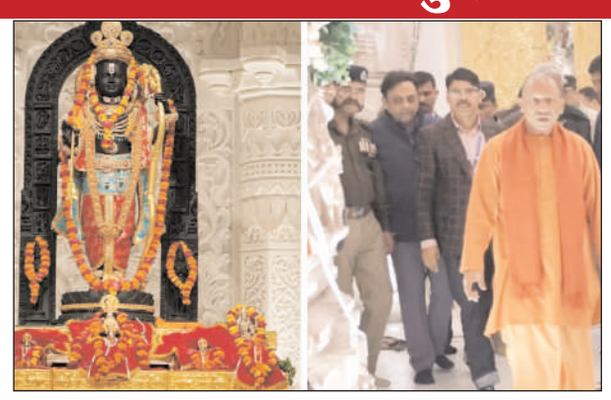

अयोध्या। प्राण प्रतिष्ठा के बाद मंगलवार को जब राममंदिर आम भक्तों के लिए खुला तो आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। मंदिर खुलने का समय सुबह सात बजे से है, लेकिन रामजन्मभूमि पथ पर भोर चार बजे से ही श्रद्धालु आ डटे। रात दस बजे तक 4 लाख श्रद्धालुओं ने रामलला के दरबार में हाजिरी लगाकर नया रिकॉर्ड भी बना दिया।

रामलला के दर्शन का उत्साह इस कदर था कि सुबह की भीषण शीतलहर भी आस्था के सामने बौनी नजर आई। इनमें से अधिकतर श्रद्धालु बीते तीन दिनों से अयोध्या में रुके थे। कुछ श्रद्धालु जब 19 व 20 को अयोध्या पहुंचे तो उन्हें पता चला कि मंदिर तीन दिनों के लिए बंद कर दिया गया है। बड़ी संख्या में श्रद्धालु वापस ही नहीं गए। अयोध्या में ही जहां जगह मिली ठहर गए। श्रद्धालुओं की भीड़ को देखकर अफसरों के हाथपांव फूल गए। प्रशासन ने तुरंत मजिस्ट्रेटों की व्यवस्था कराई। पुलिस के साथ

- **आपस में धक्का-मुक्की न करें: मुख्यमंत्री**
- **अब सुबह छह से रात 10 बजे तक होंगे रामलला के दर्शन, सिर्फ आरती-भोग के वक्त रहेगी रोक**

यातायात पुलिस ने भी मोर्चा संभाला। वहीं मंगलवार को अचानक अयोध्या पहुंचे मुख्यमंत्री ने पहले हवाई सर्वेक्षण कर स्थिति का जायजा लिया, फिर स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों के साथ बैठक कर श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा और सहूलियत के लिए आवश्यक इंतजाम करने के लिए दिशा-निर्देश दिया। इसके बाद श्री रामजन्मभूमि मंदिर पहुंचे मुख्यमंत्री ने मंदिर न्यास के पदाधिकारियों के साथ दर्शन के लिए उमड़ रहे अपार जनसुमद्र के प्रबंधन, दर्शन-पूजन व्यवस्था को और व्यवस्थित करने पर चर्चा की। इस बीच, मुख्यमंत्री ने देश के हर कोने से आ रहे श्रद्धालुओं से संयम और सहयोग की अपील की है। आस्थावानों की भावना का सम्मान करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा है कि अयोध्या में उमड़े जनसमुद्र के बीच सबको रामलला के दर्शन हों, इसके लिए संयम बनाये रखें। अत्यधिक भीड़ से दर्शनार्थियों को असुविधा होगी। ऐसे में सभी लोग श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास, स्थानीय पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों का सहयोग करें। उन्होंने कहा है कि सरकार, न्यास और प्रशासन प्रत्येक रामभक्त को सुविधापूर्वक दर्शन कराने का प्रयास कर रहा है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद श्रद्धालुओं की संख्या में हुए भारी इजाफे के मद्देनजर रामलला के दर्शन की अवधि बढ़ा दी गई है। जिला प्रशासन और राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से नई परिस्थितियों को देखते हुए यह निर्णय किया गया है। अब सुबह छह बजे से रात दस बजे तक दर्शन होंगे। डीएम नितीश कुमार ने बताया कि इस बीच आरती और भोग के दौरान थोड़ी देर के लिए श्रद्धालुओं को रोका जाएगा। यह प्रक्रिया पूरी होते ही फिर से दर्शन शुरू हो जाएंगे।

मुस्तैद है पुलिस, वाहनों की हो रही चेकिंग

मुख्यमंत्री के निर्देश पर जिलाधिकारी ने आठ स्थानों पर मजिस्ट्रेट तैनात कर दिए हैं। इन मजिस्ट्रेट को शांति, सुरक्षा, यातायात व लोक व्यवस्था के प्रबंधन के लिए लगाया गया है। श्रद्धालुओं के सुगम व सुरक्षित दर्शन हेतु अयोध्या पुलिस द्वारा सभी ड्यूटी प्वाइंटों पर पुलिस बल तैनात कर रही सतर्कता बरती जा रही है। जनपद के सभी अन्तरजनपदीय बार्डर, बैरियर, चेक प्वाइंट पर पुलिस बल की ड्युटी लगाकर जनपद मे आने वाले सभी संदिग्ध वाहनों, व्यक्तियों की चेकिंग की जा रही है। साथ ही सभी महत्वपूर्ण स्थानों, होटल, रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन पर संदिग्ध वाहनों, व्यक्तियों की जांच की जा रही है।

धक्का-मुक्की से कई लोग जख्मी, 67 भेजे गए श्रीराम अस्पताल

प्राण प्रतिष्ठा के बाद मंगलवार को श्रीराम मंदिर में दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ी तो धक्का-मुक्की से कई लोग जख्मी हो गए। इनमें तीन श्रद्धालुओं का पैर फ्रैक्चर होने से मेडिकल कॉलेज व जिला अस्पताल भेजकर इलाज करवाया गया। जबकि अन्य कई मरीज अलग-अलग अस्पतालों व उपचार केंद्रों पर इलाज करवाए। मंगलवार को श्रीराम मंदिर में भीड़ का दबाव बढ़ने पर धक्का-मुक्की होने लगी। परिसर में अपर निदेशक डॉ. पवन कुमार अरुण, सीएमओ डॉ. संजय जैन व नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राममणि शुक्ला स्वयं चिकित्सीय टीम के साथ मुस्तैद रहे और मरीजों को एंबुलेंस से श्रीराम अस्पताल भेजवाया। शाम चार बजे तक यहां पहुंचे 67 मरीजों का इलाज किया गया। इनमें अधिकांश में मामूली चोटें, बेहोशी व बेचैनी के लक्षण, घबराहट आदि नजर आए। एंबुलेंस से उन्हें मेडिकल कॉलेज भेजवाया गया। वहीं उड़ीसा से आए साधू नभाधन शरण व बिहार के बेगूसराय निवासी सुरेंद्र मेहतो के पैर में फ्रैक्चर होने पर प्लास्टर चढ़वाया गया। इसके अलावा विवेक (17), रमेश (57), संतोष शर्मा (45), सालिकराम (65) सहित सात मरीजों को श्रीराम अस्पताल से मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया।

कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न मिलेगा

- **हाशिये पर पड़े लोगों के लिए मसीहा थे जननायक: पीएम मोदी**

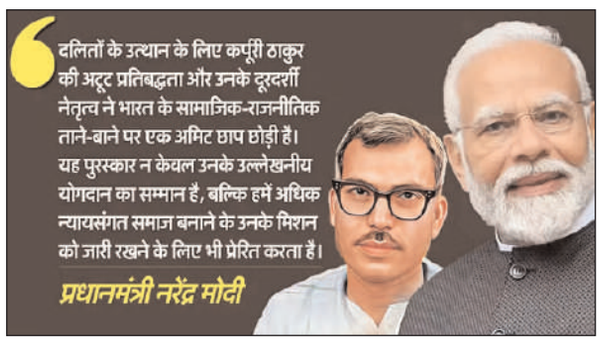

नई दिल्ली। दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे कर्पूरी ठाकुर को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा जाएगा। केंद्र सरकार ने मरणोपरांत उन्हें यह सम्मान देने की घोषणा हुई है। दो बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे कर्पूरी ठाकुर पिछड़ों के बड़े हिमायती के रूप में जाना जाता है। इस घोषणा के बाद कर्पूरी ठाकुर के बेटे रामनाथ ठाकुर ने खुशी जाहिर करते हुए केंद्र सरकार का धन्यवाद दिया। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इसपर खुशी जाहिर की।

कर्पूरी ठाकुर के बेटे रामनाथ ठाकुर ने कहा कि मैं सरकार को यह फैसला लेने के लिए बिहार के 15 करोड़ लोगों की ओर से धन्यवाद देना चाहता हूं। उन्होंने यह भी कहा कि 36 साल का इंतजार खत्म हुआ है। वहीं, पीएम मोदी ने कहा कि मुझे खुशी है कि भारत सरकार ने सामाजिक न्याय के प्रतीक महान जननायक कर्पूरी ठाकुर जी को भारत रत्न से सम्मानित करने का निर्णय लिया है। वह भी ऐसे समय में जब हम उनकी जन्मशती मना रहे हैं। यह प्रतिष्ठित सम्मान हाशिये पर पड़े लोगों के लिए पुरोधा और समानता और सशक्तिकरण के समर्थक के रूप में उनके स्थायी प्रयासों का एक प्रमाण है। पिछड़ों और वंचितों के उत्थान की उनकी अटूट प्रतिबद्धता और दूरदर्शी नेतृत्व ने भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर अमिट छाप छोड़ी है। यह भारत रत्न न केवल उनके अतुलनीय योगदान का विनम्र सम्मान है, बल्कि इससे समाज में समरसता को और बढ़ावा मिलेगा।

केंद्र का निर्णय सही

वहीं, सीएम नीतीश कुमार ने भी केंद्र के इस निर्णय की सहारना की। उन्होंने कहा कि केंद्र का यह निर्णय सही है। जेडीयू की सालों पुरानी मांग पूरी हुई है। इस निर्णय से दलितों, वंचितों और पिछड़ों को खुशी होगी। ये सम्मान सकारात्मक भाव पैदा होगा।

कर्पूरी ठाकुर ने आजीवन समाज के गरीब एवं पिछड़े वर्ग के कल्याण के लिए काम किया: राजनाथ सिंह

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी इस सम्मान के लिए केंद्र सरकार और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की सराहना की है। उन्होंने एक पोस्ट में कहा, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और सामाजिक न्याय के जनक माने जाने वाले, जननायक कर्पूरी ठाकुर जी को भारत सरकार द्वारा भारत रत्न से सम्मानित किए जाने के निर्णय की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए हर्ष की अभिव्यक्ति करता हूं। कर्पूरी ठाकुर जी ने आजीवन समाज के गरीब एवं पिछड़े वर्ग के कल्याण के लिए काम किया। उनसे ही प्रेरणा लेते हुए मैंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अति पिछड़ा और अति दलित वर्ग के कल्याण के लिए आरक्षण की सुविधा देने का कानून बनाया था। कर्पूरीजी को भारत रत्न देने का निर्णय सामाजिक समरसता एवं गरीब कल्याण के विचार का और सार्वजनिक जीवन में उनके योगदान का सम्मान है। इस निर्णय के लिए मैं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को धन्यवाद देता हूं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

पीडीए की एकता फलीभूत हो रही: अखिलेश

उत्तर प्रदेश के पूर्व सीएम और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने भी कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न दिए जाने पर खुशी जताई। उन्होंने एक्स पर ट्वीट कर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, जननायक कर्पूरी ठाकुर जी को मरणोपरांत घोषित भारत रत्न दरअसल सामाजिक न्याय के आंदोलन की जीत है, जो दर्शाती है कि सामाजिक न्याय व आरक्षण के परंपरागत विरोधियों को भी मन मारकर अब पीडीए के 90त्न लोगों की एकजुटता के आगे झुकना पड़ रहा है। पीडीए की एकता फलीभूत हो रही है।

कर्पूरी ठाकुर से जुड़े कुछ लोग बताते हैं कि वह जब राज्य के मुख्यमंत्री थे तो बहनोई उनके पास नौकरी के लिए गए और कहीं सिफारिश से नौकरी लगवाने के लिए कहा। उनकी बात सुनकर कर्पूरी ठाकुर गंभीर हो गए, उसके बाद अपनी जेब से 50 रुपये निकालकर उन्हें दिए और कहा, जाइए, उस्तरा आदि खरीद लीजिए और अपना पुश्तैनी धंधा आरंभ कीजिए। उत्तर प्रदेश के कद्दावर नेता हेमवती नंदन बहुगुणा ने अपने संस्मरण में कर्पूरी ठाकुर की सादगी का बेहतरीन वर्णन किया है। बहुगुणा लिखते हैं, कर्पूरी ठाकुर की आर्थिक तंगी को देखते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री देवीलाल ने पटना में अपने एक हरियाणवी मित्र से कहा था- कर्पूरी जी कभी आपसे पांच-दस हजार रुपये मांगें तो आप उन्हें दे देना, वह मेरे ऊपर आपका कर्ज रहेगा।

हम डरने वाले नहीं, दिल्ली से चल रही असम की सरकार: राहुल

गुहावटी। असम में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान राजनीतिक जबरदस्त तरीके से जारी है। भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने हैं। इन सब के बीच आज राहुल गांधी ने एक प्रेस कांफेंस करके असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा पर निशाना साधा है। उन्होंने एक बार फिर से दोहराया है कि असम के मुख्यमंत्री देश में सबसे भ्रष्ट है। उन्होंने दावा किया कि असम के मुख्यमंत्री का जिस तरीके से रवैया है, उससे भारत जोड़ो न्याय यात्रा को फायदा मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि हम असम के मुख्यमंत्री से डरते नहीं है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि विपक्ष की लड़ाई कांग्रेस लड़ रही है। देश में बेरोजगारी, महंगाई चरम पर है। उन्होंने आरोप लगाया कि बजरंग दल का वो रास्ता नहीं रोकते, हमारा रास्ता क्यों रोक रहे हैं। कांग्रेस नेता ने कहा कि असम के मुख्यमंत्री यात्रा के खिलाफ जो कुछ भी कर रहे हैं, उससे यात्रा को फायदा है। जो प्रचार हमें नहीं मिला होगा, ऐसा करके असम के सीएम और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह हमारी मदद कर रहे हैं। अब, असम में मुख्य मुद्दा यात्रा है...यह उनकी डराने-धमकाने की रणनीति है...न्याय का हमारा संदेश लोगों तक पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन एक विचारधारा है। यही नरेंद्र मोदी से मुकाबला करेगा। उन्होंने कहा कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा के पीछे न्याय की सोच है, जिसके 5 स्तंभ हैं। युवा न्याय, भागीदारी, नारी न्याय, किसान न्याय, श्रमिक के लिए न्याय। इन स्तंभ के लिए कांग्रेस पार्टी एक प्रोग्राम आपके सामने एक महीने में रखेगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली से असम की सरकार चल रही। राहुल गांधी ने साफ तौर पर कहा कि हमें छात्रों से नहीं मिलने दिया जा रहा है। हमें मंदिर नहीं जाने दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनता पूछ रही है कि हमें क्यों रोका जा रहा है? उन्होंने इंडिया गठबंधन को लेकर भी बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हमारे इंडिया गठबंधन के साथ हमारे इस न्याय यात्रा से जुड़े। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी के साथ हमारा और हमारी पार्टी का बहुत अच्छा रिश्ता हैं।

छत्तीसगढ़ में आप को झटका 500 से अधिक कार्यकर्ता भाजपा में शामिल

रायपुर। छत्तीसगढ़ में आम आदमी पार्टी (आप) को उस समय बड़ा झटका लगा, जब मंगलवार को उसके 500 से अधिक पार्टी कार्यकर्ता सामूहिक रूप से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए। यह सामूहिक पलायन इस महीने की शुरुआत में आप की छत्तीसगढ़ इकाई के प्रमुख कोमल हुपेंडी और छह अन्य प्रमुख सदस्यों के इस्तीफे के बाद हुआ है। दलबदलुओं ने भाजपा में जाने का कारण आप के नेतृत्व से मोहभंग और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास और राष्ट्रवादी एजेंडे की प्रशंसा बताया। उन्होंने राष्ट्रीय आस्था के प्रतीक के रूप में अयोध्या में राम मंदिर की स्थापना की सराहना की और भाजपा के शासन रिकॉर्ड की सराहना की। इस कदम को राज्य इकाई की चिंताओं और चुनावी रणनीति के प्रति आप के शीर्ष नेतृत्व की कथित उदासीनता की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा रहा है।

राष्ट्रपति के पत्र के लिए पीएम मोदी ने जताया आभार, बोले

एक अयोध्या अपने मन में लेकर लौटा हूं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के पत्र का जवाब देते हुए कहा कि वह अपने दिल में एक अयोध्या लेकर लौटे हैं जो उनसे कभी दूर नहीं जाएगी। पत्र में लिखा कि मैंने एक तीर्थयात्री के रूप में अयोध्या धाम की यात्रा की। भक्ति और इतिहास के ऐसे संगम वाली पवित्र भूमि पर पहुँचकर मैं भाव-विभोर हो गया। अपने पत्र में पीएम मोदी ने कहा, दो दिन पहले मुझे आदरणीय राष्ट्रपति जी का एक बहुत ही प्रेरणादायक पत्र मिला। आज मैंने एक पत्र के माध्यम से अपना आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है।

मोदी ने अपने पत्र में लिका कि अयोध्या धाम में अपने जीवन के सबसे अविस्मरणीय क्षणों का साक्षी बनकर लौटने के बाद, मैं आपको यह पत्र लिख रहा हूं। मैं, एक अयोध्या अपने मन में भी लेकर लौटा हूं। एक ऐसी अयोध्या जो कभी मुझसे दूर नहीं हो सकती। अयोध्या जाने से एक दिन पूर्व मुझे आपका पत्र मिला था। आपकी शुभकामनाओं और स्नेह का मैं बहुत-बहुत आभारी हूं। आपके पत्र के हर शब्द ने आपके करुणामयी स्वभाव और प्राण-प्रतिष्ठा के आयोजन पर आपकी असीम प्रसन्नता को व्यक्त किया। जिस समय मुझे आपका पत्र मिला था, मैं एक अलग ही भावयात्रा में था। आपके पत्र ने मुझे, मेरे मन की इन भावनाओं को संभालने में, उनसे सामंजस्य बिठाने में अपार सहयोग और संबल दिया। प्रधानमंत्री ने आगे लिखा कि मैंने एक तीर्थयात्री के रूप में अयोध्या धाम की यात्रा की। जिस पवित्र भूमि पर आस्था और इतिहास का ऐसा संगम हुआ हो, वहां जाकर मेरा मन अनेक भावनाओं से विह्वल हो गया। ऐसे ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनना एक सौभाग्य भी है और एक दायित्व भी है। आप ने मेरे 11 दिन के व्रत-अनुष्ठान और उससे जुड़े यम-नियमों के विषय में भी चर्चा की थी। हमारा देश ऐसे अनगिनत लोगों का साक्षी रहा है जिन्होंने शताब्दियों तक अनेक संकल्प व्रत किए जिससे कि रामलला पुनः अपने जन्मस्थान पर विराज सके। सदियों तक चले इन व्रतों की पूर्णाहुति का संवाहक बनना, मेरे लिए बहुत भावुक क्षण था और इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि 140 करोड़ देशवासियों के साथ रामलला के साक्षात दर्शन, उनके रुप से साक्षात्कार और उनके स्वागत का वो क्षण अप्रतिम था। वो क्षण प्रभु श्रीराम और भारत के लोगों के आशीर्वाद से ही संभव हुआ और में इसके लिए सदा कृतज्ञ रहूंगा। जैसा आपने कहा था, हम ना सिर्फ प्रभु श्रीराम को पूजते हैं बल्कि जीवन के हर पहलू में और विशेषकर सामाजिक जीवन में उनसे प्रेरणा लेते हैं।

चार फरवरी को बेतिया में जनसभा करेंगे पीएम मोदी

- **30 को कटिहार में जाएंगे जेपी नड्डा**
- **भाजपा ने अपनी तैयारी शुरू की**

पटना। बिहार में राजनीतिक उठापटक के बीच भाजपा अपनी तैयारी में जुट गई है। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कार्यक्रम 4 फरवरी को बेतिया में होगा। इससे पहले यह कार्यक्रम 27 फरवरी को होना था लेकिन अब इस दौरे को 4 फरवरी को कर दिया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे को लेकर अब तक दो बार बदलाव हो गया है। सबसे पहले प्रधानमंत्री 13 जनवरी को जाने वाले थे। उसके बाद इस तारीख को 27 किया गया था। लेकिन आप प्रधानमंत्री का दौरा 4 फरवरी को होगा। प्रधानमंत्री अपने इस दौरे के दौरान बिहार को कई बड़ी परियोजनाओं की सौगात दे सकते हैं। मोदी इसके जरिए लोक सभा चुनाव को लेकर बिहार में भाजपा की तैयारी की भी शुरुआत कर सकते हैं। बिहार में मोदी के दौरे को बार-बार स्थगित किए जाने को लेकर भी कई तरह की चर्चाएं हो रही हैं। दावा किया जा रहा है कि बिहार में नीतीश कुमार कुछ बड़ा करने वाले हैं। शायद इसी वजह से भाजपा बार-बार प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में बदलाव कर रही है। खबर है कि एनडीए की और नीतीश कुमार रुख कर सकते हैं।

कांग्रेस ने सिर्फ वोटबैंक की राजनीति की

देश को 2024 में फिर से पीएम मोदी की जरूरत: नड्डा

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल और प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल के साथ गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में पार्टी कार्यालय का उद्घाटन किया। इस दौरान जेपी नड्डा ने कहा कि मुझे विश्वास है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में हम न सिर्फ जीतेंगे बल्कि पहले से ज्यादा सीटें भी हासिल करेंगे। गुजरात में हम सभी 26 सीटें जीतेंगे।

उन्होंने कहा कि अहमदाबाद में गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र कार्यालय का उद्घाटन करना गुजरात के सभी हिस्सों में विकास सुनिश्चित करने की हमारी पार्टी की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हम गुजरात को प्रथम रखना चाहते हैं और पीएम मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में हम भारत को प्रथम बनाना चाहते हैं! नड्डा ने कहा कि इस देश के सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक

- **आजादी की लड़ाई से लेकर आजाद भारत में भी गुजरात का एक विशेष योगदान रहा है**

विरासत में गुजरात प्रदेश का एक अनूठा योगदान है। आजादी की लड़ाई से लेकर आजाद भारत में भी गुजरात का एक विशेष योगदान रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का संबंध भी गुजरात के पोरबंदर से था। वहीं, इस देश को एक सूत्र में पिरोने का काम सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। उन्होंने कहा कि आज विकसित भारत को आगे बढ़ाने का काम, सक्षम बनाने का काम, स्वाभिमान से ओत-प्रोत बनाने का काम, देश की विरासत को स्वाभिमान से आगे बढ़ाने का काम... अगर किसी ने किया है तो इस देश के सपूत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि मोदी जी ने देश की राजनीति की संस्कृति को बदल डाला है, क्योंकि 70 साल तक कांग्रेस पार्टी ने राजनीति जाति के आधार पर की। भाई को भाई से बांटकर की, सिर्फ वोटबैंक की राजनीति की। उन्होंने कहा कि मोदी जी ने कहा कि भारत में सिर्फ 4 जातियां हैं- गरीब, युवा, किसान और महिलाएं। जबकि कांग्रेस ने वोटबैंक के लिए जातियों में बांट दिया था। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी जी के नेतृत्व में भारत तेज गति से विकास कर रहा है। 2014 में अर्थव्यवस्था में हम 11वें नंबर पर थे, आज हम ब्रिटेन को पछाड़कर 5वें नंबर की अर्थव्यवस्था बन गए हैं। नड्डा ने कहा कि हमारी सरकार की पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, एक ऐसी योजना जिसका कांग्रेस पार्टी ने मजाक उड़ाया था, आईएमएफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा इसकी सराहना की जा रही है। कांग्रेस ने आरोप लगाने और चिल्लाने के अलावा कुछ नहीं किया और केवल भाजपा ने ही सही मायने में विकास सुनिश्चित किया है।

यूपीपीएससी रिजल्ट

देवबंद के सिद्धार्थ टॉपर

- **प्रयागराज के प्रेम शंकर दूसरे और हरदोई के सात्विक तीसरे स्थान पर**

लखनऊ। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) ने मंगलवार को राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा (पीसीएस) परीक्षा-2023 का अंतिम चयन परिणाम जारी कर दिया। दूधा मोहल्ला, देवबंद के सिद्धार्थ गुप्ता ने परीक्षा में शीर्ष स्थान हासिल किया है। वहीं, प्रयागराज के प्रेम शंकर पांडेय मेरिट में दूसरे और हरदोई के सात्विक श्रीवास्तव तीसरे स्थान पर हैं।

251 चयनित अभ्यर्थियों में 167 पुरुष और 84 महिलाएं (33.46 फीसदी) हैं। पीसीएस-2023 की टॉप टेन मेरिट में आठ पुरुष एवं दो महिला और टॉप 20 मेरिट में 13 पुरुष एवं सात महिलाएं शामिल हैं। महिला वर्ग में मेरठ की शुभि गुप्ता अव्वल हैं, जबकि मेरिट में उन्हें सातवां स्थान मिला है। 19 प्रकार के पदों के लिए 251 अभ्यर्थियों को अंतिम रूप से चयनित घोषित किया गया है। आयोग ने आठ माह नौ दिन में परिणाम देकर नया कीर्तिमान बनाया है। चयनितों में ओबीसी श्रेणी के 77, एससी श्रेणी के 55 और एसटी श्रेणी के दो अभ्यर्थी शामिल हैं। अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित एक पद और अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित एक पद यानी दो पद संगत श्रेणी में उपयुक्त अभ्यर्थी उपलब्ध न होने के कारण खाली रह गए।

मिलेट्स रेसीपी उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम 28 जनवरी को: सीडीओ

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर खीरी। जिले में श्री अन्न के उपयोग उसके महत्व के संबंध में जागरूक करने, कृषकों और कृषक उत्पादक संगठन की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जनपद स्तर पर मिलेट्स रेसीपी विकास एवं उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम 28 जनवरी को प्रातः 11 बजे से होगा। उक्त आशय की जानकारी सीडीओ अनिल कुमार सिंह ने दी।सीडीओ ने बताया कि मिलेट्स के विभिन्न उत्पादों को तैयार करने वाले शेफ के मध्य, मिलेट्स के गुणों के बारे में जानकारी रखने वालों के मध्य प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्रम का आयोजन भी कराया जाएगा। इस कार्यक्रम में जनपद के प्रतिष्ठित होटल, रेस्टोरेन्ट, कैफे कैन्टीन तथा फूड ज्वांइट्स आदि का सहयोग प्राप्त किया जाएगा तथा प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा। स्कूलों के माध्यम से प्रचार-प्रसार के लिए मिलेट्स पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं तथा मिलेट्स पहचानना, मिलेट्स के पोषक तत्व, निबंध लेखन, क्विज, प्रोजेक्ट वर्क आदि का आयोजन भी होगा।सीडीओ ने डीआईओएस और बीएसए को निर्देशित किया कि जनपद स्तर पर मिलेट्स के विकास के लिए हो रहे विभिन्न मेलों-कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में विद्यालय के बच्चों को अवश्य भ्रमण करवाया जाए। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी संबंधित अधिकारी श्री अन्न रेसिपी प्रतियोगिता में अधिक से अधिक संख्या में कृषक उत्पादक संगठन, स्वयं सहायता समूह छात्रों-छात्राओं, होटल, रेस्टोरेन्ट को प्रतिभाग कराया जाना सुनिश्चित करें।समस्त सम्बन्धित अधिकारी अपने विभाग से सम्बन्धित प्रतियोगियों की सूचना 24 जनवरी तक कार्यालय डीडी कृषि को उपलब्ध कराकर कार्यक्रम में प्रतिभाग कराना सुनिश्चित करें।

प्रतियोगिता में सम्मिलित विभिन्न श्रेणी प्रतियोगिता वर्ग

पेन्टिंग प्रतियोगिता (वर्ग -1) इण्टरमीडिएट और स्नातक की कक्षाओं के छात्र एवं छात्रायें। श्री अन्न से तैयार भोज्य पदार्थ की प्रतियोगिता (वर्ग-2) महाविद्यालयों के गृह विज्ञान के छात्र छात्राओं के द्वारा श्री अन्न से तैयार भोज्य पदार्थ, कृषक उत्पादक संगठनों के द्वारा श्री अन्न से तैयार भोज्य पदार्थ, स्वयं सहायता समूहों के द्वारा श्री अन्न से तैयार भोज्य पदार्थ, व्यक्तिगत प्रतिभागियों द्वारा श्री अन्न से तैयार किया भोज्य पदार्थ होटल, रेस्टोरेन्ट द्वारा श्री अन्न से तैयार किए गए भोज्य पदार्थ।

वांछित अभियुक्तो की हुई गिरफ्तारी

लखीमपुर खीरी। थाना फूलबेहड़ पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 28/2024 धारा 295 ए/504 भादवि व 67 आईटी एक्ट मे पंजीकृत अभियोग के वांछित अभियुक्त प्रमोद कुमार पुत्र नंद जी नि0 ग्राम परसेरीकलां थाना फूलबेहड़ जनपद खीरी को गिरफ्तार कर अभियुक्त का चालान न्यायालय भेजा जा रहा है उल्लेखनीय है कि अभियुक्त प्रमोद कुमार पुत्र नंद जी नि0

ग्राम परसेरीकलां थाना फूलबेहड़ जनपद खीरी द्वारा दिनांक 22.01.2024 को अपनी इन्स्टाग्राम आईडी पर भगवान हनुमानजी की आपत्तिजनक पोस्ट कर अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया था। थाना खीरी पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 24/2024 धारा 307/504 भादवि मे वांछित अभियुक्त गुड्डू उर्फ सरीफ पुत्र मुनीर अहमद निवासी मो0 बाजार कस्बा व थाना खीरी जनपद खीरी को 01 अदद अवैध तमंचा 315 बोर व 01 अदद खोखा कारतूस सहित गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट की बढ़ोतरी कर अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए अभियुक्त चालान न्यायालय भेजा है।

हजारों की तादाद में बच्चों ने लिया सड़क सुरक्षा का संकल्प

अवधनामा संवाददाता

लखीमपुर खीरी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जन्म जयंती पर मंगलवार को जिले के हजारों स्कूली छात्र छात्राओं ने मानव श्रंखला बनाकर सड़क सुरक्षा का न केवल संकल्प लिया बल्कि दूसरों को भी यातायात नियमों के पालन का संदेश दिया। इस मानव श्रृंखला में विद्यार्थियों के अलावा शिक्षक, शिक्षणेत्तर स्टाफ, एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस के स्वयंसेवक, अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में नागरिक शामिल हुए।जिला मुख्यालय पर कलेक्ट्रेट में डीएम महेंद्र बहादुर सिंह, एसपी गणेश कुमार साहा ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस दौरान मानव श्रृंखला में शामिल बच्चों का उत्साहवर्धन किया, जो सड़क जागरूकता, देशभक्ति के नारे लगा रहे थे। इसके बाद उन्हें सड़क सुरक्षा का शपथ दिलाई। डीएम-एसपी ने मानव श्रृंखला के लिए निर्धारित रूट का भ्रमण कर उनका उत्साहवर्धन करते नजर आए। इस मौके पर एडीएम संजय कुमार सिंह, एआरटीओ आलोक कुमार सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी शामिल हुए।डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जन्म जयंती पर इस पहल का मकसद लोगों के दिलों में सड़क जागरूकता की भावना जगाना और जनभागीदारी की भावना से सड़क सुरक्षा माह व्यापकता से मनाना है। एसपी ने कहा कि सुभाष चंद्र बोस अनुशासन की मिसाल थे, उनके जन्म जयंती पर सड़क सुरक्षा का संकल्प लिया जाना उनको सच्ची श्रद्धांजलि है। एडीएम ने कहा कि सुभाष चंद्र बोस महान स्वाधीनता सेनानी और युवाओं के प्रेरणा स्रोत है और आगे भी रहेंगे उनकी प्रासंगिकता आज भी है, भविष्य में भी रहेगी। एएसपी ने कहा कि यातायात नियमों का पालन करते समय सुभाष चंद्र बोस की अनुशासन प्रियता को अपने ध्यान में रखना होगा।

इन विद्यालयों के बच्चे हुए शामिल

जीआईसी, जीजीआईसी, भगवानदीन आर्यकन्या इंटर कॉलेज, कुँवरखुशवक्तराय कन्या इ0का0, सनातन धर्म सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इण्टर कालेज, कृषक समाज इण्टर कालेज, डीएस कालेज, गुरूनानक इण्टर कालेज, गुरूनानक विद्यक सभा, पीके इण्टर कालेज, गाँधी विद्यालय इण्टर कालेज, इस्लामियॉ इण्टर कालेज, अबुल कलाम आजाद गर्ल्स इण्टर कालेज, सेंट डॉनबास्को स्कूल अजमानी पब्लिक स्कूल, पं0 दीन दयाल स0वि0मं0 इण्टर कालेज, ला मटीना इण्टर कालेज।

मानव श्रृंखला को लेकर विद्यार्थियों में दिखा जबरदस्त उल्लास

कलेक्ट्रेट से लेकर विभिन्न मार्गो से होती हुई कई किमी तक बनाई गई मानव श्रृंखला में शामिल बच्चे खासा उत्साहित दिखे, इस दौरान वह हाथों में सड़क जागरूकता का संदेश देती तख्तियां लिए जागरूकता नारे लगाते नजर आए। इस दौरान बच्चों ने अपने सेक्टर, जोन में ड्यूटी पर तैनात अफसरों, मजिस्ट्रेट के साथ सेल्फी खिंचाई। ठीक 11 बजे मौजूद सेक्टर अधिकारियों ने अपने सेक्टर में श्रृंखलाबद्ध बच्चों को सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई।

तहसीलों, ब्लॉकों में भी बनी लंबी मानव श्रंखला, देशभक्ति

सड़क जागरूकता के नारों से गूंजा वातावरण

जिले की सभी तहसीलों एवं ब्लॉकों में भी विद्यार्थियों ने मानव श्रृंखला बनाकर यातायात जागरूकता का संदेश दिया। इस दौरान बच्चों में जबरदस्त उत्साह दिखाई दे रहा था। बच्चे अपने निर्धारित समय से पहले ही तय स्थानों पर अपने शिक्षकों की निगरानी में पहुंच गए। मानव श्रृंखला बनाकर देशभक्ति और सड़क जागरूकता के नारे लगाए। तहसीलों में एसडीएम के नेतृत्व में ब्लॉकों में खंड विकास अधिकारियों के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर यह कार्यक्रम हुआ

गले में गुब्बारा फंसने से डेढ़ वर्षीय बालक की मौत

लखीमपुर-खीरी। (अवधनामा संवाददाता) कस्बा खीरी के बाजार निवासी रविंद्र पान वाले के डेढ़ वर्षीय पुत्र की गुब्बारा फुलाते समय गले में गुब्बारा फंसने से सांस रुक गई जिससे उसकी मौत हो गई।

आज होगा शपथग्रहण समारोह

लखीमपुर खीरी। (अवधनामा संवाददाता) जिला अधिवक्ता संघ की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह आज खीरी सांसद केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र टेनी दिलायेंगे शपथ।

जिले में अतिक्रमण हटवाने में हो रही मनमानी, तमाम अवैध अतिक्रमण कायम

गोण्डा। (अवधनामा संवाददाता) जिले में कार्रवाई कम दिखावा कुछ ज्यादा हो रहा है। जी हां ऐसा हम नही आम लोगों द्वारा कहा जा रहा है। जिले में चाहे जिला प्रशासन हो या नगर पालिका या फिर लोक निर्माण विभाग ने अब तक कई अवैध अतिक्रमण हटाये और कितनों पर रहम कर दिया, जो चर्चा का विषय बना हुआ है। आपको बता दें कि जनपद मुख्यालय स्तर पर अवैध अतिक्रमण अभियान चलाकर अंबेडकर चौराहे के पूरब पटरी पर लगभग दो दर्जन दुकान मकान को जमींदोज कर दिया गया,जबकि पश्चिम पटरी के दुकान/मकान को नोटिस देकर अभी तक कार्यवाही नही की गई। इमामबाड़ा में तालाब से अतिक्रमण हटाकर कब्जा मुक्त किया गया, लेकिन बगल में ही बाबा मेंठिया व नजूल की भूमि पर बने सैकड़ो अवैध कब्जे बरकरार हैं। दीवानी चौराहे पर नगर पालिका से नक्शा पास एक दर्जन दुकान मकान दीवाल नजूल की बताकर गिरा दिया गया वहीं सौ मीटर आगे लखनऊ रोड पर पीएससी गेट के सामने तीन मंजिला निर्माणाधीन मकान भी नजूल की भूमि पर है जो फ्री होल्ड नही है और हाइवे से सटा है। जिसे नगर पालिका व जिला प्रशासन द्वारा जानबूझकर नजर अंदाज किया जा रहा है। ऐसे में गंभीर सवाल यह उठता है कि आखिर उपरोक्त अवैध अतिक्रमण को हटाने में जिम्मेदार विभाग व आला अधिकारी पीछे क्यों हट रहे हैं।

दूषित जल से होने वाली बीमारियों के प्रति आमजन को किया सचेत

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। पानी को बचाने व दूषित जल से होने वाली बीमारियों के प्रति आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से आज प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

विकास खण्ड मुज़फ्फ़राबाद में खण्ड विकास अधिकारी लोकेश चन्द आनंद, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि योगेश पुण्डीर, सहायक विकास अधिकारी जय सिंह ने वाहन को हरी झंडी दिखाया। राज्य पेय जल एवं स्वच्छता मिशन नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग उत्तर प्रदेश के तत्वावधान मे जनपद के समस्त तहसीलों विकास खंडों एवं ग्राम पंचायत स्तर पर एलईडी वैन, होर्डिंग बैनर, दीवार लेखन के माध्यम से जल जागरुकता का कार्यक्रम कार्यदायी संस्था-फल्कॉन द्वारा वृहद स्तर पर संचालित किया जा रहा है। इस दौरान पानी को बचाने दूषित जल के उचित निकास दूषित जल से होने वाली बीमारियों पानी के रखरखाव से संबंधित जागरुकता वाले स्लोगन प्रत्येक ग्राम पंचायत में लिखे जा रहे है, जिससे की आम जनमानस को इसका लाभ प्राप्त हो सकें और लोग जल संरक्षण के प्रति उत्साहित हो सकें।

लोगों को अहसास हो कि उनकी शिकायतों पर निगम गंभीर है: नगरायुक्त

नगरायुक्त ने गत जनसुनवाई में आयी शिकायतों के निस्तारण की भी की समीक्षा

अवधनामा संवाददाता

सहारनपुर। नगरायुक्त ग़ज़ल भारद्वाज ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करें ताकि लोगों को यह अहसास हो सके कि उनकी शिकायतों को गंभीरता से लिया जा रहा है। नगरायुक्त ने यह बात संभव पर जनसुनवाई करते हुए कही। उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में हीला-हवाली न करें। उन्होंने कहा कि जिन निर्माण सम्बंधी शिकायती पत्रों पर निरीक्षण कर आगणन बनाना है उन संदर्भों पर जल्दी से जल्दी निरीक्षण कर आगणन प्रस्तुत किया जाए। नगरायुक्त ने गत जनसुनवाई में आयी शिकायतों के निस्तारण की भी समीक्षा की। जनसुनवाई संभव में आज कुल 14 संदर्भ प्राप्त हुए। इन शिकायतों में से तत्काल 8 शिकायतों का निस्तारण किया गया। आज निर्माण सम्बंधी शिकायतों की भरमार रही। जहां अधिकांश लोगों ने सड़क, नाली व नाला निर्माण की मांग की। वहीं कुछ लोगों ने सड़क मरममत, शौचालय मरम्मत व पुलिया निर्माण की मांग की। अतिक्रमण सम्बंधी शिकायतों पर उन्होंने अतिक्रमण प्रभारी को स्थलीय निरीक्षण कर कार्रवाई के निर्देश दिए। नगरायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे निर्माण सम्बंधी शिकायतों के निस्तारण में यह भी देख ले कि

पहले से ही उन्हें प्रस्तावों या टेंडर में शामिल तो नहीं किया गया है।

नगरायुक्त ने गत जनसुनवाई में आयी सभी 16 शिकायतों के निस्तारण की भी समीक्षा की। अधिकारियों ने बताया कि सभी शिकायतों का निस्तारण किया गया है। शहीद गंज में नाले के पानी की समस्या के निस्तारण के लिए बताया गया कि सड़क निर्माण के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई है।

गैंगस्टर एक्ट के दो आरोपियों को 3 वर्ष का कठोर कारावास

सहारनपुर। संगठित गिरोह बनाकर जनता में भय व्याप्त करने व आर्थिक लाभ हेतु अपराध कारित करने के दोषी दो अभियुक्तों को न्यायालय अपर जिला सत्र न्यायाधीश ने 3 वर्ष का कठोर कारावास व 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनायी है।

गौरतलब रहे कि 21 अगस्त 2009 को विवेक मलिक थानाध्यक्ष नागल ने अभियुक्त नीटू पुत्र तेजपाल निवासी सढौली हरिया थाना कोतवाली देहात, शक्ति पुत्र ब्रहम सिंह निवासी रसूलपुर थाना कांधला जनपद शामली, शिवकुमार उर्फ मोनू पुत्र जयपाल निवासी सलेमपुर थाना नागल व मिन्टू पुत्र धर्मवीर निवासी लाख थाना फुगाना शामली द्वारा संगठित गिरोह बनाकर जनता में भय व्यपात करना व आर्थिक व भौतिक लाभ हेतु अपराध कारित करने की सूचना पर धारा 2/3 गैंगस्टर एक्ट थाना नागल पर पंजीकृत कराया गया।

जिला अध्यक्ष वीरेंद्र यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई समाजवादी पार्टी की मासिक बैठक

अवधनामा संवाददाता

सताव रायबरेली। सपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र यादव की अध्यक्षता मे पार्टी के मासिक बैठक गुरबक्श गंज में संपन्न हुई जिसमें हरचंदपुर विधानसभा के सभी सेक्टर प्रभारी व पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद रहे पार्टी के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष वीरेंद्र यादव ने बताया की PDA एक सच्चा लोकतांत्रिक जन बंधन है जिसमें हमारे साथ जनता सीधे जुड़ रही है PDA एक ऐसा जन आंदोलन है। जिसमें पिछड़े दलित व अल्पसंख्यक मुस्लिम सिख बौद्ध ईसाई जैन व अन्य सभी शामिल हैं सच्चे लोकतंत्र की तरह इसकी दिशा नीचे से ऊपर की ओर है जो समाज के उन वर्गों को आगे लाने का प्रयास करेगा जो सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक पैमानों पर सदियों से वंचित और शोषित रहे हैं अध्यक्ष जी ने बताया कि PDA मूल रूप से पिछड़े दलित व अल्पसंख्यक के शोषण उत्प्रेरण व उपेक्षा के खिलाफ उठती हुई आवाज चेतना और सामान अनुभूति से जन्मी उस एकता का नाम है जिससे हर वर्ग के वे सब लोग भी शामिल हैं जो मानवता के आधार पर इस तरह की नाइंसाफी के खिलाफ हैं। यही इसकी सबसे बड़ी बात है कि इंसानियत से एतबार करने वालों सभी वर्गों के अच्छे लोग इस मुहिम में बड़े दिल से हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो रहे हैं समाज के सभी लोग हर मतभेद व दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इससे जुड़े और देश की प्रगति के लिए सामाजिक सशक्तिकरण के इस नए आंदोलन को सफलतापूर्वक उसकी मंजिल पर पहुंचाएं अध्यक्ष ने बताया कि सामाजिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जाति जनगणना का होना बहुत आवश्यक है। जातियों की संख्या बल के आधार पर ही उन्हें समानुपातिक हक और सम्मान मिल सकेगा सामाजिक आर्थिक विषमता को मिटाने के लिए संविधान में जो आरक्षण की व्यवस्था है उसे भी समाप्त करने का खतरा है संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश दिवस पर विभिन्न प्रतिस्पर्धाओ का किया आयोजन

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिता में बालक-बालिकाओं ने प्रतिभाग किया। खेल निदेशालय उप्र के लखनऊ एवं जिला प्रशासन के तत्वाधान में क्षेत्रीय खेल कार्यालय द्वारा जिला खेल विकास एवं प्रोत्साहन समिति के माध्यम से उत्तर-प्रदेश दिवस-2024 के अवसर पर आज डा.अम्बेडकर स्पोर्ट्स स्टेडियम में जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन क्रीड़ाधिकारी अनिमेष सक्सेना के दिशा निर्देशन में उप क्रीडाधिकारी काशी नरेश यादव द्वारा किया गया। प्रतियोगिता का शुभारम्भ बाबू राम सिंह अन्तर्राष्ट्रीय साईक्लिस्ट खिलाड़ी द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों को आज जिलाधिकारी डॉ.दिनेश चन्द्रा पुरस्कृत करेंगे।

उप जिला अधिकारी की दरियादिली सामने

अवधनामा संवाददाता

बछरावां रायबरेली। निरंतर अपने सौम्य स्वभाव एवं शालीनता के कारण आम जनमानस में चर्चा का विषय बने हुए उप जिला अधिकारी महाराजगंज राम रजित गुप्ता की दरिया दिली सामने आई। जानकारी के अनुसार आपको बताते चले की मंगलवार को दोपहर के समय तहसील प्रांगण में एक वृद्ध महिला जो बछरावां विधानसभा क्षेत्र के महाराजगंज क्षेत्र के बरूहा गांव निवासी सुखदेव की पत्नी थी, वह किसी काम से तहसील आई हुई थी। ठंड अत्यधिक होने के कारण वह तहसील के किसी कोने में बैठी थी ठिठुर रही थीद्य यह देखकर उपजिलाधिकारी गुप्ता ने एक कंबल मगाकर उसे वृद्ध महिला को भेंट किया।

इस संबंध में जब संवाददाता ने दूरभाष के माध्यम से उप जिलाधिकारी गुप्ता से बातचीत की तो उन्होंने कहा कि अगर मनुष्य अपने जीवन में पूर्ण रूप से सक्षम है तो उसे निरंतर ऐसे लोगों की सेवा करनी चाहिए जो वास्तव में उस सेवा के पात्र हैं। मैंने तो सिर्फ अपना कर्तव्य किया है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा की अध्यक्षता करने पहुंचे पूर्व विधायक राकेश प्रताप सिंह

अटौरा(रायबरेली)। विकसित भारत यात्रा के समापन अवसर पर सुल्तानपुर खेड़ा में जन सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा विकसित भारत बनाने के लिए हम सबको अपने प्रधानमंत्री का साथ देना होगा साथ ही उन्होंने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं प्रधानमंत्री आवास, उज्जवला योजना, आयुष्मान भारत आदि की विस्तृत जानकारी देते हुए लाभार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। सभी ग्रामीणों के साथ उपस्थित कर्मचारियों को पंच प्रण की शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम में ग्राम प्रधान उमाशंकर लोधी,ग्राम विकास अधिकारी ओम प्रकाश नोडल अधिकारी गौरव मिश्रा सहित सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। भाजपा की ओर से रामकिशोर लोधी, शिव सागर तिवारी, नन्हे शुक्ला, विनोद तिवारी, सुखदेव शुक्ला, लाला सिंह, विमल देव, चंद्रशेखर शुक्ला दिलीप त्रिवेदी, सहित भाजपा कार्यकर्ता व भारी संख्या मे ग्रामीण उपस्थित रहे।

अल जामेअतुल हशमतिया के प्रमुख अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद मासूम रजा खान हशमती का निधन

अवधनामा संवाददाता

गोण्डा। सुन्नी जमात के शहजाद-ए-मजहरे आला हजरत मुफ्ती-ए-आजम पीलीभीत व अल जामेअतुल हशमतिया पिपरा माहिम, गोण्डा के प्रमुख अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद मासूम रजा खान हशमती पीलीभीती का निधन हो गया। उनकी नमाज़े जनाज़ा बुधवार को जुहर की नमाज़ के बाद मुबारक मोड़, सादुल्लाह नगर के पास खेल मैदान में पढ़ी जाएगी। 24 जनवरी को, फज्र की नमाज़ के बाद से लेकर दिन के 12 बजे तक हुजूर मासूमे मिल्लत की जियारत कराई जाएगी। यह जानकारी देते हुए हजरत मासूमे मिल्लत के खलीफा और खादिम अलहाज कारी शरफुद्दीन खान हशमती ने बताया कि सोमवार को सुबह 9 बजे अपने घर पीलीभीत शरीफ में हजरते वाला ने अपनी जिंदगी की आखिरी सांस ली। इस वक्त हजरत की उम्र करीब 75 वर्ष थी। वे काफी दिनों से बीमार चल रहे थे। हजरत 6 भाई थे, जिनमें से अब केवल दो ही लोग ज़िंदा हैं। इनमें अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद इदरीस रजा खान हशमती और अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद नासिर रजा खान हशमती हैं। मासूमे मिल्लत के इंतकाल की सूचना मिलते ही गोण्डा, बलरामपुर, बस्ती, सादुल्लाह नगर, उतरौला, लखनऊ, मुंबई, बैंगलोर, हैदराबाद, नागपुर, मध्य प्रदेश और आसपास के इलाकों में शोक की लहर दौड़ गई। बता दें कि सादुल्लाह नगर और गौरा चौकी के बीच मुशाहिद नगर, पिपरा माहिम शरीफ है, जहां अलजामेअतुल हशमतिया स्थित है। यहीं से पूरे क्षेत्र में, शेर बेशऐ अहले-सुन्नत ने मसलके आला हजरत को मजबूत किया था।

नवाबगंज क्षेत्र के लोलपुर हाइवे पर लगा लंबा जाम

अवधनामा संवाददाता

गोंडा। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के बाद मंगलवार सुबह नवाबगंज क्षेत्र के लोलपुर हाइवे पर लगा लंबा जाम एडीशनल एसपी राधेश्याम राय

मंगलवार सुबह से ही हाइवे पर डटे की माइक से घोषणा 24 जनवरी रात दस बजे तक बंद है रास्ता आवागमन रहेगा बंद अयोध्या के लिए ना निकले लोग डायवर्जन पहले की तरह प्रभावी।जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने भी मंगलवार दोपहर अपने मताहतो साथ कटराशिवदयालगंज के पुराने सरयू पुल के सडको पर निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिये हैं। मिली जानकारी अनुसार श्रीरामजन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर जिले की सीमा पर कडी चौकसी को लेकर शासन प्रशासन अभी भी सतर्क है 22 जनवरी कार्यक्रम उपरांत स्थानीय और बाहरी लोगों का अयोध्या मे पहुचने से जिले के आला अधिकारियों का सुबह से ही लोलपुर हाइवे पर बस्ती और गोंडा के तरफ से आ रहे वाहनो को काफी परेशानी हो रही है भीड और जाम की जानकारी होने पर एडीशनल एसपी राधेश्याम राय एडीएम गोंडा व क्षेत्राधिकारी तरबगंज सौरभ वर्मा सहित स्थानीय पुलिस के जवान बैरीककेटिंग पर मुस्तैद रहे एडीशनल ने बैरीककेटिंग पर मोर्चा संभाल कर आये लोगों से अपील किया कि अयोध्या तरफ रास्ता बंद हो चुका है यह डायवर्जन 24 जनवरी रात 10 बजे तक रहेगा आप लोग अनावश्यक चेस्टा ना करे। इस अपील के बाद मौके पर खडी सरकारी और इलेक्ट्रानिक बसों को खाली कराकर अयोध्या की तरफ भेजा गया तथा अयोध्या मिट्टी कराने जा रहे वाहनो को भेजा जा रहा था तथा दो दो घंटे के दौरान मे बाइक सवारो को छोड़ दिया गया है।जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने दोपहर मे अपने मताहतो साथ कटराशिवदयालगंज के पुराने सरयू पुल के सडको से होकर अयोध्या पुराने पुल तक निरीक्षण किया तथा बैरीककेटिंग पर मौजूद कर्मचारियों और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये हैं।

नवाबगंज कटी तिराहे से लेकर कटराशिवदयालगंज तिराहे व पुराने सरयू पुल के सडको पर करीब एक दर्जन जगहो पर बैरीककेटिंग प्रशासन ने लगा रखा है तथा आम व खास किसी को भी अयोध्या की तरफ आवागमन नही हो रहा है वही सुबह अयोध्या से नवाबगंज अपने सरकारी ड्यूटी पर आये शिक्षक लेखपाल और व्यापारियों को कडी समस्याओं का सामना करना पड रहा है।

नगरपालिका के विभिन्न स्थानों पर लोगों द्वारा भंडारे का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

नवाबगंज गोंडा। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम बीतने के बाद भी क्षेत्र व नगरपालिका के विभिन्न स्थानों पर लोगों द्वारा भंडारे का आयोजन कर प्रसाद वितरण किया गया। युवा भाजपा नेता शुभम पाठक ने प्रसाद वितरण दौरान लोगों को इस ऐतिहासिक पल मे शामिल होने के लिए सभी को बधाईयाँ दी। मिली जानकारी अनुसार नगरपालिका क्षेत्र के पडाव मुहल्ले पर नगर के व्यापरियों ने पंडाल लगाकर श्रीरामजन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बाद मंगलवार को प्रसाद वितरण किया इस कार्यक्रम की शुरुआत नगरपालिका अध्यक्ष की पत्नी समाजसेविका सपना सिंह ने प्रभू की मूर्ति समछ दीप प्रज्जवलित कर किया इस दौरान उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण करा लोगों से इस ऐतिहासिक पल को श्रद्धा भाव से अपने अपने घरो पर भी लगातार मनाने की अपील भी किया वही लोहराडाड गांव मे प्रधान प्रदीप कुमार मिश्र उर्फ पहाडी ने भी भंडारे का शुभारंभ दीप प्रज्जवलित कर किया।भंडारे के दौरान युवा भाजपा नेता शुभम पाठक ने उपस्थित लोगों को बताया कि इसी ऐतिहासिक पल के लिए हमारे पुरखों ने त्याग किया था आज भव्य मंदिर निर्माण हुआ उसके हम सभी गवाही है इस दिन और तारीख को हिंदुस्तान के इतिहास मे लिखा जाएगा।

यातायात नियमों के पालन करने के लिए दिलायी शपथ

उरई जालौन अवधनामा संवाददाता। जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय व पुलिस अधीक्षक ईरज राजा ने आज नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती के अवसर पर पुलिस लाइन के प्रांगण में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कर सड़क सुरक्षा सम्बन्धी शपथ दिलाई गई। जिलाधिकारी ने कहा कि जीवन बहुत अनमोल है इसलिए हमें यातायात नियमो का पालन अवश्य करना चाहिए, हमे नशे की हालत में वाहन नही चलाना चाहिए, वाहन चलाते समय दोपहिया वाहन में हेलमेट व चारपहिया वाहन में सीटबेल्ट अवश्य लगाए। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि सड़क सुरक्षा के नियमो का खुद भी पालन करे और दूसरों को भी नियमो के पालन हेतु प्रेरित करे, नगर के चौराहों पर रेड लाइट का पालन अवश्य करे, उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा का पालन अवश्य करे जिससे दुर्घटना न हो क्योंकि जीवन बहुमूल्य है। अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी भीमजी उपाध्याय, परियोजना निदेशक शिवाकांत द्विवेदी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ नरेंद्र देव शर्मा, संभागीय परिवहन अधिकारी प्रशासन सौरव कुमार, प्रवर्तन विनय पाण्डेय, सुरेश, राजेश, जिला विद्यालय निरीक्षक राजकुमार पंडित आदि मौजूद रहे।

औरंगाबाद में निकाली गई रामजी की शोभायात्रा

मथुरा अवधनामा संवाददाता। औरंगाबाद रामलीला कमेटी एवं क्षेत्रीय लोगों द्वारा

श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर औरंगाबाद में भव्य श्री राम शोभा यात्रा का आयोजन रामलीला सभा के सचिव राजेश सैनी के नेतृत्व में किया गया जिसमें श्री राम जानकी लक्ष्मण और हनुमान जी की झांकी गणेश मंदिर से प्रारंभ होकर औरंगाबाद बाजार होते हुए राम मंदिर बलदेव पुरम पहुंची श्री राम जानकी लक्ष्मण जी हनुमान जी की क्षाकियों ने सबका मन मोह लिया और आकर्षण का केंद्र बनी रही क्षेत्रीय लोगों ने जगह जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। क्षेत्रीय लोगों ने श्री राम शोभा यात्रा में बढ़ चढ़ कर भाग लिया शोभा यात्रा के दौरान राजेश सैनी, ताराचंद अग्रवाल ,राकेश गोयल, बालकिशन अग्रवाल, सत्य प्रकाश, योगेश, अंकित ,तारा सैनी, पवन शर्मा ,गौरव सैनी, अनिल, हिमांशु अरोरा , सौरभ अग्रवाल, रमेश सैनी, कैलाश सैनी, खेमचंद सैनी, गुलाब सैनी, पार्षद बंटी सैनी, जगबीर चौधरी, दिलीप गर्ग, गोविंद अग्रवाल, कृष्णा सैनी, रोहित सैनी, पंकज सैनी, जगदीश सैनी आदि उपस्थित रहे।

सड़क सुरक्षा नियमों का पालन प्रतिदिन करना चाहिए

इटावा अवधनामा ब्यूरो। जिलाधिकारी अवनीश राय एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार वर्मा द्वारा सड़क सुरक्षा माह 15 जनवरी से 14 फरवरी तक मनाए जाने हेतु सुभाष चंद्र बोस जयंती के अवसर पर सड़क सुरक्षा के प्रति आम जनमानस में जागरूकता लाए जाने हेतु स्टेडियम परिसर में मानव श्रंखला व सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई।जिलाधिकारी ने कहा कि सड़क सुरक्षा नियमों का पालन प्रतिदिन करना चाहिए।उन्होंने कहा कि दो पहिया वाहन चलाते समय स्वयं व पीछे बैठे व्यक्ति को मानक वाले हेलमेट अवश्य पहलेंगे व पहनाएंगे,चार पहिया वाहन चलाते समय हमेशा सीट बेल्ट लगाएंगे,लेने ड्राइविंग के नियमों का पालन करेंगे,तेज रफ्तार से वाहन नहीं चलाएंगे,गलत दिशा में वाहन नहीं चलाएंगे,वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करेंगे,शराब पीकर या नशे की हालत में वाहन नहीं चलाएंगे ,सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्तियों की मदद हेतु सदैव तत्पर रहेंगे,घर पर बच्चे इंतजार कर रहे हैं अतःमैं सदैव सुरक्षित व सावधानी से वाहन चलाऊंगा।

अवैध असलहा फैक्टरी का भंडाभोड़, चार गिरफ्तार

फिरोजाबाद अवधनामा संवाददाता। फिरोजाबाद जिले के एका थाना क्षेत्र में थाना पुलिस, एसओजी एवं सर्विलांस टीम ने लोकसभा चुनाव को प्रभावित करने के उद्देश्य से तैयार किए जा रहे अवैध तमंचों की फैक्ट्री का भंडाफोड़ करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। जिनके पास से तमंचा, कारतूस और उपकरण भी बरामद किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सौरभ दीक्षित द्वारा आगामी लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत जिले में अवैध शस्त्रों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत अपर पुलिस अधीक्षक के निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी जसराना के कुशल नेतृत्व में एसओजी, सर्विलांस टीम तथा थाना एका पुलिस टीम ने मुखविर की सूचना पर नगला डहर में संचालित हो रही अवैध शस्त्र फैक्ट्री का भंडाफोड़ करते हुए चार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया वहीं एक भाग जाने में सफल हो गया। पुलिस पूछताछ में उन्होंने अपने नाम पूरन शर्मा पुत्र नाथूराम निवासी चंदनगर थाना एत्माद्दौला आगरा, सुभाष चन्द्र पुत्र मौजीराम लोधी निवासी मोहनीपुर थाना शिकोहाबाद श्याम यादव पुत्र रामनाथ निवासी नगला डहर थाना एका, रामनाथ यादव पुत्र स्व गीतम सिंह निवासी नगला नाहर एका जिला फिरोजाबाद बताया। पुलिस ने छः तमंचा, एक पोनियां, तीन कारतूस, दो मोबाइल के अलावा भारी मात्रा में उपकरण बरामद किए हैं। पुलिस ने चारों आरोपियों को जेल भेज दिया है।

सुदिति ग्लोबल अकादमी में मनी नेताजी की जयंती

टूंडला/फिरोजाबाद अवधनामा संवाददाता। सुदिति ग्लोबल अकादमी फिरोजाबाद पर सुभाष चंद्र बोस की जयंती बड़े ही धूमधाम से मनाई गई। इस दौरान सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया। साथ ही सड़क सुरक्षा संबंधी रैली निकाली गई। उक्त रैली सुदिति ग्लोबल अकादमी विद्यालय से प्रारंभ की गई, जो एनएच टू तक निकाली गई। यातायात रैली में विद्यालय के सभी छात्र-छात्राएं तथा अध्यापक-अध्यापिका उपस्थित रही। सड़क सुरक्षा संबंधित लोगों को जागरूक करने तथा प्रसार प्रचार करने के लिए अभियान के रूप में चलाई गई कि लोग वर्तमान युग में यातायात के नियमों का पालन करें। विद्यालय के संरक्षक किताब सिंह यादव द्वारा सड़क सुरक्षा नियमों के माध्यम से छात्राओं को अवगत कराया साथ ही सड़क सुरक्षा विभिन्न नियमों की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में सभी शिक्षकगण उपस्थित रहे।

केएमयू के कुलाधिपति ने 500 बच्चों को लिया गोद

मथुरा अवधनामा संवाददाता। अयोध्या में श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद बीती देरसायं केएम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति किशन चौधरी ने अनाथ गरीब 500 बच्चों को गोद लेकर उनके साथ दीपावली मनाई और उनके साथ सामूहिक भोजन कर जमकर अतिशबाजी का लुफ्त लिया। उल्लेखनीय रहे कि अयोध्या में श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पूरे ब्रज में हर्षोल्लास रहा। वहीं केएम विवि के कुलाधिपति किशन चौधरी ने पूरे विश्वविद्यालय परिसर में झाड़ू लगाकर कर सफाई अभियान में अपना योगदान किया उसके उपरांत विवि के छात्रों के साथ सुंदरकांड का पाठ किया तथा कुलाधिपति एवं जिला पंचायत अध्यक्ष की पत्नी श्रीमती संजू चौधरी एवं पुत्र पार्थ चौधरी एवं रीतेश चौधरी (बबलू) पुत्र देवी सिंह चौधरी(डीएम) ने हवन यज्ञ में पूर्णाहूति अर्पित की तथा आरती की। देरसायं स्ट्रीट स्कूल के संचालक सतीश शर्मा अपने स्ट्रीट स्कूल के 500 बच्चों के साथ यहां पहुंचे और अनाथ-गरीब बच्चों ने कुलाधिपति किशन चौधरी के साथ एलईडी स्क्रीन संक्षिप्त रामायण देखी। श्रीचौधरी ने इस दौरान बच्चों के साथ सामूहिक भोजन किया तथा सभी बच्चों को स्वेटर एवं टोपी अपने हाथों से वितरित की तथा निर्धन बच्चों के साथ पटाखे फोड़े, दीप जलाए और जय श्रीराम जय श्रीराम के नारे लगाएं। कुलाधिपति ने कहा कि अब यह बच्चे अनाथ और गरीब नहीं रहेंगे। अब यह सभी बच्चे केएम के अमीर बच्चे कहलाएं। इन सभी की शिक्षा, कपड़े व अन्य जरूरतों का केएम ख्याल रखेगा। श्रीराम का जीवन चरित्र हम सभी के लिए अनुकरणीय है हम उनके आदर्शों पर चलकर अपने जीवन को सार्थक बना सकते है।

सड़क सुरक्षा माह के अवसर पर बनाई मानव श्रृंखला, दिलाई शपथ

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर आयोजित ''सड़क सुरक्षा माह'' के अन्तर्गत 'सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला' एवं सड़क सुरक्षा शपथ दिलायी गई।

जिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पाण्डेय एवं अपर जिलाधिकारी प्रशासन विजय शंकर दूबे सहित अन्य अधिकारीगणों ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी की जयन्ती पर विशाल मानव श्रृंखला बनायी एवं पुलिस, प्रशासन, स्वास्थ्य, पंचायत, नगर निगम, राजस्व, शिक्षा, एनसीसी, एनएसएस, स्काउट, सिविल डिफेंस, होम गार्डस, समस्त विभागों के अधिकारी व कर्मचारी, एन0जी0ओ0, स्वयं सेवी संस्थाओं, सदभावना, सामाजिक संगठनों, स्कूल एवं कॉलेजों के छात्र-छात्राओं आदि के साथ सड़क सुरक्षा की शपथ ली। इस अवसर पर आम जनमानस को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किए जाने हेतु कलेक्ट्रेट गेट से बांयी ओर टैंक चैराहा तथा कलेक्ट्रेट गेट से दांयी ओर तहसील तक ऐतिहासिक वृहद 'सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला' बनाई गई। कार्यक्रम का मुख्य आयोजन कलेक्ट्रेट मुख्य द्वार पर किया गया। मानव श्रृंखला में प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों के ऐतिहासिक जनसैलाब को यातायात नियमों का पालन करने हेतु जिलाधिकारी ने ''सड़क सुरक्षा शपथ'' भी दिलायी गई। इसके अतिरिक्त तहसील मुख्यालयों पर उप जिलाधिकारी, ब्लाक मुख्यालयों पर खण्ड विकास अधिकारियों एवं पंचातयों सचिव व प्रधानों की अगुवाई में 'सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला' बनायी गई तथा सड़क सुरक्षा शपथ दिलायी गई। श्री सिंह ने मानव श्रृंखला का अवलोकन करते हुए मानव श्रृंखला में प्रतिभाग करने वाले छात्र-छात्राओं का उत्साह वर्धन किया। जागरूकता से सडक दुर्घटनाओं को नियंत्रित किया जा सकता है। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद में सड़क सुरक्षा माह के तहत आज एक विशेष कार्यक्रम ''सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला'' का आयोजन किया गया है, जिसमें यह प्रयास किया गया है कि अधिक से अधिक लोगों तक सड़क सुरक्षा के नियमों की जागरूकता हेतु मानव श्रृंखला बनायी गई है।

उन्होने कहा कि यह बहुत हर्ष की बात है कि इसमें जनपद के लोगों ने भारी संख्या में प्रतिभाग किया है। जिलाधिकारी ने सड़क सुरक्षा शपथ दिलायी जिसमें कहा कि प्रतिज्ञा करते हैं कि हम सड़क पर सदैव यातायात नियमों का पालन करेंगे तथा सुरक्षित यात्रा हेतु सदैव दो पहिया वाहन चालाते समय स्वयं व पीछे बैठे व्यक्ति को बीआईएस मानक वाले हेलमेट अवश्य पहनेंगे व पहनायेंगे।

केंद्रीय राज्यमंत्री की पत्नी के निधन होने पर परिवार को सांत्वना देने पहुँची साध्वी निरंजन ज्योति

अवधनामा संवाददाता

कोंच। भारत सरकार में केंद्रीय राज्य मंत्री भानु प्रताप वर्मा की पत्नी श्रीमती राममूर्ति वर्मा का निधन बीती 17 जनवरी 2024 को हृदय गति रुक जाने से हो गया था इस शोकाकुल परिवार को सांत्वना देने उनके गृह निवास पहुंची। बता दें कि केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति मुहल्ला मालवीय नगर स्थित उनके आवास पर पहुंचकर शोकाकुल परिवार को ढांढस बंधाते हुए दिवंगत श्रीमती राममूर्ति देवी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और ईश्वर से इस दुख की घड़ी से परिवार की निकलने की प्रार्थना की इस दौरान मीडिया से संक्षिप्त बातचीत में केंद्रीय मंत्री सध्वी निरंजन ज्योति ने रूबरू होते हुए कहा कि हमारा और भानु प्रताप वर्मा का पारिवारिक सम्बन्ध उस समय से चला आ रहा है जब ये विधायक हुआ करते थे और दिवंगत श्रीमती राममूर्ति की अंतिम इच्छा अयोध्या प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जाने की थी लेकिन ईश्वर ने उन्हें अपने धाम में बुला लिया और उनका शरीर अयोध्या धाम नहीं पहुंच पाया जिसके बारे में भानु वर्मा ने भी मुझे बताया वहीं प्राण प्रतिष्ठा पर उन्होंने बोलते हुए कहा कि 22 जनवरी 2024 की यादों को आजीवन मन मे सँजोये रखूंगी जिसकी सुखद अनभूति आज भी हमारे दिल दिमाग मे वसी हुई है लेकिन मुझे अफसोस है कि जिन कार सबको ने राम मंदिर के लिए लड़ाई लड़ी उनमें से कुछ लोगों ने इस सुखद अनभूति का आनंद लेने से वंचित रहे।

पेंटिंग प्रतियोगिता में सुदिति ग्लोबल की अमृता सिंह को मिला प्रथम स्थान

अवधनामा ब्यूरो

आर्मी पब्लिक स्कूल के छात्र अनुरुद्ध प्रताप सिंह ने द्वितीय व लबी सिंह को तृतीय स्थान मिला

इटावा। प्रधानमंत्री की परीक्षा पर चर्चा को लेकर पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय में ड्रॉइंग तथा पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसका मकसद परीक्षा पर चर्चा को उत्सव का रूप देने का है।इसके चलते नेता जी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 16 विद्यालयों के सौ से अधिक बच्चों ने अपनी प्रतिभा दिखाई। इसमें सुदिति ग्लोबल की छात्रा अमृता सिंह प्रथम रही।

आर्मी पब्लिक स्कूल के छात्र अनुरुद्ध प्रताप सिंह ने दितीय स्थान प्राप्त किया। जबकि लबी सिंह को तृतीय स्थान मिला। नव्या जैन ने चौथा और सासबत सिंह को पांचवा स्थान मिला।इन सभी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लिखित पुस्तक एग्जाम वारियर देकर सम्मानित किया गया।इस प्रतियोगिता में डायट प्रवक्ता आनंद कुमार,इस्लामिया कॉलेज के प्रवक्ता अली साबिर तथा सोमेश कुमार शर्मा को निर्णायक बनाया गया था जिन्होंने निर्णायक की भूमिका निभाते हुए इस प्रतियोगिता का निर्णय दिया। केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य विनय सिंह ने बताया की परीक्षा पर चर्चा में देश भर के 500 केंद्रीय विद्यालय प्रतिभा करेंगे उसी को लेकर शिक्षा मंत्रालय की पहल पर यह प्रतियोगिता कराई गई है। प्रतियोगिता को सफल बनाने में केंद्रीय विद्यालय की शिक्षक खदीजा बानो,जेके राव,हरिओम यादव,सचान यादव,संतोष कुमार व देवेश यादव का सहयोग रहा।

सुभाष चंद्र बोस युवाओं के दिलों में बसे है: प्रेम कुमार शाक्य

अवधनामा ब्यूरो

इटावा, जसवंतनगर। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती मनाई गई। युवाओं ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए तथा सुभाष चंद्र बोस अमर रहे और भारत माता की जय जैसे गगनभेदी नारे भी लगाए।हाईवे मलाजनी स्थित सुभाष प्रतिमा स्थल पर पूर्व लोकसभा प्रत्याशी युवा नेता कुलदीप कुमार शाक्य के संयोजकत्व में आयोजित उक्त कार्यक्रम में सभी युवाओं ने आदमकद सुभाष प्रतिमा पर मालाएं पहनाई व पुष्प अर्पित किए तथा सुभाष चंद्र बोस अमर रहें और भारत माता की जय आदि नारे लगाए। उन्होंने युवाओं को नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के पदचिन्हों पर चलने का आवाह्न किया।बतौर मुख्य अतिथि प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रेम कुमार शाक्य ने कहा कि नेताजी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे उन्होंने देश की आजादी के लिए आजाद हिंद फौज का गठन किया था। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा का नारा बुलंद करने वाले नेताजी सुभाषचंद्र बोस आज भी युवाओं के दिलों में बसे हैं।वह 24 साल की उम्र में ईडियन नेशनल कांग्रेस से जुड़ गए थे। राजनीति में कुछ वर्ष सक्रिय रहने के बाद उन्होंने महात्मा गांधी से अलग होकर आजाद हिंद फौज का गठन किया था।

मक्खनपुर थाने पर शव रखकर परिजनों ने काटा हंगामा

फिरोजाबाद। थाना शिकोहाबाद क्षेत्र के नगला बाध स्टेशन के पास ऊवटी निवासी प्रमोद पुत्र रामस्वरूप उम्र लगभग 50 वर्ष मक्खनपुर विल्टीगढ चौराहे के समीप लगभग दो माह से कार्य कर रहा था दिनांक 18 जनवरी को कार्य कर रहा था दूसरी मंजिल पर मकान मालिक राजेश यादव निवासी मुस्तफाबाद रोड शिकोहाबाद दीवाल उखाड़ रहे थे तभी अचानक एट के गिर जाने से नीचे कार्य कर रहे मजदूर प्रमोद कुमार के सिर में चोट लग गई जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया घायल को जिला चिकित्सालय ले जाया गया जहां से आगरा के लिए रेफर कर दिया आज बीती रात्रि में इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई परिजन शव को बिना पोस्टमार्टम कराए थाने पर ले आए जहां थाने पर रखकर हंगामा किया परिजनो का कहना है कि 19 जनवरी को थाना पुलिस को मुकदमा दर्ज करने के लिए तहरीर दी थी लेकिन थाना अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह चौहान ने परिजनों को गाली गलौज कर थाने से भगा दिया था गुस्सा आए परिजनों ने आज थाने पर रखकर हंगामा किया।

गंगा समितियां सक्रिय रहकर अपने दायित्व का निर्वहन करें

सीडीओ ने पर्यावरण समिति एवं जिला गंगा समिति, वन बन्दोबस्त समिति के बैठक की समीक्षा की

अवधनामा संवाददाता

मैनपुरी। मुख्य विकास अधिकारी नेहा बंधु ने जिला वृक्षारोपण समिति, जिला पर्यावरण समिति एवं जिला गंगा समिति, वन बन्दोबस्त समिति की बैठक की समीक्षा के दौरान जिला पंचायत राज अधिकारी, खंड विकास अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि नदियों के किनारे बसे जिन 245 ग्रामों में गंगा समितियों का गठन हो चुका है, उन ग्राम पंचायतों में ठोस अपशिष्ट को नदी में प्रवाहित होने से रोकने, नदी तट विकास, वनीकरण, सीवरेज उपचार अवसंरचना विकास, औद्योगिक प्रवाह निगरानी, गंगा ग्राम, जैव विविधता सहित 10 बिन्दुओं पर गंगा समितियों की बैठक का आयोजन कराकर कार्यवृत वन विभाग को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें, गंगा समिति का मुख्य उद्देश्य नदी, नालों, नहर के माध्यम से गंगा में जाने वाले गंदे पानी को रोके जाने से संबंध में है, इसलिए गंगा समितियां सक्रिय रहकर अपने दायित्व का निर्वहन करें। उन्होने वन क्षेत्र की भूमि बंदोबस्त में अमल दरामद की समीक्षा करने पर पाया कि अभी 197.624 हे. भूमि अमल दरामद हेतु अवशेष है, जिसमें सर्वाधिक भूमि वन क्षेत्र पड़रिया में 58.23 हे., समान में 49.20 हे., लालपुर सथिनी में 28.40 हे., बदनपुर में 21.84 हे. भूमि का अमल दरामद वन विभाग के नाम होना शेष है, जिस पर उन्होने सम्बन्धित रेंज अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि उप जिलाधिकारियों से समन्वय स्थापित कर चिन्हित विभाग की भूमि को वन विभाग के नाम अमल दरामद कराना सुनिश्चित करें। सी.डी.ओ. ने समीक्षा के दौरान पाया कि वृक्षारोपण महाभियान के तहत विभिन्न विभागों द्वारा निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष पौधे रोपित किए गए थे लेकिन अभी तक कई विभागों द्वारा रोपित किये गये पौधों के सापेक्ष हरीतिमा एप्प पर शत-प्रतिशत जियो टैग नहीं कराया गया है, परिवहन विभाग द्वारा अभी तक मात्र 25.71 प्रतिशत, राजस्व विभाग द्वारा 80.43 प्रतिशत, कृषि विभाग द्वारा 84.64 प्रतिशत, पशु पालन विभाग द्वारा 85.34 प्रतिशत ही जियो टैग कराया गया है। उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों को सचेत करते हुए कहा कि अगले 02 दिन में प्रत्येक दशा में रोपित किए गए शत-प्रतिशत पौधों का जियो टैग करना सुनिश्चित करें अन्यथा की दशा में जिम्मेदारी तयकर कार्यवाही होगी। उन्होंने कहा कि अभियान के तहत जिन विभागों द्वारा पौधारोपण किया गया है, संबंधित अधिकारी अगले 05 दिन में रोपित किए गए पौधों का सत्यापन अपने स्तर से कर ले यदि कोई पौधा मृत हो गया हो तो उसे तत्काल बदलवायें। उन्होने कहा कि शासन स्तर से वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु 35 लाख 63 हजार 100 पौधे रोपित करने का लक्ष्य आवंटित किया गया है, जिसमें सर्वाधिक 14 लाख 02 हजार पौधे ग्राम्य विकास विभाग, 10 लाख पौधे वन विभाग, 02 लाख 81 हजार पौधे कृषि विभाग, 01 लाख 86 हजार पौधे पर्यावरण विभाग, 01 लाख 74 हजार पौधे उद्यान विभाग, 01 लाख 56 हजार पौधे पंचायती राज द्वारा रोपित किये जाने हैं। उन्होने कहा कि गत वर्ष के अनुसार ही आगामी वित्तीय वर्ष में सभी विभागों को लक्ष्य आवंटित किया गया है, सम्बन्धित विभाग के अधिकारी वन विभाग द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रारूप-01, 02 पर तत्काल रिपोर्ट उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

गीतांजलि शर्मा का भजन लांच करते गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा

दिनेश पंकज

गोवर्धन (मथुरा)। दिल्ली स्थित आवास पर भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी द्वारा भारत की सुप्रसिद्ध कलाकार व ब्रज की बेटी गीतांजलि शर्मा का श्री राम आगमन भजन लांच किया गया। राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी ने प्रसिद्ध कलाकार गीतांजलि शर्मा के भजन को सुना तथा उसकी प्रशंसा करते हुए अजय मिश्रा ने कहा कि यह भजन करोड़ों सनातनियों के हृदय तक पहुंचेगा। गृह राज्य मंत्री ने कहा कि श्री राम आगमन भजन की लेखिका एवं गायिका गीतांजलि का एक यह एक सार्थक प्रयास है। भजन को गीतांजलि शर्मा और गायत्री शर्मा द्वारा गाया गया है, तथा इसमें संगीत आर श्रीधर, फिल्मांकन बीनू राजपूत द्वारा किया गया है। इस भजन में ब्रज की बालिकाओं द्वारा मन मोहक नृत्य की प्रस्तुति दी गई है, जिसमे प्रमुख रूप से भव्या बंसल, प्रिया, लक्षिता, मांडवी, वंशिका, ख्याति, नायशा, अतुल्या, तन्वी, एंजल, अमंदीता जो की कलावृक्ष कथक केंद्र की छात्राएं हैं ने भाग लिया। इस मौके पर विश्व प्रसिद्ध नृत्यांगना गीतांजलि शर्मा ने कहा कि श्री राम आगमन भजन सिर्फ एक भजन नहीं बल्की करोड़ो राम भक्तों अविरल भावना है। गीतांजलि शर्मा ने बताया कि श्री कृष्ण की अन्नय उपासक होने के साथ साथ वो मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को अपना आदर्श मानती हैं और इस युग में जन्म लेने से मरण तक श्री राम ही धरती पर उपस्थित सभी प्राणियों के तारण हार हैं। इस मौके पर भारत सरकार के गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी ने श्री राम आगमन भजन के पोस्टर का अनावरण किया।

यातायात के सभी नियमों का पालन करते हुए सुरक्षित वाहन चलायें: डीएम

अवधनामा संवाददाता

हरदोई। आज सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अन्तर्गत सीएसएन पीजी कालेज परिसर में विभिन्न कालेजों के छात्र-छात्राओं के बनायें मानव श्रखंला कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने उपस्थित समस्त छात्र-छात्राओं को सुरक्षित रहने के लिए सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने की शपथ दिलायी तथा छात्रों की तरह स्वयं भी अधिकारियों के साथ हाथ में हाथ जोड़कर जंजीर की तरह मानव श्रखंला बनायी।

मानव श्रखंला में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि आज शपथ लें कि स्वयं बिना हेलमेट मोटर साईकल, स्कूटी नहीं चलायेगें और चार पाहिया वाहन चलाते समय ड्राइवर सहित अन्य बैठे लोगों को सीट बेल्ट लगवायेगें। उन्होने शपथ दिलायी कि वाहन चलाते वक्त फोन पर बात न करें, शराब पीकर वाहन न चलाये, ड्राईविंग लाईसेंस बिना वाहन न चलाये और यातायात के अन्य सभी नियमों का पालन करते हुए सुरक्षित वाहन चलायेगें। जिलाधिकारी ने कहा कि यातायात नियमों का पालन स्वयं करें और अपने पारिवारीजनों सहित जन सामान्य को भी जागरूक करें तथा स्वयं सुरक्षित रहे और दूसरों को सुरक्षित रखें।

राष्ट्रीय दिव्यांग पार्टी ने किया खटिया बिछाओ - भ्रष्टाचार मिटाओ आन्दोलन

अवधनामा संवाददाता

कानपुर। राष्ट्रीय दिव्यांग पार्टी ने आज तहसील सदर में लेखपालों कि मनमानी के विरोध में खाट बिछाओ - भ्रष्टाचार मिटाओ आन्दोलन के चलते संयुक्त पुलिस आयुक्त एलर्ट हो गये, रात से ही टेलिफोन पर वार्ता का क्रम जारी रहा, पर वार्ता में हल न निकलने पर सुबह 10 बजे सयुक्त पुलिस आयुक्त के आवास पर पुनर्वार्ता के लिये समय निर्धारित हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार की संयुक्त पुलिस आयुक्त के आवास पर वार्ता क्रम शुरू हुआ। वार्ता में लेखपालों की मनमानी पर रोक लगाने व आवेदन पत्रों पर फर्जी रिपोर्ट लगाने वाले लेखपालों पर कार्यवाही करने, तहसील मे लम्बित आवेदन पत्रों की जांच रिपोर्ट तत्काल समाज कल्याण विभाग व महिला कल्याण विभाग भिजवाने का निर्णय हुआ। उसके बाद एसडीएम सदर ने सभी मामलों जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्यवाही का आदेश दिया है।

संस्कृति विश्वविद्यालय ने नए जोश के साथ मनाया 'स्टार्टअप डे'

अवधनामा संवाददाता

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में नवाचार और उद्यमशीलता की भावना से ओतप्रोत 'स्टार्टअप डे' मनाते हुए विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों के एक श्रंखला शुरू की।

विश्वविद्यालय का परिसर उत्साह से भर गया क्योंकि छात्र, संकाय और उद्योग विशेषज्ञ उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र का जश्न मनाने और प्रोत्साहित करने के लिए एक साथ आए। उत्सव की शुरुआत एक प्रेरक उद्घाटन समारोह के साथ हुई। इसमें विशिष्ट अतिथि संस्कृति विवि के चांसलर डॉ. सचिन गुप्ता, कुलपति डॉ. एमबी चेट्टी, सीईओ डॉ. मीनाक्षी शर्मा, डीजी डॉ. जेपी शर्मा, संस्कृति यूनिवर्सिटी बिजनेस इनक्यूबेशन सेंटर के सीईओ प्रोफेसर अरुण कुमार त्यागी, एकेडमिक डीन डा. मीनू गुप्ता, डीन मैनेजमेंट डॉ. राव और विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने में स्टार्टअप के महत्व पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम ने उद्यमियों की अगली पीढ़ी के विकास में संस्कृति विश्वविद्यालय की भूमिका को रेखांकित किया। पूरे दिन, उपस्थित लोगों को सफल उद्यमियों, उद्यम पूंजीपतियों और उद्योग जगत के नेताओं को सुनने और चर्चा में शामिल होने का मौका मिला। इन चर्चाओं में फंडिंग रणनीतियों, बाजार के रुझान और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में सहयोग के महत्व सहित कई विषयों पर चर्चा हुई। इंटरैक्टिव कार्यशालाएँ भी आयोजित की गई। कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को व्यवसाय शुरू करने और उसे आगे बढ़ाने के दौरान सामने आने वाली जटिलताओं को सुलझाने की व्यवहारिक जानकारियां भी दी गईं। छात्रों को अनुभवी पेशेवरों के साथ निकटता से बातचीत करने, बहुमूल्य ज्ञान और मार्गदर्शन प्राप्त करने का मौका मिला। उत्सव का एक मुख्य आकर्षण स्टार्टअप शोकेस था, जहां संस्कृति विश्वविद्यालय के उभरते उद्यमियों ने अपने अभिनव विचार और परियोजनाएं प्रस्तुत कीं।

धूमधाम से मनाई गई नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती बड़ी धूम से नन्द कान्वेंट स्कूल में स्कूल के प्रबंधक नन्द की अध्यक्षता में व मालती तिवारी के

संचालन में सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम में शहीद भगतसिंह स्मृति ट्रस्ट के चेयरमैन सत्यभान सिंह जनवादी ,जयप्रकाश श्रीवास्तव और अखिलेश सिंह मुख्यरूप से मौजूद रहे। नेताजी की जयंती को सम्बोधित करते हुए ट्रस्ट के सदस्य जयप्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि आज अगर हमें आजादी मिली तो इन क्रांतिकारियों की देन है।और उनकी परम्परा को आगे बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है।उसके बाद एक गीत÷फिर तेरी कहानी याद आई,फिर तेरा फसाना याद आया,सुनाया।ट्रस्ट के सदस्य अखिलेश सिंह ने कहा कि आज नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे क्रान्तिकारी योद्धाओं को याद करते हुए उनके विचारों को आगे बढ़ाना होगा।तभी हम अपने क्रांतिकारियों के सपने को साकार कर पाने में सफल होंगे।ट्रस्ट के चेयरमैन सत्यभान सिंह जनवादी ने कहा कि आजादी के आंदोलन में अपनी जान कुर्बान करने वाले योद्धाओं की परम्परा को आज के युवाओं को आगे बढ़ाना होगा।नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने नारा दिया तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हें आजादी दूंगा।आज क्रांतिकारियों को परम्परा को भुलाया जा रहा है।सरकारें भी अनदेखी कर रही है।आजाद हिंद फौज बनाकर नेताजी ने अंग्रेजी हुकूमत को उखाड़ फेंका।कार्यक्रम को विद्यालय की प्रधानाध्यापिका अनीता यादव,अर्चना पांडेय,नीतू द्विवेदी,मीरा मिश्रा,एमपी मिश्रा,शैलेन्द्र ने भी सम्बोधित करके नमन किया।कार्यक्रम के अंत मे नन्द कान्वेंट के प्रबंधक राजेश नन्द ने अपने अध्यक्षीय व्यक्तव्य में कहा कि देश की आजादी में वीरों ने कुर्बानी देकर आजाद कराया।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री ने आवास हेतु बनाई जा रही टेंट सिटी का किया निरीक्षण

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। श्री राममंदिर दर्शन यात्रा 25 जनवरी से प्रारम्भ हो रही है। जिसको लेकर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल ने आवास हेतु बनाई जा रही टेंट सिटी का निरीक्षण किया। निरीक्षण में उनके साथ प्रदेश महामंत्री गोविंद नारायण शुक्ला, प्रदेश उपाध्यक्ष मानवेंद्र सिंह, भाजयुमो प्रदेश महामंत्री हर्षवर्धन सिंह, मीडिया प्रभारी दिवाकर सिंह, सुनील तिवारी शास्त्री रहे। उन्होनें टेंट, जल व्यवस्था, शौचालय, प्रसाधन की व्यवस्थाओं को देखा व आवश्यक निर्देश संबंधित को दिया।

इस दौरान राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा रामलला अपने भव्य मंदिर में विराजमान है। देश-विदेश से आने वाले राम भक्तों को यहां आने के बाद किसी प्रकार की असुविधा न हो। उसके आवास के साथ टेंट सिटी में भोजन, अल्पाहार, मेडिकल व्यवस्था, अलाव व्यवस्था, शौचालय सहित सभी व्यवस्थाएं की गई है। प्रयास है कि अयोध्या से रामभक्त आध्यत्मिकता के साथ यहां के आतिथ्य भाव की स्मृति भी आपने साथ लेकर जाए। आवास व्यवस्था को लेकर टेंट सिटी में 6 नगर बसाए गए है। जिसमें वाल्मीकि विशिष्ट की आवास क्षमता 500 है। इसके अतिरिक्त अंजनेरी, चित्रकूट, मिथिला, पंचवटी, प्रयाग नगर बसाए गए है। जिनमें प्रत्येक की क्षमता 4 हजार आवास की है। इसके अतिरिक्त नगर निगम द्वारा बनाए जा रहे टेंट सिटी हनुमान गुफा के पास पंचवटी नगर बसाया गया है। जिसकी क्षमता 2500 आवास की है।

हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि आने वाले राम भक्त सुगमता से मंदिर में दर्शन कर पाएं

अयोध्या। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री ने सहादतगंज कार्यालय पर श्री राम दर्शन यात्रा के व्यवस्था प्रमुखों के साथ बैठक की। बैठक में व्यवस्था प्रमुख से एक-एक कर व्यवस्था ओ के संबंध में की जा रही तैयारियों की जानकारी ली। सभी को रामभक्तों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए निर्देश दिए।बैठक में आवास व्यवस्था से प्रमुख अभिषेक मिश्र को आगंतुको की रहने, ठंड से बचाव के लिए समुचित इंजताम, शौचालय व अन्य मूलभूत सुविधाओं का विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। रेलवे स्टेशन पर अल्पाहार व स्वागत की समुचित व्यवस्था करने को कहा। भोजन व्यवस्था प्रमुख मिथिलेश त्रिपाठी को भोजन तथा अल्पाहार के कैम्प के स्थलों के चयन व सामाग्री की उपलब्धता पर विशेष ध्यान देने को कहा।राष्ट्रीय महामंत्री अयोध्या आने वाले सभी राम भक्तों का हमें विनयपूर्वक स्वागत करना है। उसकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखना है।

देश के नौनिहालो को नेता जी के जीवन गाथा से हमें कराना होगा परिचित : सांसद

अयोध्या। नेता जी सुभाष चंद्र बोष की जयंती पर नगर निगम स्थित प्रतिमा पर भाजपाईयों ने माल्यापर्ण कर उन्हे याद किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सांसद लल्लू सिंह ने कहा कि देश की आजादी के लिए नेता जी ने जिस तरह अपना सर्वस्य न्यौछावर कर रखा था, वह अतुलनीय है। नेता जी का जीवन चरित्र सभी देशवासियों के हृदय में राष्ट्रभक्ति के भाव का संचार करता है। देश के नौनिहालो को नेता जी के जीवन गाथा से हमें परिचित कराना होगा।

भाजपा नेता शक्ति सिंह ने कहा नेता जी का सम्पूर्ण जीवन भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित था। इस दौरान सुप्रीत कपूर, बुद्धिपाल प्रजापति सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भाजपा कार्यालय पर श्री राम दर्शन यात्रा को लेकर भण्डारे की हुई शुरूवात

अयोध्या। सिविल लाइन स्थित भाजपा कार्यालय पर सांसद लल्लू सिंह के द्वारा श्री राम मंदिर दर्शन यात्रा को लेकर भण्डारे का आयोजन किया गया। भण्डारा यात्रा की समाप्ति दिवस तक अनवरत चलाया जाएगा। जिसमें राम भक्तों को दो समय का भोजन प्रदान किया जाएगा। भण्डारे की शुरूवात सांसद, महानगर अध्यक्ष कमलेश श्रीवास्तव, पूर्व जिलाध्यक्ष अवधेश पाण्डेय बादल ने किया।इस दौरान सांसद ने कहा कि राम भक्तों की सुविधा हेतु भण्डारे की शुरूवात की गई है। मंदिर दर्शन को आने वाले प्रत्येक श्रद्धालुओं की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखा जा रहा है। इसके लिए पार्टी द्वारा विशेष व्यवस्था की जा रही है। जिससे उन्हें रामनगरी में कोई परेशानी न हो।

असम के मुख्यमंत्री और केंद्र की भाजपा सरकार की प्रशासनिक विफलताओं और भ्रष्टाचार को छिपाने का एक हताश प्रयासः वेद सिंह कमल

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा मणिपुर से निकल जा रही भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर असम में योजना बद्ध तरीके से दो बार हमला किया गया इसके विरोध में कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जिला अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यालय कमला नेहरू भवन पर विरोध प्रदर्शन किया।

जिला अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा भारत जोड़ो न्याय यात्रा जो कि युवाओं, महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए सफलतापूर्वक न्याय की मांग कर रही है। उसे यात्रा को , भाजपा, विशेष रूप से असम में इसके सबसे भ्रष्ट मुख्यमंत्री, हिमंत बिस्वा सरमा, इस शांतिपूर्ण यात्रा को बाधित करने की सख्त कोशिश कर रहे हैं।श्री यादव ने कहा विगत दिनों में, भारत जोड़ो न्याय यात्रा के काफिलों पर योजनाबद्ध हमले और इन उपद्रवियों द्वारा हमारी यात्रा के पोस्टरों को फाड़ने की घटनाएं देखी हैं। दिनांक

21-01-2024 को भाजपा कार्यकर्ताओं की जानबूझकर इकट्ठी की गई भीड़ ने राहुल गांधी जी के नेतृत्व में चल रही भारत जोडो न्याय यात्रा के काफिले पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सहित हमारी पार्टी के कई नेता घायल हो गए। हम इस कायराना कृत्य की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं तथा दोषियों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग करते हैं।महानगर अध्यक्ष वेद सिंह कमल ने कहा भाजपा समर्थित इन गुंडों द्वारा न्याय यात्रा पर ताजा हमला किया गया। यह और कुछ नहीं बल्कि असम के मुख्यमंत्री और केंद्र की भाजपा सरकार की प्रशासनिक विफलताओं और भ्रष्टाचार को छिपाने का एक हताश प्रयास है। जिला प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने कहा हमारे मुद्दे को दबाने के ऐसे जबरदस्त प्रयासों के सामने, कांग्रेस पार्टी का कार्यकर्ता दृढ़ और एकजुट है। कांग्रेस पार्टी इस तरह की अराजकता की घर निंदा करती है तथा कांग्रेस कार्यकर्ता सरकार द्वारा पार्टी नेताओं के प्रति की जड़ी उत्प्रेरणात्मक कार्यवाही के विरोध में एकजुटता और दृढ़ता के साथ खड़ा है। जिला उपाध्यक्ष अनिल सिंह ने कहा कांग्रेस पार्टी के नेता और कार्यकर्ताओं पर किया गया हमला लोकतंत्र विरोधी तथा असम सरकार की हताशा का परिचायक है।

विरोध प्रदर्शन में प्रमुख रूप से पीसीसी सदस्य राम अवध पासी, कवींद्र साहनी ,अशोक राय ,फ्लावर नकवी, चंचल सोनकर, अमरीश कुमार पांडे , युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष संजय तिवारी ,राहुल तिवारी ,देव वर्मा ,प्रेम प्रकाश पांडे, तेजबली पांडे ,लाल मोहम्मद, आशीष गुप्ता, महिला कांग्रेस की महानगर अध्यक्ष सविता यादव अभिषेक कुमार, अरुण साहू,रोहित यादव आदि उपस्थित रहे।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थेः संजय महिंद्रा

अयोध्या। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती 23 जनवरी की पूर्व संध्या 22 जनवरी को अयोध्या धाम चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा चौक घंटा घर पर स्थित शहीद स्मारक पर 5100 दीप जलाकर दीपांजलि समारोह बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व पुलिस अधीक्षक वअयोध्या धाम ट्रस्ट के संरक्षक प्रीतम सिंह वशिष्ठ अतिथि राम बहल व आर्य कन्या इंटर कॉलेज की पूर्व प्रधानाचार्य मीनू कपूर द्वारा शहीद स्मारक पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। दीपांजलि समारोह की संयोजक व ट्रस्ट की उपाध्यक्ष भारती सिंह एडवोकेट ने बताया कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर हर वर्ष अयोध्या धाम चैरिटेबल ट्रस्ट इसी स्थल पर 5100 जलाकर दीपांजलि समारोह धूमधाम से आयोजित करता है दीपांजलि कार्यक्रम समारोह को संबोधित करते हुए अयोध्या धाम चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय महिंद्रा ने कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए आजाद हिंद फौज का गठन किया था उनके द्वारा नारा दिया गया जय हिंद का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया दीपांजलि समारोह कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी अधिवक्ता व्यापारी डॉक्टर छात्र-छात्राएं व्यापारी बंधु सहित शहर के गणमान्य नागरिक कार्यक्रम में उपस्थित थे दीपांजलि समारोह स्थल पर चांदनी सिद्दीकी की पूरी टीम ने सुंदर रंगोली बनाकर लोगों का मनमोहित कर दिया इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक भारतीय सिंह एडवोकेट ने रंगोली बनाने वाली पूरी टीम तथा उपस्थित ट्रस्ट की महिलाओं को पटका पहनकर सम्मानित भी किया गया इस अवसर पर ट्रस्ट के महामंत्री प्रतीक वैश्य भज्जा ने कहा की नेताजी सुभाष चंद्र बोस के बारे में आज की युवा पीढ़ी को भली-भांति जानने की आवश्यकता है।

आराध्य के दर्शन को उमड़ा सैलाब बनी समस्या, वाहनो पर लगी रोक दूसरे रास्ते बने विकल्प

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। हुआ यह कि प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम व वीवीआइपी की उपस्थिति की वजह से रोका गया आवागमन जब खुला तो उसमें अग्रिम पंक्ति में श्रद्धालुओं का सैलाब था जो अपने आराध्य के दर्शन को उमड़ पड़ा बस यहीं समस्या ने जन्म ले लिया। अयोध्या मंदिर में सैलाब सम्भालने के लिए सूबे के आला अधिकारियों को तो आना ही पड़ा वहीं हजारों श्रद्धालु बीच रास्ते मे फंस गए। यही वजह है कि फिलहाल वाहनो को अयोध्या की ओर जाने से रोक दिया गया है और भक्तों को दूसरे रास्तो से भेजा जा रहा। रामलला के दर्शन को व्याकुल भीषण जनसैलाब के कारण हो रही अव्यवस्था को देखते हुए मंगलवार सुबह से ही लखनऊ अयोध्या हाईवे पर यातायात पूरी तरह से बंद कर दिया गया। बाराबंकी से अयोध्या की ओर एक भी वाहन नहीं जाने दिया जा रहा है। हजारों लोग बाराबंकी से लेकर लखनऊ के बीच में फंस गए हैं। लखनऊ अयोध्या हाईवे पर शहर के बाहर चौपुला चौराहे पर जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार, एसपी दिनेश कुमार सिंह समेत कई सीईओ व थाना प्रभारी मौजूद हैं। दोपहर एक बजे के बाद अयोध्या जाने वाली बसों पर भी रोक लगा दी गई है। हजारों लोग अब तक रोके जा चुके हैं। हाईवे पर चप्पे चप्पे पर निगरानी की जा रही है और संदिग्ध वाहनों की तलाशी ली जा रही है। इस कारण बहराइच हाईवे पर दबाव बढ़ गया है और जाम की स्थिति भी उत्पन्न हो रही है। पुलिस हाईवे पर अनाउंस कर रही है कि कोई भी वाहन अयोध्या नहीं जाएगा। सभी पास भी अमान्य कर दिए गए हैं। कई पुलिस अधिकारी और लखनऊ की ओर से आए विशिष्ट लोगों को भी सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए रोक दिया गया।

कृषको हेतु दो खेत तालाब का लक्ष्य इकाई हेतु अवशेष

बाराबंकी। भूमि संरक्षण अधिकारी कुर्सी स्थित द्वारा बताया गया कि जनपद के विकास खण्ड-देवा, फतेहपुर, निंदूरा, सूरतगंज, रामनगर, सिरौलीगौसपुर, पूरेडलई एवं मसौली के कृषकों को सूचित किया जाता है कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजनान्तर्गत वर्षा जल संचयन हेतु भूमि संरक्षण इकाई कुर्सी द्वारा सामान्य वर्ग के कृषको हेतु दो खेत तालाब का लक्ष्य इकाई हेतु अवशेष है जो लाभार्थी अपने निजी खेत में तालाब खुदवाने हेतु इच्छुक हो, का आवेदन आमंत्रित किया जाता है। एक लघु खेत तालाब पर मृदा कार्य पर होने वाला व्यय धनराशि 82,600 एवं पक्की सरचना इनलेट के निर्माण पर लागत 22,400 जो कि खेत तालाब की कुल लागत धनराशि 1,05000 होती है जिस धनराशि का 50 प्रतिशत अधिकतम 52,500 मात्र का अनुदान अनुमन्य है ÷पहले आओ और पहले पाओं÷ के आधार पर कृषकों को अनुदान का लाभ दिया जायेगा।

रामलला के दर्शन के लिए बेकाबू हुए भक्त, टूटी बैरिकेडिंग

अवधनामा संवाददाता

अयोध्या। मंगलवार को जन्मभूमि पर रामलला का दर्शन करने के लिए भक्तों का हुजूम उमड़ पड़ा। दर्शन के लिए भक्त बेकाबू हुए तो पुलिस के पसीने छूट गए। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला का दर्शन करने के लिए मंगलवार को भक्तों का हुजूम उमड़ पड़ा। पुलिस प्रशासन के अधिकारियों ने लोगों को किसी तरह संभालने की कोशिश की। मामला बिगड़ता देख कमिश्नर, आईजी और एडीजी भी मौके पर पहुंचे और हाथों में लाउडस्पीकर लेकर भक्तों से शांति बनाए रखने की अपील करते रहे। कुछ देर में डीजी प्रशांत कुमार और प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद भी राम मंदिर पहुंच गए हैं। खुद भीड़ को संभालने के लिए मोर्चा संभाल लिया। वहीं, भारी भीड़ को देखते हुए दूसरे जिलों से अयोध्या आने वाले रास्तों पर भी गाड़ियों को रोका जा रहा है। राम मंदिर पर मंगलवार की सुबह से ही भक्तों की भारी भीड़ पहुंच गई थी। मंदिर खुलते ही लोग अंदर जाने को आतुर दिखाई दिए। साढ़े 11 बजे मंदिर बंद हुआ तो भीड़ और ज्यादा बढ़ गई। दो बजे मंदिर खुला तो रामपथ पर भक्त बेकाबू हो गए।

धूमधाम से मनाया गया पूर्व सांसद का जन्मदिन, हुए विविध आयोजन

बाराबंकी। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के पूर्व चेयरमैन पूर्व सांसद डा पीएल पुनिया का 79वां जन्मदिन आज कांग्रेसजनो ने धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान आतिशबाजी करके केक काटकर, खिचडी भोज, भंडारा करके, गरीबो में कम्बल वितरण करके अपने नेता की लम्बी उम्र की कामना की। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपने प्रिय नेता पूर्व सांसद डा पीएल पुनिया के अपने ओबरी आवास पर पहुंचते ही युवक कांग्रेस अध्यक्ष सिकन्दर अब्बास रिजवी तथा मो अकील की अगुवाई में दर्जनो कांग्रेसजनो ने आतिशबाजी से उनका गगनभेदी नारो के साथ स्वागत किया। तदोपरान्त 21 किलो की माला, पगडी, शाल डालकर 11 किलो का केक काटकर उनके लम्बी उम्र कामना करके जन्मदिन की बधाई दी। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य वीरेन्द्र प्रताप यादव ने जनपदीय कचेहरी में अधिवक्ताओ के साथ खिचडी भोज करके उनको जन्मदिन की बधाई दी। वरिष्ठ कांग्रेसनेत्री एवं पूर्व प्रशासनिक अधिकारी राबिया बेगम, महिला कांग्रेस की अध्यक्ष शबनम वारिस, नगर अध्यक्ष प्रीति शुक्ला, तस्लीमन खान ने पूर्व सांसद के ओबरी आवास पर केक काटकर गरीबो को कम्बल, स्वेटर देकर पूर्व सांसद की लम्बी उम्र की कामना की। देवा ब्लाक के कांग्रेस अध्यक्ष फरीद अहमद ने कांग्रेसजनो के साथ केक काटकर तथा महान सूफी संत हाजी वारिस अली शाह के अस्थाने पर चादर पेश करके लम्बी उम्र की कामना की। कांग्रेस के पूर्व कोषाध्यक्ष नईम सिद्दीकी ने ओबरी आवास पर पहुंचकर जन्मदिन की बधाई दी। इसी प्रकार युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अजय रावत ने कांग्रेसजनो के साथ भनौली नहर के चौराहे पर पूजा अर्चना कर विशाल भण्डारा करके जन्म दिन की बधाई दी।

मानव श्रृंखला का हुआ निर्माण, सड़क सुरक्षा शपथ कार्यक्रम सम्पन्न

बाराबंकी। राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 14 फरवरी तक मनाया जाएगा। आज नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जयंती के अवसर पर मानव श्रृंखला का निर्माण एवं सड़क सुरक्षा शपथ का कार्यक्रम राजकीय इण्टर कॉलेज के मैदान में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उप जिलाधिकारी विजय कुमार त्रिवेदी सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन) श्रीमती अंकिता शुक्ला, जिला विद्यालय निरीक्षक ओपी त्रिपाठी, राजकीय इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य राधेश्याम धीमान, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज की प्रधानाचार्या नंदिता सिंह, यातायात निरीक्षक रामयतन यादव, जिला स्काउट मास्टर राजेन्द्र त्रिपाठी कलाध्यापक एवं पूर्व दिव्यांग यूथ आईकॉन कृत, जिला गाइड कैप्टन श्रीमती रितु अग्निहोत्री, स्काउट मास्टर रामाधार भारती, गाइड कैप्टन साधना द्विवेदी एवं परिवहन विभाग के समस्त कर्मचारी गण उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन जिला स्काउट गाइड मास्टर ने किया। सर्वप्रथम विद्यालय के छात्र/छात्राओं द्वारा मानव श्रृंखला का निर्माण करते हुए हेलमेट की आकृति बनायी गयी, जिसके पश्चात जीआईसी ग्राउंड में उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया गया, जिसके पश्चात वहां उपस्थित अधिकारियों/शिक्षकों के द्वारा सुभाष चन्द्र बोस के विषय में परिचय के साथ-साथ छात्र/छात्राओं को सड़क सुरक्षा सम्बन्धी नियमों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में उपस्थित यातायात निरीक्षक के द्वारा छात्र/छात्राओं से सकारात्मक जिद किये जाने का अनुरोध किया गया। एसडीएम विजय कुमार त्रिवेदी ने भी छात्र/छात्राओं को सड़क सुरक्षा सम्बन्धी नियमों के प्रति सजग रहने तथा दूसरों को भी सजग करने हेतु प्रेरित किया।

सिपाही ने स्वामिनी को वापस किया मोबाइल, पर्स

अवधनामा संवाददाता

बाराबंकी। श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के परिप्रेक्ष्य में जुलूस के दौरान गिरे मोबाइल फोन मय पर्स को थाना कोतवाली नगर में नियुक्त आरक्षी द्वारा तत्परतापूर्वक बरामद कर उसके स्वामिनी के सुपुर्द किया। श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के परिप्रेक्ष्य में थाना कोतवाली नगर क्षेत्रान्तर्गत निकले जुलूस में कटरा मोहल्ला निवासिनी का मोबाइल फोन मय पर्स गिर जाने की सूचना पर आरक्षी राजेश यादव, थाना कोतवाली नगर द्वारा तत्परतापूर्वक उक्त मोबाइल फोन मय पर्स को बरामद कर उसके स्वामिनी को सुपुर्द किया गया। जिसकी आमजनमानस द्वारा प्रशंसा की गई।

मतदाता जागरूकता के लिए 100 कालेजों में रैली का आयोजन होगा: जिलाधिकारी

अवधनामा संवाददाता

महराजगंज। निर्वाचन आयोग के निर्देशों के क्रम मे जनपद में चलाए गए विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण का कार्य 27 अक्टूबर से 9 दिसंबर तक चला। इसमें अर्ह एवं छूटे हुए दिव्यांग, बेघर, सेक्स वर्कर्स तथा महिलाओं के नाम मतदाता सूची में सम्मिलित किये जाने हेतु इस अभियान को समावेशी अभियान के रूप में मनाया गया। अभियान में मतदाताओं की संख्या वृद्धि हुई, जिसमें पुरूष मतदाता की संख्या 28210, महिला 32634, थर्ड जेंडर 04 कुल 60848 मतदाताओं की बढ़ोत्तरी हुई। जनपद में आज दिनांक- 23 जनवरी 2024 को अंतिम रूप से मतदाता सूची के प्रकाशन के समय मतदाताओं की संख्या क्रमशः पुरूष-1047974, महिला-940208, थर्ड जेंडर-92 कुल 19887274 है। जिलाधिकारी अनुनय झा ने बताया कि जनपद की पांच विधानसभाओ में फॉर्म 06 के तहत 61346, फॉर्म 07विक तहत 37966 एवं फॉर्म 08 के तहत 4244 आवेदन प्राप्त किये गए। आलेख्य प्रकाशन के समय जेण्डर रेशियो 892 के सापेक्ष अन्तिम प्रकाशन के समय जेण्डर रेशियो 897 हो चुका है। जिलाधिकारी ने बताया कि ईपी रेशियो 58.19 के सापेक्ष अन्तिम प्रकाशन के समय ई0पी0 रेशियो 58.89 प्रतिशत हो चुका है, अर्थात 0.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार ऐज कोहार्ट 18-19 आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या 4837 के सापेक्ष अन्तिम प्रकाशन के समय 18-19 आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या 19102 है अर्थात 14265 की वृद्धि हुई है। जिलाधिकारी ने बताया कि वनटांगिया/मुसहर ग्रामों में विशेष कैंप आयोजित कर व्यक्तियों को मतदाता सूची में सम्मिलित करने हेतु फार्म 6 भरवा कर उनको मतदाता के रूप में पंजीकृत किया गया। इसी प्रकार महिला और युवा मतदाताओं को मतदाता सूची में शामिल करने हेतु विशेष अभियान चलाया गया। उन्होंने बताया कि स्वीप योजना के 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर वनटांगिया ग्राम/मुसहर आबादी वाले ग्रामों में विशेष कैंप का आयोजन कर नए मतदाताओं को मतदाता पहचान पत्र प्रदान किया जाएगा। इसी प्रकार इन गांवों के वरिष्ठ मतदाताओं का विशेष सम्मान किया जाएगा। इसी प्रकार दिव्यांग मतदाताओं को भी प्रमाण पत्र वितरित किया जाएगा। जिलाधिकारी ने कहा की मतदाताओं में उनके मत के मूल्य के प्रति जागरूक करने हेतु वोटर वाल बनाया जायेगा, जिसकी थीम होगी मेरा मत महत्वपूर्ण है, क्योंकि....। उन्होंने बताया कि मतदाता जागरूकता हेतु 100 कॉलेजों में रैली का आयोजन किया जाएगा। साथ ही महिला मतदाताओं को विशेष रूप से जागरूक करने हेतु पिंक रैली का भी आयोजन किया जाएगा।

सरकार की योजनाओं का लाभ आमजन तक पहुंच रहा :अजय श्रीवास्तव

महराजगंज। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में आज हम सब देशवासी एक नए भारत का दर्शन कर रहे हैं । केंद्र सरकार की हर योजना का लाभ बिना किसी भेदभाव के लोगों को मिल रहा है ।आज विकसित भारत संकल्प यात्रा का माध्यम गांव-गांव में मोदी जी की गारंटी का माध्यम बन रहा है। उक्त बातें मिठौरा ब्लॉक के परसौनी गांव स्थित ग्रीन माउंट एकेडमी में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा में मुख्य अतिथि वरीष्ठ भाजपा नेता अजय श्रीवास्तव ने कही वरिष्ठ भाजपा नेता वीरेंद्र सिंह ने कहा कि उज्जवला गैस योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले उन परिवारों के लिए वरदान साबित हुई है । इस क्रम में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किया गया। नौनिहालों को अन्न प्रासन और गर्भवती महिलाओं की गोद भराई भी की गयी । मंच पर उपस्थित मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार राय ने उपस्थित लोगों को भारत को विकसित बनाने के साथ देश की एकता व अखंडता के लिए शपथ दिलाया। इस अवसर पर ग्राम प्रधान परसौनी अनिल जोशी, ग्राम विकास अधिकारी अमरेंद्र पटेल, एसडीएम पंकज, समाजसेवी ज्ञानेंद्र त्रिपाठी, एपीओ शिवेंद्र सिंह सूर्यवंशी, भाजपा नेता शैलेश पाण्डेय, गिरधारी मद्धेशिया, मुजफ्फर हुसैन आदि उपस्थित रहे ।

प्रतिभाओं को बढ़ाने में खेल महाकुंभ है जरूरी : जगदंबिका पाल

अवधनामा संवाददाता

डुमरियागंज सिद्धार्थनगर। राजकीय कन्या इंटर कालेज डुमरियागंज के मैदान पर मंगलवार से सांसद खेल महाकुंभ प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि सांसद जगदंबिका पाल ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित व हरी झंडी दिखाकर खेल का शुभारंभ करने के बाद कहा कि ग्रामीण प्रतिभाओं को बढ़ाने के लिए खेल महाकुंभ ज़रुरी है। प्रतियोगिता में भाग लेने आए खिलाड़ियों में पहले दिन काफी उत्साह दिखाई दिया।

उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद जगदंबिका पाल ने कहा कि खेल से जहां शारीरिक ऊर्जा मिलती है वही मनुष्यों के लिए जरूरी भी है। सरकार का मानना है कि जब ग्रामीण स्तर पर खेलों का आयोजन किया जाएगा तो वहां पर बहुत सी ऐसी प्रतिभाए छुपी मिलती है जो सीमित

सांसद खेल महाकुंभ प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

संसाधन की वजह से आगे बढ़ने से वंचित रह जाती है। अगर खेलों का आयोजन लगातार किया जाता रहेगा तो वहां से निकलने वाली प्रतिभाओं को ऊंचाई मिलेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार जहां एक तरफ विभिन्न प्रकार की जन कल्याणकारी योजनाएं चलाकर लोगों का जीवन संवारने का काम कर रही है। वहीं युवाओं को बेहतर भविष्य देने के लिए योजना बद्ध है। प्रदेश की योगी सरकार खेल कोटे से प्रतिभावान खिलाड़ियों को रोजगार से भी जोड़ रही है। प्रतियोगिता के पहले दिन बालिका 100 मीटर दौड़ में काजल प्रथम, सुनीता द्वितीय, अर्पिता तृतीय, 200 मीटर दौड़ काजल प्रथम, विमल त्रिपाठी द्वितीय, अर्चिता तृतीय, 400 मीटर दौड़ में काजल प्रथम, साधना द्वितीय, आरती तृतीय, ऊंची कूद में कविता प्रथम विमला दितीय, अर्चिता तृतीया, बालक वर्ग 100 मीटर दौड़ में गगन श्रीवास्तव प्रथम, रवि किशन द्वितीय, मो शहजाद तृतीय, 200 मीटर दौड़ में रवि प्रथम, शाबान द्वितीय, मोहम्मद फैजान तृतीय, ऊंची कूद में अफराज प्रथम,अशरफ द्वितीय जीतू तृतीय रहे।

नपा अध्यक्ष के नेतृत्व में मनाई गई सुभाष चंद्र बोस की जयंती

अवधनामा संवाददाता

बांसी सिद्धार्थनगर। मंगलवार सुभाष चन्द्र बोस स्मारक पार्क आदर्श नगर पालिका परिषद बांसी रास्ती तट पर नगर पालिका अध्यक्ष चमन आरा रायनी के नेतृत्व में सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति पर माल्यार्पण कर जयंती मनाया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमारे पुरखों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान रहा है इसका प्रमाण पत्र भी हमारे पास मौजूद है इसलिए हम महापुरुषों को स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों और बलिदानों को हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं और माल्यार्पण करते हैं और आने वाली पीढ़ी को इस बात से प्रेरणा लेने के लिए हम प्रोत्साहित करते हैं ताकि देश की आजादी अनंत काल तक अक्षुण बना रहे हैं। इस दौरान प्रोफेसर केपी त्रिपाठी ने कहा की सुभाष चंद्र बोस बहुत ही वीर बहुत ही साहसी और निर्भीक थे पढ़ने से ज्यादा उनका मन राष्ट्रभक्ति और देशभक्त में लगती थी। इसलिए आईसीएस की परीक्षा पास करने के बावजूद महात्मा गांधी के साथ स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हो गए और 1938 हरिपुरा सम्मेलन 1939 त्रिरुपूरा अधिवेशन में कांग्रेस का राष्ट्रपति चुना गया लेकिन महात्मा गांधी ने उनके विचारधारा को उग्र विचारधारा का कर मानता नहीं दिया इसलिए वह निराश होकर पेशावर होते हुए जर्मनी पहुंच गए। जर्मनी के सहयोग से जापान आए जापान के सहयोग से सिंगापुर आए वहां पर रासबिहारी बोस के साथ मिलकर आजाद हिंद फौज की स्थापना की जिसमें प्रवासी भारतीयों का उन्हें बहुत सहयोग मिला।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पर बनायी गयी मानव श्रृंखला

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पर मंगलवार को जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्रों को एक साथ मानव श्रृंखला में सम्मिलित कराते हुए सड़क सुरक्षा शपथ दिलाये जाने का कार्यक्रम जिलाधिकारी पवन अग्रवाल की अध्यक्षता में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय के बगल मैदान में आयोजित किया गया।

सड़क सुरक्षा के प्रति आम जनमानस में जागरूकता लाये जाने हेतु गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उक्त कार्यक्रम के प्रारम्भ में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के चित्र पर श्रृद्धासुमन अर्पित किया गया। मानव श्रृंखला का निर्माण हाईडिल (बेलहिया) तिराहे से जिला जेल, जिला अस्पताल होते हुए साड़ी तिराहे तक किया गया तथा कार्यालय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, मैदान में स्थापित मंच से जिलाधिकारी पवन अग्रवाल द्वारा मानव श्रृंखला में उपस्थित बच्चों को सड़क सुरक्षा का शपथ दिलाया गया। जिलाधिकारी ने बच्चों को सड़क सुरक्षा के संबंध में जागरूक करते हुए कहा कि निर्धारित आयु सीमा प्राप्त होने पर वैध ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने के उपरान्त ही वाहन का संचालन करें तथा वाहन संचालित करते समय सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें। कार्यक्रम में जिला विद्यालय निरीक्षक सोमारू प्रधान, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र पाण्डेय, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सुरेश मौर्य, विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य /अध्यापक आदि उपस्थित रहे।

पराक्रम दिवस के रूप में मनाई नेताजी की जयंती

सिद्धार्थनगर (अवधनामा संवाददाता)। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई।इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान ने मंगलवार को भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ जिला मुख्यालय सनई चौराहे पर नेता जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कन्हैया पासवान ने कहा शौर्य एवं पराक्रम के प्रतीक नेताजी ने आजादी के आंदोलन के दौरान भारत के युवाओं को विदेशी हुकूमत के खिलाफ एकजुट कर लड़ने की एक नई प्रेरणा दी थी।

भारतीय जनता युवा मोर्चा के तत्वावधान में नव मतदाता सम्मेलन कल

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। जिला मुख्यालय स्थित रेस्ट हाउस पर मंगलवार को भारतीय जनता युवा मोर्चा ने प्रेस वार्ता कर आगामी 25 जनवरी को आयोजित नव मतदाता सम्मेलन के संदर्भ में बनाई गई रणनीति की जानकारी दी।

प्रेसवार्ता को क्षेत्रीय महामंत्री युवा मोर्चा अखिल देव त्रिपाठी जिला अध्यक्ष भाजपा कन्हैया पासवान जिला अध्यक्ष युवा मोर्चा गौरव मिश्रा ने संयुक्त रूप से संबोधित किया। क्षेत्रीय महामंत्री अखिलदेव त्रिपाठी ने बताया कि यह कार्यक्रम आगामी लोकसभा चुनाव की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कार्यक्रम शोहरतगढ़ विधानसभा में दो चिन्हित स्थानों पर कपिया चौराहा खेल मैदान व गांधी आदर्श इंटर कॉलेज बढ़नी, कपिलवस्तु विधानसभा में बुद्ध विद्यापीठ महाविद्यालय नौगढ़ व कल्पनाथ सिंह महिला महाविद्यालय लोटन बाजार, विधानसभा बांसी में राजा रतन सेन इंटर कॉलेज बांसी व श्री राधा कृष्ण इंटर कॉलेज तलपुरवा, विधानसभा इटवा में श्री काशी नाथ महाविद्यालय करौंदा खालसा मिठौवा व राम प्रसाद शिक्षण संस्थान बिस्कोहर बाजार, विधानसभा डुमरियागंज में सरस्वती विद्या मंदिर बढ़ोलागढ़ व ललिता इंटर कॉलेज चौखड़ा बाजार में कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ है।

मौलाये कायनात हज़रत अली अस की विलादत पर होगी महफ़िल

जलालपुर। इस्लाम धर्म के आखरी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी हज़रत अली अलैहिस्सलाम की विलादत (जन्म दिवस) 13 रजब के अवसर पर मौलूद -ए-हरम कमेटी के बैनर तले 25 जनवरी को अपराह्न 2 बजे जाफराबाद स्थित रौजा हज़रत अब्बास से भारी भरकम जुलूस-ए-हैदरी का आगाज होगा। नगर का भ्रमण करता जुलूस सराय चौक होता हुआ डाक्टर सुरेश यादव के सामने से थाना मार्ग होता हुआ यादव चौराहा पहुंचेगा। कुछ समय पश्चात जुलूस रौजा हज़रत कासिम पहुंचकर कसीदा ख्वानी के बीच समाप्त होगा।13 रजब की पूर्व संध्या पर जाफराबाद स्थित बड़ा इमामबाड़ा में अंजुमन हुसैनिया के तत्वावधान में जश्न मौलूद-ए-काबा में शायरों का जमावड़ा होगा। वहीं शिया समुदाय अपने पहले इमाम के जन्मदिन के मौके पर अपने घरों इमामबाड़ा व मस्जिदों में सजावट कर महफ़िल व नज़र नियाज़ का आयोजन करेंगे।

मेडिकल कॉलेज सिद्धार्थनगर में पीएल एचआईवी क्लाइंटो को किया जागरुक

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। एआरटी सेन्टर के काउंसलर आशुतोष त्रिपाठी ने एचआईवी क्लाइण्ट को अधिनियम 2017 के बारे में विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराते हुये बताया कि आपकी सुरक्षा के लिए गोपनीयता बनाये रखना हम सबकी जिम्मेदारी है अगर इसका कोई उलंघन करता है तो उसे 3 महीने से लेकर 2 वर्ष की सजा हो सकती है या अधिकतम एक लाख का जुर्माना या दोनों सजा हो सकती है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा डी के चौधरी द्वारा बताया गया की आप सभी लोग समय से दवा का सेवन करें और अच्छे तरीके से खान पान करें।

माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ अशोक कुमार झा ने कहा कि हम सभी लोगों की जिम्मेदारी है कि अपनी सुरक्षा के साथ ही साथ अपने परिवार, समाज व देश में रह रहे सभी लोगों की सुरक्षा करे और नैतिक जिम्मेदारी के कारण एड्स को समाज में फैलने से रोके। सुरक्षित तरीकों के प्रयोग से हम इसके प्रसार को बहुत आसानी से रोक सकते है।

विहान प्रोग्राम के परियोजना निदेशक संजय पांडेय ने बताया कि आप लोगों को जब भी सरकारी योजनाओं से लाभान्वित होना हो तो आप सिद्धार्थनगर विहान से सम्पर्क कर सहयोग ले सकते है। जब तक आप लाभान्वित नही हो जाते तब तक विहान आपका सहयोग करेगी। ए आर टी सेन्टर पर किसी भी तरह की समस्या हो तो आप तुरन्त 1097 पर काल करके अवगत कराये जल्द ही आपकी समस्या का निराकरण किया जायेगा।

एक क्लाइंट ने बताया कि किस प्रकार वो कई सालों से एड्स रोग से ग्रसित होकर भी नियमित दवा व पौष्टिक आहार लेकर अपना जीवन सामान्य लोगों की तरह जी रहे है। क्लाइंटो को प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एआरटी सेन्टर के नोडल अधिकारी डॉ सीबी चौधरी ने की। एआरटी सेन्टर के चिकित्साधिकारी डॉ0 फ़रहत अहमद मसूद गौसी ने सभी लोगों का आभार व्यक्त करते हुये कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

संक्षिप्त समाचार

ट्रक की चपेट में आने से वृद्ध की मौत

पौली अवधनामा संवाददाता। धनघटा थाना क्षेत्र के रामजानकी मार्ग पौली स्थित सेन्ट्रल बैंक के सामने मंगलवार को एक 70 वर्षीय वृद्ध का ट्रक की चपेट मे आने से उस समय मौत हो गई । जब वह सेन्ट्रल बैंक से निकलकर सडक पार कर रहा था। सूचना पर पहुँची पुलिस गम्भीर रुप से घायल वृद्ध को सीएससी मलौली ले गई। जहाँ चिकित्साको ने मृतक घोषित कर दिय। जानकारी के अनुसार स्थानीय थाना क्षेत्र के चन्दौली माफी निवासी पूर्णमासी पुत्र अवतार मंगलवार को अपने घर से पौली स्थित सेन्ट्रलबैक रोसया बाजार मे बैंक खाते मे रुपए की जानकारी लेने पहुँचे। एकाउंट मे पैसे की जानकारी लेकर सडक पार करने लगे। की तेज गति से आ रहे ट्रक कि चपेट मे आकर गिर गये। और गम्भीर रूप से घायल हो गये। सूचना पर पहुँची पुलिस सीएचसी मलौली ले गई। जहाँ जाचोपरान्त डाक्टरो ने मृतक घोषित कर दिया।

जिसकी सूचना चौकी प्रभारी पौली अमित कुमार चतुर्वेदी को हुई तो अपने हमराही सिपाहियों के साथ तेज गति से भाग रहे ट्रक का पीछा करते हुए दौड़ा लिए जिसे आगे धनघटा से पहले पकड़ थाने ले जाकर ड्राइवर और गाड़ी पर दंडात्मक कार्रवाई कर दिया गया है।

जनपद में 15508 मतदाता बढ़े हैः जिलाधिकारी

बस्ती अवधनामा संवाददाता। विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूची का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के उपरान्त जनपद में 15508 मतदाता बढ़े है। उक्त जानकारी जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी अंद्रा वामसी ने दिया है। उन्होने बताया कि अभियान के पश्चात् आज मतदाता सूची का आलेख प्रकाशन सभी मतदेय स्थलों पर कर दिया गया है। उन्होने बताया कि आलेख प्रकाशन 27 अक्टूॅबर को जनपद में कुल 1874846 मतदाता थें, जो अभियान के पश्चात् 1890354 हो गये। पुनरीक्षण के दौरान कुल 53082 मतदाता के नाम जोड़े गये तथा 37243 मतदाता विलोपित हुए। इस प्रकार कुल 15508 मतदाता बढ़े। उन्होने बताया कि मतदाता सूची में वर्तमान में 18 से 19 आयु वर्ग के कुल 19529 मतदाता है। उन्होने बताया कि मतदाता सूची में आलेख प्रकाशन के समय जेण्डर रेसियों 870 था, जो अब बढकर 880 हो गया है। मतदाता सूची से 11394 मृतक, 16962 शिफ्टेड तथा 8827 रिपीटेड मतदाता के नाम विलोपित किए गये। 12476 मतदाताओं के नाम में विभिन्न संशोधन संबंधी कार्यवाही की गयी। वर्तमान सूची में कुल 13205 दिव्यांग मतदाता है। उन्होने बताया कि जनपद में कुल 2151 मतदेय स्थल है। अन्तिम प्रकाशित मतदाता सूची सभी मतदेय स्थलों पर एक सप्ताह तक जनसामान्य के लिए प्रदर्शित की जायेंगी। मतदाता बीएलओ से सम्पर्क करके अपना नाम की जानकारी कर सकते है। इसके अलावा मुख्य निर्वाचन अधिकारी तथा जिला निर्वाचन अधिकारी की वेबसाइट पर मतदाता सूची उपलब्ध है। टोल फ्री नम्बर 1950 पर फोन करके तथा वोटर हेल्पलाईन एप पर के माध्यम से भी अपने नाम की जानकारी कर सकते है।

कार्ययोजना बनाकर तत्काल कार्य करना सुनिश्चित करें

बस्ती अवधनामा संवाददाता। प्रोजेक्ट अलंकार योजनान्तर्गत माध्यमिक शिक्षा विभाग नियंत्रणाधीन संचालित राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के जर्जर भवनों का पुनर्निर्माण/जीर्णोद्धार/अवस्थापना का कार्य कराये जाने के लिए रू0 6 करोड़ साठ लाख इक्यासी हजार प्राप्त हो गया है। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में उक्त जानकारी देते हुए मुख्य विकास अधिकारी जयदेव सीएस ने कहा कि जनपद के ऐसे सभी जर्जर विद्यालयों की सूची तैयार कर व कार्ययोजना बनाकर तत्काल कार्य करना सुनिश्चित करें। उन्होने जिला विद्यालय निरीक्षक एवं बीएसए को निर्देशित किया है खराब स्थिति वाले विद्यालयों की सूची तैयार कर उपलब्ध कराये।

प्रेस वार्ता आयोजित

अवधनामा संवाददाता

अंबेडकरनगर। जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में पुलिस अधीक्षक डॉ. कौस्तुभ तथा मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में निर्वाचक नामावली संक्षिप्त पुनरीक्षण- 2024 के अंतिम प्रकाशन हेतु प्रेस वार्ता आयोजित किया गया। प्रेस वार्ता के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि विगत 06 वर्षों में प्रथमबार 70774 मतदाताओं का नाम जोड़ा और 35810 मतदाताओं का नाम अपमार्जित तथा 17549 मतदाताओं का नाम सशोधित किया गया कुल मिलाकर इस अभियान में 124133 फार्म प्राप्त किये गये।संक्षिप्त पुनरीक्षण के सुपरवीजन हेतु 155 सेक्टर आफिसर एवं 189 सुपरवाइजर के साथ-साथ 25 ए0ई0आर0ओ0 की तैनाती की गयी थी।प्रतिदिन फार्म फीडिंग / अपलोडिंग की समीक्षा बैठक के माध्यम से और गूगल मीट के माध्यम से की जाती थी जिसके कारण दिनाक 07.01.2024 तक प्राप्त प्रत्येक फार्म की फीडिंग कर अपलोडिंग का कार्य किया गया और कोई भी फार्म फीडिंग / अपलोडिंग अवशेष नहीं है। सेक्टर आफिसर की बैठक तीनबार 50-50 के बंच में 9 दिनों तक की गयी यह उसी का परिणाम है जिसमें 26444 युवा मतदाता का नाम जोड़ा गया जो प्रथमबार अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। साथ ही साथ यह भी अवगत कराना है

सूचना

मैं नुरुससबा जाफरी पत्नी वामिक मोबीन निवासिनी 65 निकट मस्जिद कजियारा जिला सीतापुर 261001 की हूं। मैं घोषणा करती हूं कि मेरा सही नाम नुरुससबा जाफरी है जो कि मेरे आधार कार्ड में भी अंकित है। मेरे पासपोर्ट संख्या G3777267 जो कि 07/07/2007 में लखनऊ से जारी हुआ है, जिसमें मेरा नाम नुरुससबा अंकित है जिसमें जाफरी किसी कारणवश छूट गया है, जो कि पासपोर्ट में भी नुरुससबा जाफरी NOORUSSABA JAFRI अंकित किया जाये।

नुरुससबा जाफरी पत्नी वामिक मोबीन निवासिनी 65 निकट मस्जिद कजियारा जिला सीतापुर 261001

बच्चों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करता है खेलः जयेंन्द्र कुमार

अवधनामा संवाददाता

बर्डपुर सिद्धार्थनगर। शारीरिक मानसिक विकास के साथ साथ खेल के द्वारा बच्चों में समानता, आपसी भाईचारा और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करता है। सांसद खेल महाकुंभ जैसे इस आयोजन से गांव के बच्चों के अन्दर मौजूद प्रतिभाओं को प्रदर्शन करने का उचित अवसर मिलता है।

उपरोक्त आशय का विचार ब्लॉक संसाधन केन्द्र बर्डपुर के क्रीड़ागन में आयोजित तीन दिवसीय सांसद खेल महाकुंभ 2024 के उद्घाटन के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार ने उपस्थित अध्यापकों क्षेत्रीय नागरिकों तथा प्रतिभागी छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि असफलताएं ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती हैं, इसलिए सभी बच्चों को असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए बल्कि उनसे सीख लेकर सफल होने के लिए अनवरत प्रयास करते रहना चाहिए। उदघाटन सत्र के अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन करने के बाद ध्वजारोहण कर खेल का विधिवत उद्घाटन किया, तथा प्रतिभागी खिलाड़ियों के मार्च पास्ट की सलामी ली। कंपोजिट विद्यालय काशीपुर की छात्राओं ने सरस्वती वंदना तथा स्वागत गीत के माध्यम से उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। पूर्व माध्यमिक विद्यालय बूडा के बच्चों द्वारा योग का विशेष प्रदर्शन सराहनीय रहा।

तीन दिवसीय सांसद खेल महाकुंभ में खो खो कबड्डी, दौड़, ऊंची कूद, लम्बी कूद, वालीबाल, क्रिकेट, आदि विभिन्न खेलों में बेसिक, माध्यमिक तथा क्षेत्रीय दो दर्जन से अधिक टीमों ने पंजीकरण कराया है। समापन 25 जनवरी को होगा। कार्यक्रम का सफल संचालन पूर्व माध्यमिक शिक्षक संघ के जिला महामंत्री कलीमुल्लाह ने किया।

सांसद खेल महाकुम्भ का किया गया आयोजन

अवधनामा संवाददाता

शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत के शिवपति इंटर कॉलेज शोहरतगढ़ में तीन दिवसीय सांसद खेल महाकुंभ का शुभारंभ मुख्य अतिथि विधानसभा क्षेत्र विधायक विनय वर्मा ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलन माल्यार्पण व ध्वजारोहण कर किया।

विधायक ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में असीम प्रतिभाएं छिपी हुई हैं उन्हें आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। सांसद खेल महाकुंभ बालक बालिकाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका दे रहा है। कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ खेल व व्यायाम भी जरूरी है, ताकि शरीर स्वस्थ रहे। खेल के पहले दिन दौड़ प्रतियोगिताएं व ऊंची कूद संपन्न हुई।

जूनियर वर्ग 100 मी बालिका वर्ग दौड़ में सिमरन प्रथम, सुशीला द्वितीय और अंशु तृतीय स्थान पर रही जबकि बालक वर्ग दौड़ में बृजेश प्रथम, आशीष द्वितीय और सत्यम तृतीय स्थान पर रहे। 200 मीटर बालिका वर्ग दौड़ में सिमरन प्रथम, प्रिया द्वितीय और शशि कला को तृतीय स्थान मिला। जबकि बालक वर्ग में विजय को प्रथम, अमित को द्वितीय और सुरजीत को तृतीय स्थान हासिल हुआ। इसी तरह सीनियर वर्ग बालक 100 मीटर दौड़ में मोहम्मद रफीक प्रथम, रवि द्वितीय और सत्यम तृतीय स्थान पर रहे। जूनियर बालिका वर्ग 400 मीटर दौड़ में शशि कला प्रथम, सिमरन द्वितीय और सुशीला को तृतीय स्थान हासिल हुआ। सीनियर बालक वर्ग 400 मीटर दौड़ में नीरज को प्रथम, विकास को द्वितीय और अमित को तृतीय स्थान हासिल हुआ।

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय में पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय में पीसीसी -2024 (नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती-पराक्रम दिवस) के अन्तर्गत पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन मंगलवार को प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक आयोजित की गई।

विद्यालय के प्राचार्य नीरज कुमार शुक्ल ने बताया कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती को पूरा देश पराक्रम दिवस के रूप में मना रहा है, जिसमे केन्द्रीय विद्यालय सिद्धार्थनगर को नोडल केंद्र बनाया गया। इसमें जिले के विभिन्न विद्यालयों- जवाहर नवोदय विद्यालय, बांसी, राजकीय इंटर कालेज नौगढ़, जय किसान इंटर कालेज सनई, सरला इंटरनेशनल एकेडमी, भीमापर, सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल थरौली, खैर पब्लिक स्कूल अनूप नगर, शैम्फोर्ड स्कूल पकड़ी, सरस्वती विद्या मंदिर नौगढ़ तथा पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय सिद्धार्थनगर के 100 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। प्राचार्य ने बताया कि पूरे देश में 660 केन्द्रों पर यह प्रतियोगिता परीक्षा योद्धा, विकसित भारत, चंद्रयान तथा खेल में भारत की उपलब्धियां विषय पर आयोजित की गई।

सांसद खेल महाकुंभ के दूसरे चरण का हुआ शुभारंभ

अवधनामा संवाददाता

सिद्धार्थनगर। सांसद खेल महाकुंभ का दूसरा चरण विकासखंड स्तरीय खेल से मंगलवार को प्रारंभ हुआ। सांसद जगदंबिका पाल के नेतृत्व में सांसद खेल महाकुंभ आयोजन समिति के सचिव अरुण कुमार प्रजापति के देखरेख में माध्यमिक शिक्षा विभाग के खेल प्रशिक्षक, बेसिक शिक्षा विभाग के ब्लॉक व्यायाम शिक्षक, खेल अनुदेशक, युवा कल्याण विभाग के क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी के साथ-साथ सांसद द्वारा नामित सभी ब्लॉक संयोजकों एवं उनकी पूरी टीम के सहयोग से संपन्न किया जा रहा है।

इसी क्रम में विकासखंड नौगढ़ के अंतर्गत जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम में विकासखंड स्तरीय खेल का उद्घाटन भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान, सांसद जी की धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता पाल पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका परिषद बस्ती, उप जिलाधिकारी नौगढ़ सदर डॉक्टर ललित कुमार मिश्रा, जिला विद्यालय निरीक्षक सोमारु प्रधान द्वारा जिला क्रीड़ा अधिकारी आशुतोष अग्निहोत्री, आयोजन समिति के सचिव अरुण कुमार प्रजापति और सांसद प्रतिनिधि जहीर सिद्दीकी, व्यवस्थापक त्रियुगी चौहान की उपस्थिति में शुभारम्भ किया गया। अतिथियों ने विकासखंड नौगढ़ में खेल का शुभारम्भ झंडारोहण करके एवं स्वर्गीय श्री मेजर ध्यानचंद जी के चित्र परपुष्पार्जन करके किया। उसके बाद बालक वर्ग एवं बालिका वर्ग का 100 मीटर एवं 200 मीटर दौड़ प्रारंभ किया जिसको अतिथियों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। 100 मी बालिका वर्ग में स्नेहा यादव प्रथम, संजू गुप्ता द्वितीय एवं संध्या साहनी तृतीय स्थान प्राप्त की। 200 मीटर बालक वर्ग में हिमांशु चौधरी प्रथम, कोमल यादव द्वितीय एवं शमशेर अली तृतीय स्थान प्राप्त कियें। 200 मी बालिका वर्ग में तृप्ति मिश्रा प्रथम, मोनिका विश्वकर्मा द्वितीय एवं संजू गुप्ता तृतीय स्थान प्राप्त की। 400 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में हिमांशु प्रथम, रोहित द्वितीय एवं करण तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400 मी बालिका वर्ग में रीमा प्रथम, करिश्मा द्वितीय एवं संजू तृतीय स्थान प्राप्त की। इसके अलावा लंबी कूद, ऊंची कूद का भी खेल सम्पन्न हुआ। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान ने कहा कि सांसद खेल महाकुंभ ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं का निखारने का काम किया जाता है तथा यही प्रतिभाएं जनपद स्तर पर प्रदेश स्तर पर पहुंच कर जिले का नाम रोशन करेंगे। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए उप जिलाधिकारी डॉक्टर ललित कुमार मिश्रा ने कहा कि सरकार खिलाड़ियों और खेल के प्रति इस समय बहुत ही सजग हैं। उत्तर प्रदेश सरकार विभिन्न विभागों में खेलकोटे में खिलाड़ियों की भर्ती भी कर रही है जो इन खिलाड़ियों को खेल के प्रति उत्साहित करने का कार्य कर रही है। जिला विद्यालय निरीक्षक समारू प्रधान ने कहा कि जिस प्रकार से सांसद खेल महाकुंभ के पहले चरण में भाषण निबंध चित्रकला प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभा किया मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस विकासखंड स्तरीय खेल में भी खिलाड़ी अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभा करेंगे। अंत में सांसद खेल महाकुंभ आयोजन समिति के सचिव अरुण कुमार प्रजापति ने सभी आगंतुक अतिथियों का धन्यवाद देते हुए खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आप लोगों का अमूल्य समय निकालकर यहां पर पहुंचना है इन खिलाड़ियों के लिए ऊर्जा का स्रोत बनता है।

सांसद खेल महाकुंभ ऐसा प्लेटफॉर्म है, जहां ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को निखारने का किया जाता है कामः कन्हैया पासवान

विकासखंड नौगढ़ के ब्लॉक संयोजक ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि राजेश मिश्रा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अंग वस्त्र एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। निर्णायक टीम में माध्यमिक शिक्षा विभाग से खेल प्रशिक्षक रत्नेश सिंह, बेसिक शिक्षा विभाग से जिला व्यायाम शिक्षक उपेंद्र उपाध्याय, ब्लॉक व्यायाम शिक्षक सत्येंद्र गुप्ता, जीशान खलील, माहेश्वरी पाठक अनुदेशक अरविंद गुप्ता युवा कल्याण विभाग देवेंद्र पांडे उपस्थित रहें।

अयोध्या में त्रेता युग

अयोध्या भारत की ही नहीं, सनातन के आस्थावानों की आध्यात्मिक राजधानी है। जहां सरयू माता है, देवत्व का वास है, वहां से श्रीराम कहां जा सकते हैं? भौतिक वनवास उनके मानव-काल का एक दौर था। सांप्रदायिकता और सियासत ने अयोध्या को दिखावटी तौर पर अभिशप्त किया था। विध्वंस था, अतिक्रमण था, विदेशी लुटेरों ने कब्जे किए थे और मंदिर को मस्जिद बनाने का दुस्साहस किया था, लेकिन सरयू मां जीवित थीं, तो श्रीराम कण-कण में क्यों नहीं बसे थे? अदृश्य और ओझल होना भी देवत्व था, प्रभु राम की लीला थी, एक और अग्नि-परीक्षा थी, लिहाजा हमारे आराध्य तो अयोध्या में ही थे। यह कथन सांस्कृतिक तौर पर उचित नहीं है कि हमारे राम अयोध्या लौटे हैं। वनवास से अयोध्या लौटे हैं। अयोध्या और आराध्य एकत्व के भाव में निहित हैं। बेशक भगवान विष्णु ने मानव-रूप में जन्म अयोध्या के राज-परिवार इक्ष्वाकु वंश में लिया था, लेकिन उनका अवतरण वैश्विक रहा है। करीब 55 देशों में प्रभु राम की मान्यता है। आज भी अमरीका के करीब 1100 मंदिरों में 'रामोत्सव' मनाया जा रहा है। उसके भौतिकतावादी शहर भी 'राममय' हैं और आपस में 'जय सियाराम' के उद्घोष के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। ब्रिटेन के 500 मंदिरों में 'श्रीराम विजयोत्सव' मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भी मंदिर जाकर 'रामायण का पाठ' सुन सकते हैं। नीदरलैंड्स सरीखे देश में 'राम मंदिर के चित्र' वाले डाक टिकट जारी किए गए हैं। यूरोप के कई देश भी 'राममय' हैं। इसका स्पष्ट निष्कर्ष है कि इतने व्यापक हैं श्रीराम! भारत की प्रत्येक दिशा में राम आराध्य हैं और 350 से अधिक 'रामायण' सृजित की गई हैं। राम के लिए जितना महत्त्व अयोध्या का है, उतना ही 'रामेश्वरम' का है।

बार-बार आंखें भीग जाती हैं। मन सुबकने लगता है। चेहरा दीवार की ओर करना पड़ता है, ताकि आंसू सार्वजनिक न हो जाएं। आज तीनों लोक आनंदित होंगे, चराचर में उत्साह और उल्लास होगा, असीम आसमान तक हरेक मंजर आह्लादित होगा। सनातन के 'प्राण' श्रीराम का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह हुआ है, तो भावुक होना स्वाभाविक है। भीतर आत्मा से सवाल उभरते हैं कि भारत के 'प्राण' की प्राण-प्रतिष्ठा की नौबत ही क्यों आई? इस सवाल के साथ पुरानी स्मृतियां भी ताजा हो गई हैं, जब एक-एक 'रामशिला' के साथ सवा रुपया भी देने का संकल्प निभाया जा रहा था। विहिप के मुताबिक, ऐसा करीब 68 करोड़ भारतीयों ने किया था। हम सौभाग्यशाली हैं कि शिला और पनपते आंदोलन के भी साक्षी बने और अब कमोबेश टीवी चैनल के जरिए प्राण-प्रतिष्ठा का अलौकिक-सा दौर भी देख रहे हैं। सवाल ये भी मौजू लगते हैं कि प्रधानमंत्री के तौर पर वीपी सिंह ने 'राम मंदिर' के लिए जगह देने का वायदा किया था और तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव ने कथित बाबरी मस्जिद के पुनर्निर्माण का ऐलान किया था। यह दीगर है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक हालात के दबावों के कारण कोई भी प्रधानमंत्री मस्जिद को दोबारा खड़ा नहीं कर सका। हमने राम मंदिर आंदोलन के स्वतःस्फूर्त उभार और उफान को भी देखा है। उस दौर में कितने किशोर, युवा और उम्रदराज भारतीय मारे गए, उसका रिकॉर्ड भारत और उप्र सरकारों के किसी भी मंत्रालय में दर्ज नहीं किया गया। क्या इसे राजनीतिक निर्णय नहीं मानेंगे? राम मंदिर के जरिए सांस्कृतिक पुनरोत्थान का पूरा आंदोलन भाजपा, विहिप और आरएसएस ने चलाया था। उन्हें 'संघ परिवार' भी कह सकते हैं। दिसंबर, 1992 में विवादित ढांचा ध्वस्त किए जाने के बाद तत्कालीन राव सरकार ने भाजपा की उप्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान और हिमाचल की राज्य सरकारों को बर्खास्त कर दिया था। वह निर्णय भी विशुद्ध रूप से राजनीतिक था। 'कारसेवक' उप्र तक ही सीमित थे, हालांकि देश के विभिन्न इलाकों से 'रामसेवक' और 'रामभक्त' अयोध्या की तरफ बढ़ रहे थे। सरकारें बर्खास्त करने के बावजूद जन-सैलाब नहीं थमा था। उन्हें मुलायम सिंह यादव की सरकार ने गोलियों से भुनवा दिया। 'राम भक्तों' की लाशें भी उनके परिजनों को नहीं सौंपी गई। न जाने उनके अंतिम संस्कार कैसे किए गए? बहरहाल अब श्रीराम के भव्य, नव्य और महलनुमा मंदिर में जो 'प्राण-प्रतिष्ठा' की गई है, वह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक है। वह भारतीय है, क्योंकि हम प्रभु राम को ही विधि, विधान और अध्यात्मक का संविधान मानते रहे हैं। अलबत्ता राम मंदिर का प्रदाय राजनीतिक भी जरूर होगा। वह राम मंदिर के मौजूदा आयोजनों और 'राममय' देश के शुरुआती मूड से स्पष्ट होता है।

बेशक संघ परिवार की आस्था और अस्मिता श्रीराम में निहित रही है, लेकिन भाजपा प्रत्येक चुनाव घोषणा-पत्र में राम मंदिर निर्माण का वायदा देश के साथ साझा करती रही है। अब वह वायदा पूरा हो रहा है। यदि अब उसे इसका श्रेय मिलता है, तो उसमें छद्म और छलावा नहीं आंक सकते। प्राण-प्रतिष्ठा से 1-2 दिन पहले ही जनता का मूड भांपने के लिए सर्वे किया गया। हम ऐसे सर्वेक्षणों की पुष्टि नहीं करते, लेकिन लोगों की प्रतिक्रिया के अंश सामने आने लगते हैं। करीब 43 फीसदी लोगों ने राम की प्राण-प्रतिष्ठा को 'राष्ट्रोत्सव' माना है, जबकि 23 फीसदी ने इसे भाजपा-संघ का कार्यक्रम करार दिया है। देखा जाए, तो ये 66 फीसदी लोग एक ही दिशा में सोच रहे हैं। अधूरे मंदिर से यह समारोह करने से कोई फर्क नहीं पड़ता, यह सोचने और मानने वाले करीब 56 फीसदी लोग थे। इसी संदर्भ में 54 फीसदी की सोच यह है कि इस समारोह में शामिल न होकर विपक्ष ने राष्ट्रीय स्तर पर 'गलती' की है, क्योंकि प्रभु राम राष्ट्रीय नायक ही नहीं, बल्कि आराध्य हैं। आराध्य नायक से बहुत ऊपर होता है। यदि तय समय पर आम चुनाव होते हैं, राम मंदिर और प्राण-प्रतिष्ठा सबसे अहम चुनावी मुद्दा होंगे।

गुजरे समय का महत्वपूर्ण क्षण लौटता नहीं

संजीव स्तंभकार

गुजरे हुए समय और बीते कल के मूल्य को बेंजामिन फ्रैंकलीन ने पहचानते हुए कहा था बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। यह वाक्य अत्यंत यथार्थ भी है, खोया हुआ धन अर्जित कर सकते हैं पर खोई हुई ख्याति, इज्जत को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।समय को एक बार खो देने के बाद वापस प्राप्त करना बहुत मुश्किल ही नहीं असंभव है। इसीलिए यह कहावत कही गई है काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में परलय होएगी बहुरि करेगा कब प्रसिद्ध लेखक मेसन ने समय को महिमामंडित करते हुए कहा है सोने के कण की तरह समय का हर क्षण मूल्यवान है। प्लेटफार्म पर खड़ी रेलगाड़ी भी अपने यात्रियों का इंतजार नहीं करती और देर से पहुंचने वाले यात्री हाथ मलते रह जाते हैं, उनके पास अफसोस करने के अलावा कुछ नहीं रह जाता। समय और समुद्र की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती, समय के महत्व को दर्शाते प्रकृति के कई उदाहरण भी हैं, बरसात के समय वर्षा देर से आने से कृषि सूख जाती है. इसलिए कहा गया है का वर्षा जब कृषि सुखावे, इसीलिए इतिहास में महान लोगों ने समय के साथ निज के अनुशासन और श्रम के महत्व को अपने जीवन में अपनाकर अपने आप को बड़ा बनाकर इतिहास में अपना नाम स्थापित किया है। समाज में जितने भी प्रसिद्ध, नामचीन और महान बने हैं, या उदाहरण देने लायक बने हैं, उन सब ने समय को समय देकर अपने आप को समाज में अग्रणी स्थान पर स्थापित किया है,और हजारों,लाखों लोग उनका सम्मान कर उनका अनुसरण भी करने लगते हैं। समय का महत्व और निज पर शासन फिर अनुशासन एक दूसरे से जुड़े तथा पर्यायवाची ही है। जिसमें भी समय के महत्व को समझते हुए उसका अनुशासन के साथ उपयोग किया है,वे अपनी जिंदगी में आर्थिक सामाजिक एवं वैश्विक रूप से अपने आप को सफल बना चुके हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक तकदीस फ़ातिमा रिज़वी ने ग्रुप-5 प्रकाशन, 55-बी, वज़ीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित कराकर प्रथम तल, मस्जिद नूर महल, साकेत पल्ली, नरही, लखनऊ से प्रकाशित किया।

किसी भी लेख में कोई विवाद के लिए 'अवधनामा' जिम्मेदार नहीं होगा, इसकी जिम्मेदारी लेखक की है। किसी भी समाचार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही होगा।

पोलिटिकल एडीटर : एम.एम. मोहसिन

स्थानीय संपादक

मोहम्मद आलम रिज़वी

RNI No UPHIN/2010/31173

टेली फैक्स नं. : 2288091, 4065716

avadhnamahindi@gmail.com,

राम जन्म भूमि की मुक्ति के लिए सैकड़ों वर्षों तक चला संघर्ष जब अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा तो फिर विधर्मी दासता के प्रतीक ढांचे को धूल धूसरित होते देर न लगी। वह इस बात का प्रतीक था कि रावण की अभेद्य लंका को भी राम भक्ति की साधारण कही जाने वाली शक्ति छिन्न-भिन्न करने में सक्षम है।6 दिसंबर 1992 की वह घटना इतिहास के नए अध्याय की शुरूआत थी किंतु उसके पूर्व जिन पूज्य साधु-संतों और ज्ञात-अज्ञात कारसेवकों ने राम काज के लिए अपना बलिदान दिया उनकी पवित्र आत्माएं इस संघर्ष को प्रेरणा और प्रोत्साहन देती रहीं। राम मंदिर के लिए चली लंबी संघर्ष यात्रा का यह पल निश्चित रूप से अविस्मरणीय है।

भारतीयों के मन में नए विश्वास की प्राण प्रतिष्ठा

राजेश माहेश्वरी

अयोध्या में राम मंदिर में राम लला की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ ही लगभग 500 साल लंबी प्रतीक्षा खत्म हो गई। देश ही नहीं दुनिया के तमाम देशों में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा का आनंद हवाओं में तैरता और गूंजता सुनाई दिया। राम मंदिर को लेकर बहुत लंबा आंदोलन चला है और संघर्ष किया गया है। उसमें आरएसएस, विहिप और भाजपा के नेता और कार्यकर्ता ही शामिल थे। असंख्य लोगों ने बलिदान भी दिए। संविधान पीठ के निर्णय से राम मंदिर का निर्माण संभव हो पाया। प्राण-प्रतिष्ठा के दिन अयोध्या का वैभव शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। दिन हो या रात, ऐसा लग ही नहीं रहा था कि अयोध्या सोएगी। हर ओर उत्साह, उमंग व भक्ति की लालिमा छाई हुई थी। लोग एक-दूसरे को मिठाई बांट रहे थे। जहां दृष्टि जाए, वहां सिर्फ श्रीराम की छवि या उनका नाम ही नजर आ रहा था। देश ही नहीं दुनियाभर में इस कार्यक्रम की धूम रही। करीब 55 देशों में प्रभु राम की मान्यता है। आज भी अमरीका के करीब 1100 मंदिरों में 'रामोत्सव' मनाया जा रहा है। उसके भौतिकतावादी शहर भी 'राममय' हैं और आपस में 'जय सियाराम' के उद्घोश के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। ब्रिटेन के 500 मंदिरों में 'श्रीराम विजयोत्सव' मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भी मंदिर जाकर 'रामायण का पाठ' सुन सकते हैं। नीदरलैंड्स सरीखे देश में 'राम मंदिर के चित्र' वाले डाक टिकट जारी किए गए हैं। यूरोप के कई देश भी 'राममय' हैं। इसका स्पष्ट निष्कर्ष है कि इतने व्यापक हैं श्रीराम! भारत की प्रत्येक दिशा में राम आराध्य हैं और 350 से अधिक 'रामायण' सृजित की गई हैं। राम के लिए जितना महत्त्व अयोध्या का है, उतना ही 'रामेश्वरम' का है। यह इस बात का प्रमाण है कि श्री राम की स्वीकार्यता पूरे विश्व में है।

राम मंदिर और राम लला की प्राण प्रतिष्ठा तक इस मामले में राजनीति कम नहीं हुई। प्राण-प्रतिष्ठा का कांग्रेस समेत कई दलों ने बहिष्कार किया। कांग्रेस का तर्क था कि प्राण-प्रतिष्ठा आरएसएस और बीजेपी का कार्यक्रम है। राम जन्म भूमि की मुक्ति के लिए सैकड़ों वर्षों तक चला संघर्ष जब अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा तो फिर विधर्मी दासता के प्रतीक ढांचे को धूल धूसरित होते देर न लगी। वह इस बात का प्रतीक था कि रावण की अभेद्य लंका को भी राम भक्ति की साधारण कही जाने वाली शक्ति छिन्न–भिन्न करने में सक्षम है। 6 दिसंबर 1992 की वह घटना इतिहास के नए अध्याय की शुरुआत थी किंतु उसके पूर्व जिन पूज्य साधु-संतों और ज्ञात-अज्ञात कारसेवकों ने राम काज के लिए अपना बलिदान दिया उनकी पवित्र आत्माएं इस संघर्ष को प्रेरणा और प्रोत्साहन देती रहीं। राम मंदिर के लिए चली लंबी संघर्ष यात्रा का यह पल निश्चित रूप से अविस्मरणीय है। अयोध्या को उसकी प्राचीन भव्यता मिलने के साथ ही आज देश को अपनी दिव्यता का जो अनुभव हुआ वह सही मायने में सनातन परंपरा

से जुड़े करोड़ों भारतीयों के मन में नए विश्वास की प्राण प्रतिष्ठा है।

प्राण-प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक आयोजन को रोकने और धर्म विरोधी साबित करने के लिए जो कुछ भी किया गया वह जितना हास्यास्पद है, उतना ही दुखद भी है। लेकिन ये परम संतोष का विषय है कि देश के जनमानस ने आधुनिक मंथराओं को पूरी तरह तिरस्कृत कर दिया है। यहां तक कि कतिपय धर्माचार्यों की आपत्तियों का संज्ञान भी नहीं लिया जा रहा। यह बात भी बेहद उत्साहवर्धक है कि देश भर में फैले लाखों सनातनी धर्मगुरु, पंडित, पुरोहित और कथावाचक पूरे प्राण-प्रण से 22 जनवरी के आयोजन को भव्य और अविस्मरणीय बनाने में जुटे थे। देश का प्रत्येक कोना इन दिनों राम मय हो गया है। इतना बड़ा चमत्कार दैवीय कृपा से ही हो सकता है। ऐसे में जो लोग प्राण-प्रतिष्ठा के आयोजन को विफल करना चाह रहे थे वे भारतीय जनमानस को पढ़ने में बुरी तरह विफल हैं। उनके इसी आचरण की वजह से वे जनता की निगाह से उतरते चले गए और बची खुची कसर आगामी लोकसभा चुनाव में पूरी हो जाएगी।

कांग्रेस और गैर कांग्रेसी विपक्षी दल भी यदि कमजोर होते जा रहे हैं तो उसकी वजह मुख्य धारा से अलग बहने की उनकी नीति है। आरएसएस, वीएचपी और भाजपा बीते कई दशक से अपना जनाधार बढ़ाने में जुटे हुए हैं। राम मंदिर पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का इंतजार किए बिना ही अयोध्या में कारसेवकपुरम नामक स्थान पर पत्थरों की गढ़ाई का काम निरंतर चलता रहा। उसी का परिणाम है कि फैसला आने के बाद इतनी जल्दी मंदिर निर्माण संभव हो सका। दूसरी तरफ सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आने के बाद भी भाजपा विरोधी मंदिर निर्माण का श्रेय उससे छीनने में जुटे रहकर अपनी समूची शक्ति व्यर्थ गंवाते रहे। यही कारण है कि आज जब पूरे देश में राम नाम का उद्घोष हो रहा है और पूरी दुनिया में फैले करोड़ों सनातनी 22 जनवरी को लेकर उत्साहित मना रहे थे तब समूचा विपक्ष कुंठाग्रस्त होकर बैठा हुआ था। इसे लेकर उसके भीतर भी विरोध फूटने लगा है जिसका देर-सवेर खुलकर बाहर आना तय है। अयोध्या में प्रभु राम का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह विशुद्ध रूप से 'धार्मिक' है। राम मंदिर से करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है, लेकिन इस समारोह से भाजपा को 'राजनीतिक लाभ' होना निश्चित है। धार्मिक और राजनीतिक के अंतर को समझना अनिवार्य है। एक सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आयोजन को 'राजनीतिक' करार देना अपरिपक्वता है। महज कोसते रहने से कांग्रेस को कुछ भी हासिल नहीं होगा।

राम का व्यक्तित्व, लोकतंत्र, लोकमंगल और आदर्श राज्य-व्यवस्था की अभिव्यक्ति है। उनका कृतित्व लोकतांत्रिक मूल्यों की आधारशिला है। उन्होंने 'रामराज्य' नाम की जिस वैचारिकी का सूत्रपात किया। दुनिया के लगभग सभी लोकतंत्र का अंतिम लक्ष्य वही है। लोकतंत्र के सारे सूत्र इसी रामराज्य से निकलते हैं। आखिर ये राम हैं कौन? जिनका नाम लेकर एक वृद्ध गांधी अंग्रेजी साम्राज्य से लड़ गया। जिसके नाम पर इस देश में आदर्श शासन की कल्पना की गई। उसी 'रामराज्य' के सपने को देख देश आजाद हुआ। गांधी ने अपने सपने को 'सुराज' कहा। विनोबा इसे 'प्रेम योग' और 'साम्य योग' के तौर पर देखते थे। महात्मा गांधी ने 'राम राज्य', 'हिंद स्वराज' को व्यापक स्तर पर परिभाषित किया था, लेकिन वह भारत को 'हिंदू राष्ट्र' बनाने के खिलाफ थे। उनके दर्शन, उनकी आस्था और उनके राष्ट्रवाद को भारत ने गहराई से समझा और स्वीकार किया, नतीजतन वह 'महात्मा' बन पाए। गांधी जी ने भी रामराज्य का सपना देखा था। ऐसा रामराज्य जिसमें पारदर्शिता के साथ वास्तविक सुशासन हो। एक आदर्श सुशासन की व्यवस्था ही उनके लिये सच्चा लोकतंत्र था। जिसमें राजा और रंक के समान अधिकार हों। उनकी दृष्टि में रामराज्य ममता समता का शासन था। सत्य और धर्म उसका आधार था। यद्यपि उनकी दृष्टि में राम-रहीम में कोई भेद नहीं था। बहरहाल, अब जब सदियों के विवाद का पटाक्षेप करके अयोध्या में राममंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्य विधिवत संपन्न हो गया है तो देश का ध्यान हमारे सामने मौजूद अन्य विकट चुनौतियों पर हो। राम शुभ हैं, राम मंगल हैं, राम प्रेरणा हैं, विश्वास हैं।

राष्ट्र को राजनीति नहीं रामनीति की जरूरत

आशीष वशिष्ठ

श्रीराम केवल एक महापुरुष, केवल एक दैवी शक्ति संपन्न राजा या भगवान नहीं थे। श्रीराम का जीवन और चरित्र भारत राष्ट्र की जीवन चरित्र है। महाकवि कालिदास ने उनके व्यक्तित्व की तुलना हिमालय और सागर के साथ एक साथ करके यह बता दिया है कि राम व्यक्ति नहीं राष्ट्र हैं। भारत और उसकी सनातन परम्परा के लिए राम ही राष्ट्र हैं और राष्ट्र ही राम है। भारत के कण-कण में राम समाविष्ट हैं। भारत के चरित्र ही नहीं भारत के अस्तित्व के आधार राम हैं।

श्रीराम का अर्थ है मर्यादा। राम राज्य की स्थापना का अर्थ है मर्यादा की स्थापना। बहुत सोच-समझ कर बनाए गए हमारे संविधान में विविध प्रावधान होने पर भी, पारदेशीय संस्कृति और समाज के प्रभाव के कारण विविध प्रकार की विसंगतियां हमारे समाज में आज भी विद्यमान हैं। कर्त्तव्य विस्मृत करके केवल अधिकार की लड़ाई ने समाज में अविश्वास और घृणा का वातावरण पैदा कर दिया है। श्रीराम की मर्यादा का अर्थ है कर्त्तव्य का सर्वोपरि होना। कर्त्तव्य सर्वोपरि हो तो अधिकार, उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाता है।

रामराज्य शासन की आदर्श संकल्पना है। एक ऐसी राज व्यवस्था जहां न कोई दुखी हो और न ही अभावों से ग्रस्त हो। जहां जन-जन भय मुक्त हो और चर्तुदिक शांति हो। जहां का शासन सभी के लिए मंगलकारी हो। राम इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए, क्योंकि उन्होंने हर हाल में

> राम के राज्य में राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए थी। इसमें अधिनायकवाद की छाया मात्र भी नहीं थी। राम का राज्य मानव कल्याण के आदर्शों से युक्त एक ऐसा राज्य था जिसमें निस्वार्थ प्रजा की सेवा निष्पक्ष आदर्श न्याय व्यवस्था सुखी तथा समृद्ध शादी समाज व्यवस्था पाई जाती थी। राम इस सीमा तक लोकतांत्रिक हैं कि एक अवसर पर कहते हैं-यदि अनुमति हो तो कुछ कहूं और यदि मेरे कहे में कुछ अनुचित देखें तो मुझे टोक दें, मैं सुधार कर लूंगा। वह अपने राज्य में रहने वाले किसी भी व्यक्ति की राय के आधार पर फैसला लेने में हिचकते नहीं।

मर्यादा की रक्षा की और स्थापित किया कि सत्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ और धर्मनिष्ठ आचरण ही मर्यादा है तथा उससे सभी बंधे हैं। वह हर रूप में मर्यादा के प्रतीक हैं। राम के राज्य में राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए थी। इसमें अधिनायकवाद की छाया मात्र भी नहीं थी। राम का राज्य मानव कल्याण के आदर्शों से युक्त एक ऐसा राज्य था जिसमें निस्वार्थ प्रजा की सेवा निष्पक्ष आदर्श न्याय व्यवस्था सुखी तथा समृद्ध शादी समाज व्यवस्था पाई जाती थी। राम इस सीमा तक लोकतांत्रिक हैं कि एक अवसर पर कहते हैं-यदि अनुमति हो तो कुछ कहूं और यदि मेरे कहे में कुछ अनुचित देखें तो मुझे टोक दें, मैं सुधार कर लूंगा। वह अपने राज्य में रहने वाले किसी भी व्यक्ति की राय के आधार पर फैसला लेने में हिचकते नहीं। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन चरित ऐसी मर्यादाओं, कर्तव्य पालन और सभी के अधिकारों के प्रति सम्मान का पर्याय है। मानव सभ्यता के सम्पूर्ण लिखित-अलिखित इतिहास में श्रीराम जैसा व्यक्तित्व और चरित्र का दूसरा उदाहरण उपलब्ध नहीं है।

राम को धर्म का विग्रह कहा गया है, 'रामो विग्रहवान् धर्मः'. एक व्यापक अर्थ में राम का चरित धर्म मार्ग की चुनौतियों और उसके विचलन से उठने की मुश्किलों अर्थात जीवन के आधारों की मर्यादा स्थापित करने की राह में आने वाले

प्रश्नों से रूबरू कराता है। गांव का अनपढ़ भी इनसे शिक्षित होता है और एक तरह के विवेक के भाव की अनुभूति करता है। श्रीराम मानव शरीर धारण करने पर जीवन के कठोर सत्य की कसौटी पर वे हमेशा ही कसे जाते हैं। किशोरावस्था से ही उनके सामने जो चुनौतियों की श्रृंखला शुरू होती है उसका जीवन में कभी अंत नहीं हुआ पर सारे कष्टों के बीच वे अविचल भाव से स्थित रहे। विकट परिस्थितियों में भी वे अपने पूरे परिवेश के साथ अनुकूलित रहते थे। उनके लिए आस-पास का कोई भी प्राणी 'अन्य' नहीं रहा, सभी अनन्य हो गए थे। वे गिरिजन, वनचारी और वानर सभी के हित के लिए जुटे रहे। करुणा और पर-दुखकातरता की भावना से ओत-प्रोत श्रीराम ने उन सबसे से प्रेम तथा सौहार्द का रिश्ता बनाया और निभाया। सबको साथ लेकर चलने के मामले में राम अद्वितीय हैं। वनवासियों समेत समाज के सभी वंचित-शोषित वर्गों को आदर देना उनका स्वभाव है। उनमें आत्मविश्वास पैदा कर उनके सहयोग को वह अपनी शक्ति बना लेते हैं। साधारण जन समुदाय में समुद्र पार जाने का साहस जगाकर और परम पराक्रमी रावण की दिग्विजयी सेना को परास्त कर राम ने स्थापित किया कि केवल सैन्य बल शौर्य का परिचायक नहीं होता। वह अपने शौर्य के बल पर हर चुनौती पर विजय पा लेते हैं।

भारतीय जन मानस के समक्ष जीवन का जो आदर्श उन्होंने राजा के रूप में तथा आज्ञाकारी पुत्र के रूप में सबके सामने रखा तथा सबके प्रति स्नेह, करुणा और सेवा का भाव रखा, वह संपूर्ण भारतीय समाज तथा मानव जाति के लिए अनुकरणीय है। प्रख्यात समाजवादी नेता एवं चिंतक डॉ. राम मनोहर लोहिया लिखते हैं- 'राम की सबसे बड़ी महिमा उनके उस नाम से मालूम होती है जिसमें कि उनको मर्यादा पुरुषोत्तम कह कर पुकारा जाता है। राम मर्यादा पुरुष थे। ऐसा रहना उन्होंने जानबूझ कर और चेतन रूप से चुना था। आज जब दुनिया भर में हड़पने और विस्तार की महत्वाकांक्षा सिर उठाए खड़ी है तो राम की मर्यादा को याद करना जरूरी हो जाता है। राम का जीवन बिना हड़पे हुए फैलने की एक कहानी है। उनका निर्वासन देश को एक शक्ति केंद्र के अंदर बांधने का मौका था। श्रीराम ने अयोध्या से लंका तक की अपनी यात्रा में कभी अतिक्रमण नहीं किया, वे दायरे से बाहर नहीं गए। जब पहली बार उन्हें वानर नरेश बालि के साम्राज्य पर अधिकार करने का मौका मिला था, वे चाहते तो बालि के भाई सुग्रीव का साथ देने के बहाने उसका साम्राज्य हड़प सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया है। यह एक विशाल हृदय राजकुमार की मर्यादा थी। यह नीतिशास्त्र की मर्यादा थी और राजनीति की भी।'

राम की संस्कृति जब–जब एक सम्पूर्ण और एकात्म राष्ट्र की अस्मिता बनकर उभरने लगती है, अराष्ट्रीय तत्व विक्षिप्त और बेचैन होने लगते हैं। लोकतंत्र के वोट तत्त्व की विवशता राष्ट्रीय परिवार, उसकी भूमि और भावना को आत्मघाती रूप दिया जाने लगता है। ऐसा एक बार नहीं अनेक बार हुआ है। देशवासियों ने अब अपने टूटे प्रण के टुकड़ों को जोड़कर प्राणों का कवच बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। श्रीराम प्रभु इस राष्ट्र की प्राणवायु हैं। इस राष्ट्र की हजारों वर्ष की जीवन यात्रा में अनेक राज्य बने और मिटे। अनेक राजा आए और गए। श्रीराम के आविर्भाव के पूर्व भी यह हुआ था जिसने भूत और वर्तमान को जोड़ रखा है। मनु और इक्ष्वाकु से लेकर नरेंद्र मोदी तक की सत्ता परम्परा में श्रीराम का ही एकमात्र ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें यहां के समस्त राष्ट्रजन अपने राष्ट्र का त्रिकाल दर्शन करते हैं। शेष सभी ऐसे हैं जिसमें किसी में दल दिखाई देता है तो किसी में जाति। किसी में वंश बिम्ब है, तो किसी में सत्ता स्वार्थ की शरारत। राम की लोकरंजकता भारत के लोकतंत्र के आधुनिक संस्करण में पूर्णतः अनुपस्थित है। जीवन मूल्य राजनीतिक विवशता के बंदी हैं। राष्ट्रीय अस्मिता चुनावों के हार जीत की आश्रित है। वह विधायिका के पक्ष विपक्ष की संख्या की कसौटी पर कसी जाती है।

हम सब के दिलों में रहेगे डॉ. जगदीश गाँधी

डॉ अजय कुमार मिश्रा

समाज और लोगों के लिए यह अत्यंत दुःखद है की शिक्षा के गाँधी डॉ. जगदीश गाँधी अब इस दुनियां में नहीं रहें। निःसंदेह उनके अच्छे कर्मों की वजह से उन्हें श्री चरणों में स्थान मिला होगा इसमें कोई अतिश्योक्ती नहीं है। अपने जीवन काल में उन्होंने लाखों बच्चों के जीवन को परिवर्तित कर वैश्विक ज्ञान की मुख्यधारा से उन्होंने जोड़ा है। आज उनके छात्र दुनियां के हर कोने में और सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर आपको दिखेगे। लखनऊ की पहचान अगर ऐतिहासिक स्थलों एवं प्रदेश की राजधानी होने के नाते रही है तो ठीक इसके विपरीत शिक्षाविद् डॉ. जगदीश गाँधी के शिक्षा के प्रति समर्पण और उपलब्धियों की वजह से भी एक अलग अमिट और प्रभावशाली छवि लखनऊ की दुनियां भर में इन्ही की वजह से बनी है। मै उन चुनिन्दा लोगों में से हूँ जिसे डॉ. गाँधी से मिलने का एक या दो नहीं बल्कि अनेकों बार अवसर मिला तथा मेरे कई कठिन प्रश्नों का भी वो बेबाक तरीके से मुस्कुरातें हुए जबाब देते थे। शिक्षा के प्रति उनका तीव्र प्रेम उन्हें दुनियां की सबसे बड़ी खुशियों में से एक खुशी देता था। पर्यावरण के प्रति भी वो लगातार सक्रीय रहतें थे। 87 वर्ष की उम्र में भी विश्व एकता, सभी धर्मों को सामान भाव से आदर सम्मान देना अपने बच्चों को वह सिखाने में लगातार तल्लीन रहतें थे। नैतिकता का पाठ बच्चों को जितने सरल और प्रभावशाली ढंग से वो सिखातें थे मैंने आज तक किसी को भी उस तरह से सिखातें नहीं देखा। शिक्षा के प्रति उनका प्रेम सर्वविदित है।

डा. जगदीश गाँधी का जन्म 10 नवम्बर सन् 1936 को अलीगढ़ जिले की सिकन्दराराउ तहसील के ग्राम बरसौली में पटवारी श्री फूलचन्द अग्रवाल के घर में हुआ था। डॉ. गाँधी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं विनोबा भावे से हृदयतल की गहराइयों से प्रभावी थे तथा प्रेरित होकर उन्होंने अपना उपनाम गाँधी रख लिया था। डा. जगदीश गाँधी 1969 से 1974 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य भी रहे तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रसंघ के अध्यक्ष भी रहें थे। समर्पण, त्याग और सहयोग की तीव्र भावना गाँधी जी में देखने को मिलती रही। कोई भी व्यक्ति किसी भी समस्या या सहयोग के लिए उनके पास जब भी जाता था वह निराश होकर नहीं लौटता था। उनकी सफलता का आकलन सिर्फ इसी तथ्य से किया जा सकता है की - वर्ष 1959 में पांच बच्चों से प्रारम्भ की कई शिक्षा की यात्रा आज 21 कैम्पसों के माध्यम से 61 हजार से अधिक बच्चों के विकास में कार्य कर रहा है। वर्ष 2001 में सीएमएस को विश्व के सबसे बड़े स्कूल के लिए गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड में शामिल किया गया था। 23 वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात भी यह रिकॉर्ड उन्ही के संस्थान के नाम में आज भी विद्यमान है। गाँधी जी के नेतृत्व का ही प्रभाव है की अंतर्राष्टीय स्तर पर यूनेस्को द्वारा शांति शिक्षा पुरस्कार, डेरोजियो अवार्ड, वर्ल्डलॉन एक्सीलेन्स अवार्ड, आइसलैण्ड, वर्ल्ड चिल्ड्रेन्स प्राइज फॉर द राइट्स ऑफ़ द चाइल्ड, स्वीडन, लाइफ लिंक कैम्पेन रिकगनीशन, स्वीडन, पीसफुल स्कूल्स इण्टरनेशनल रिकगनीशन, कनाडा, न्यूक्लियर फ्री फ्यूचर अवार्ड प्राप्त है।

डॉ. जगदीश गाँधी की मृत्यु के उपरांत कई लोगों में इस बात की उत्सुकता जरुर होगी की अब इस संस्थान को कौन सम्हालेगा। ठीक यही प्रश्न कुछ महीने पूर्व एक कार्यक्रम में जब मैंने उनसे पूछा था तो उन्होंने बिना क्षण-भर विचार किये अपनी पुत्री प्रो. गीता गाँधी किंगडन का नाम लिया। प्रो. गीता गाँधी किंगडन में आधुनिक तकीनीकी ज्ञान और प्रशासनिक कौशल क्षमता की दक्षता है और विगत काफी समय से सीएमएस में अपना सक्रीय योगदान भी दे रही है। हाल ही में तकनीक की नवीनतम आवश्यकता रोबोटिक्स से भी इन्होने संस्थान को जोड़ा है। डॉ. जगदीश गाँधी विगत कई दशकों से न केवल शिक्षा और समाज में व्यापक बदलाव लाकर आम आदमी के जीवन में बड़ा परिवर्तन ला रहें है बल्कि अपने सरल, सौम्य एवं प्रभावशाली शब्दों से अपनी पहचान सभी के दिलों में अमर कर चुकें है। आज हजारों लोगों को रोजगार इस संसथान में प्राप्त है और कार्यरत लोग गाँधी जी के आदर्शो और मार्ग पर तल्लीनता के साथ शिक्षा के ज्ञान को विस्तारित करने में लगे है।

एक ऐसी सख्सियत जिसने वैश्विक ज्ञान से लखनऊ का परिचय उन बच्चो में कराया जो परम्परागत शिक्षा के बाहर शायद ही सोच सकतें। आज डॉ. जगदीश गाँधी भलें ही हम सब के बीच नहीं है पर उनके आदर्श, उनके द्वारा वैश्विक परिवार की सकारात्मक कल्पना, सभी धर्मों के प्रति सम भावना, उच्चतम दर्जे की शिक्षा सभी तक पहुचाने का कठिन परिश्रम, बेहद सरल जीवन, दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा अनंतकाल तक इस समाज को देता रहेगा। जीवन का अंतिम सत्य सभी के लिए मृत्यु ही है पर इस यात्रा में अनेकों उपलब्धियां और सम्मान किसी के जीवन में बदलाव लाकर पाने वाले व्यक्तित्व डॉ. जगदीश गाँधी उन चुनिन्दा लोगों में से है जो मृत्यु को नहीं बल्कि एक ऐसी यात्रा पर है जो पुनः जन्म लेकर एक बड़ा बदलाव सभी के जीवन में पुनः ला सकें।

वन संरक्षण नहीं, सियासत है

ये केवल एक मंदिर के पथ की सोलर लाइटें होतीं, तो भी वन विभाग की आक्रामकता कबूल की जाती, मगर यहां तो आस्था और मानवता की किश्तियां जलाई गईं। बिना किसी नीति और परंपरा के वन विभाग हिमाचल का ऐसा मालिक है जो राजनेताओं, नौकरशाहों, अधिकारियों और नागरिक समाज पर भारी है। हिमानी चामुंडा में धड़ाधड़ हिमानी चामुंडा को रोशन करतीं दर्जनों सोलर लाइटें उखाड़ देना साबित करता है कि हम किसी बड़े भ्रम में हैं कि अगर राज्य जंगल उगाने को नेक मानता है, तो उसके हर्जाने में हमारे भविष्य के लिए असफल, अन्यायपूर्ण तथा असंवेदनशील कसरतें लिख दी गई हैं। इस पर भी हिमाचल के कुछ स्वयंभू पर्यावरणविद सोचते हैं कि वे सृष्टि को यहीं से संवारेंगे। उनकी दलीलों का अर्थ अवैज्ञानिक, विकास के खिलाफ तथा मानव विरोधी है। उन्हें उजड़ती खेती, घटती जड़ी-बूटियों, जंगल के मनमाने कानून या अर्थपूर्ण वन नीति से कोई लेना-देना नहीं, बल्कि ये लोग इश्तिहार पर पर्यावरण बनाते हैं। अगर पर्यावरण या वन्य प्राणी संरक्षण में कोई स्थापित हिमाचली ग्रुप है, तो कितने अध्ययन या सर्वेक्षण रिपोर्ट सामने आई हैं। क्या किसी ने यह कभी सोचा कि अब पालतू या दुधारू पशु ऊंची धार की तरफ क्यों नहीं चढ़ते। किसी ने सोचा कि गांव की विरासत में जंगल की तस्वीर क्यों खूंखार हो गई। क्यों घर के आंगन तक जंगल का पहरा लग गया। हमारी विद्युत-जलापूर्ति परियोजनाओं के साथ जंगल का टकराव देखना है, तो प्रशासन की निहत्थी फाइलों पर वन विभाग खून चढ़ा देखना, कितनी शिद्दत से यह विभाग हिमाचल को कमजोर कर रहा है।

ओशो : ना पैदा हुए ना मरे, कुछ समय के लिए धरती पर विचरण किया

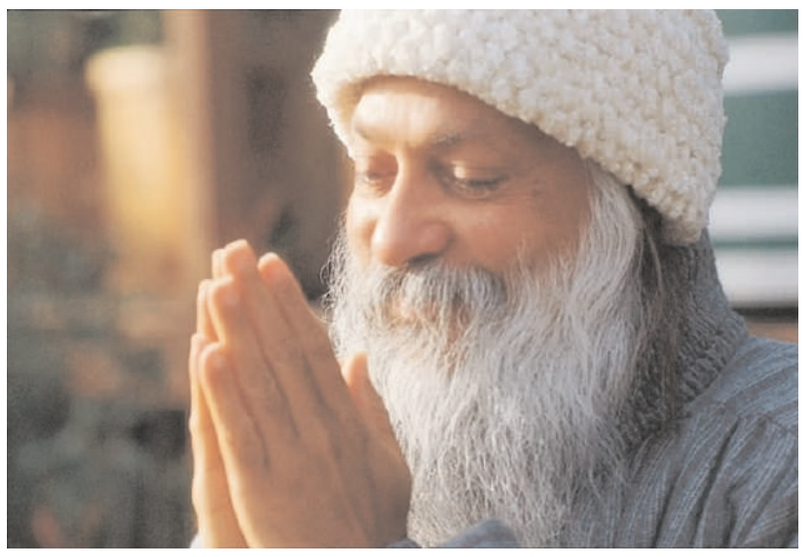

ना कभी पैदा हुए और ना ही मरे हैं, सिर्फ़ 11 दिसम्बर 1931 से 19 जनवरी 1990 तक के लिए पृथ्वी पर भ्रमण किया। ये ओशो के लिए समर्पित स्मृति स्टोन पर लिखा वाक्य है- दरअसल, ओशो को चाहने वाले आज भी उन्हें इसी तरह याद भी करते हैं जैसे वे कहीं गए ही नहीं। ये काम सोशल मीडिया और आसान किए देता है कि ढेरों वीडियो देखे जा सकते हैं। उन वीडियो में जो बातें वे कर रहे हैं, वे युवाओं को बड़ी भाती हैं, उनके बाग़ी मन को, जब नई-नई समझ पकड़ता मन दुनिया को बदलने की, रूढ़ियों को तोड़ने की चाह रखता है। हालांकि ऐसा भी नहीं कि सिर्फ़ युवा मन ही, दबे-दबे ही सही सामाजिक लोग भी ओशो की हां में हां ही मिलाना चाहते हैं। सामाजिक इसलिए लिखा है कि ओशो समाज के लिए नहीं थे, इसलिए कई जगह से बेदखल भी किए गए पर सनद रहे कि शरीर से बेदखल कर देना विचार से बेदखल कर देना तो नहीं है तो जो लोग उनसे प्रभावित हुए उनके लिए वे प्रिय हैं, उन पर किताबें लिखी जा रही हैं, चर्चाएं की जा रही हैं, उनके बनाए सैन्टर में डायनामिक मेडिटेशन भी किया जा रहा है। मोरारी बापू से लेकर, धीरेन्द्र शास्त्री और सदुरु तक भी सभी ने ओशो की तारीफ़ के पुल बांधे हैं। ओशो को नकारना मुश्किल है, हां द्वेष और प्रेम निजी मसला है। ये बात तो वे खुद भी कहते थे।

ओशो का कहा सब कुछ वीडियो के रूप में तो दर्ज नहीं है लेकिन सौभाग्य से इतना है कि उन्हें समझा और जाना जा सके। आचार्य रजनीश से भगवान रजनीश बनने के बाद वो उनके फॉलोअर्स के लिए ओशो हो गए थे। ओशो का मतलब विराट समुद्र से एक हो जाना, दार्शनिक भाषा में इसका अर्थ है ईश्वर से है। अर्थात् ईश्वर से एकात्म की अवस्था। अक्सर लोग पूछते हैं कि क्या ओशो एनलाइटेंड थे और जिस पर उन्होंने कहा कि जिस अदृश्य का अनुभव आप स्वयं न करे लें वह दूसरों के माध्यम से कैसे जानेंगे। अध्यात्म वही एक अनुभव देता है, वही एक अनुभूति। ओशो का कहा इसलिए और खींचता है कि उनके पास एक तार्किक दिमाग़ था और तीव्र मेधा। ओशो अपने जीवन काल में डेढ़ लाख से अधिक किताबें पढ़ी थीं, वे नई वैज्ञानिक खोजों पर दृष्टि जमाए रखते और अपने प्रवचनों में उनके उदाहरण देते। चीनी दार्शनिकों से लेकर, भारतीय मनीषियों, जर्मन डॉक्टर और रूस के अलौकिक लोगों तक का भान उन्हें था। गोपालदास नीरज, विनोद खन्ना, अमृता प्रीतम, खुशवंत सिंह, सुमित्रानंदन पंत उनसे मिलने आश्रम पहुंचे। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में पकड़ रखने वाले जब ओशो मेरे प्रिय आत्मन से शुरु करते और अंदर बैठे परमात्मा को प्रणाम कर अपनी बात समाप्त करते। हज़ारों और फिर लाखों की भीड़ उन्हें सुनने आने लगी। बंबई में दो कमरों से मकान से शुरु हुआ सफ़र पुणे की कई बीघा ज़मीन से होता हुआ अमेरिका पहुंचा। भगवान रजनीश का कम्यून जो उनके विचारों और सपनों का समाज था, उसका पूंजीवादी विस्तार हुआ। रोल्स रॉयस गाड़ियों से लेकर, महंगी घड़ी, ज्वैलरी और कपड़ों तक। बंबई की सेक्रेटरी लक्ष्मी का पद अब शीला को मिल गया। सन्यास के बाद जिसका नाम हुआ मां आनंद शीला। वे एक अच्छी टीम थे, ये शीला के शब्दों की बात है। वह ओशो के प्रेम में थीं और ओशो भी उनके प्रेम में थे, उन्होंने दावा किया हालांकि किसी भी शारीरिक संबंध की बात से इंकार किया। ओशो ने एक जगह कहा भी है- मैं इस बात में स्पष्ट हूं कि अपनी सेक्रेटरी से शारीरिक संबंध नहीं बनाने चाहिए। ये सब तमाम बातें उन पर बनी डॉक्यूमेंट्री वाइल्ड वाइल्ड कन्ट्री में हैं। शीला और ओशो की टीम अमेरिका में जाकर टूट गई, जब वहां पूरा एक शहर रजनीशपुरम बनने के बाद शीला के शब्दों में ओशो ड्रग्स में लिप्त हो गए थे और उनकी भोग-विलास की इच्छा बढ़ती जा रही थी। शीला ने कम्यून छोड़ दिया। इधर, ग़लत तरीके से अमेरिका में दाखिल होने और लोकल चुनावों को प्रभावित करने के आरोप में शीला की गिरफ़्तारी हुई। ओशो भी गिरफ्तार हुए, देश छोड़ने की शर्त के बदले उन्हें रिहा किया गया। शीला को लगभग साढ़े तान साल बाद छोड़ा और वो जर्मनी और फिर स्विट्ज़रलैंड में जाकर बस गईं। ओशो भारत आ गए, उनके विचारों के कारण वे 21 देशों में बैन थे। उन्हें पुणे लौटना ही पड़ा। 5 साल बाद उनकी मृत्यु हुई, जिसके साथ अपने क़िस्से और रहस्य जुड़े हैं। लेकिन ओशो ने अपने विचारों को, सोच को, ज्ञान को लंबे समय के लिए जीवित कर दिया। वे हर उस रूढ़ि के विरुद्ध थे जो मानव के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए बाधा हो। वे विवाह के विरुद्ध थे, खुद भी ताउम्र शादी नहीं की। अपनी मां से कह दिया था कि साधु बनना चाहते हैं लेकिन ब्रह्मचारी नहीं, उनकी मां स्तब्ध थीं, लेकिन ओशो अपनी राह चल पड़े, जिस कॉलेज में पढ़ाते थे वहां उनके लैक्चर में सबसे ज़्यादा भीड़ रहती, वाणी में सम्मोहन था। लोग ना उनकी बातों को काट ही पाते और ही सबके सामने स्वीकार ही कर पाते। उन्हें कॉलेज छोड़ना ही पड़ा, वे अब भारत भ्रमण पर थे। वे जगह-जगह प्रवचन करते थे, लोग खिंचे चले आते। वे कहते- मेरे यहां हर किसी का स्वागत है- शुरुआती दिनों में सबसे मिलते भी थे, फिर धीरे-धीरे सिमटने लगे, कुछ गिने-चुने लोग ही बहुत क़रीब जा पाते थे लेकिन कई लोग कम्यून के कामों में थे जिसमें सफ़ाई का काम, व्यवस्था का काम, अनुवाद और किताब का काम भी था। ओशो ने खुद कोई किताब नहीं लिखी लेकिन उनके प्रवचनों को ही किताब का रूप दिया गया। संभोग से संमाधि सबसे प्रसिद्ध और सबसे विवादित रही, वे सेक्स गुरु के नाम से पहचाने जाने लगे। उनके कम्यून को भी उसी नज़र से देखा जाता था। भीतर रहने वाले इसे सहमति और प्रेम की नज़र से देखते हैं। बहरहाल, आज ओशो का जन्मदिन है। विवादों के गुरु और समाज की किरकिरी लेकिन फिर भी मौन स्वीकृति पाने वाले महान दार्शनिक ओशो, जो न पैदा हुए और न मरे हैं, तब जन्मदिन का एक दिन कैसा। ना कभी पैदा हुए और ना ही मरे हैं, सिर्फ़ 11 दिसम्बर 1931 से 19 जनवरी 1990 तक के लिए पृथ्वी पर भ्रमण किया। ये ओशो के लिए समर्पित स्मृति स्टोन पर लिखा वाक्य है- दरअसल, ओशो को चाहने वाले आज भी उन्हें इसी तरह याद भी करते हैं जैसे वे कहीं गए ही नहीं। ये काम सोशल मीडिया और आसान किए देता है कि ढेरों वीडियो देखे जा सकते हैं। उन वीडियो में जो बातें वे कर रहे हैं, वे युवाओं को बड़ी भाती हैं, उनके बाग़ी मन को, जब नई-नई समझ पकड़ता मन दुनिया को बदलने की, रूढ़ियों को तोड़ने की चाह रखता है। हालांकि ऐसा भी नहीं कि सिर्फ़ युवा मन ही, दबे-दबे ही सही सामाजिक लोग भी ओशो की हां में हां ही मिलाना चाहते हैं। सामाजिक इसलिए लिखा है कि ओशो समाज के लिए नहीं थे, इसलिए कई जगह से बेदखल भी किए गए पर सनद रहे कि शरीर से बेदखल कर देना विचार से बेदखल कर देना तो नहीं है तो जो लोग उनसे प्रभावित हुए उनके लिए वे प्रिय हैं, उन पर किताबें लिखी जा रही हैं, चर्चाएं की जा रही हैं, उनके बनाए सैन्टर में डायनामिक मेडिटेशन भी किया जा रहा है। मोरारी बापू से लेकर, धीरेन्द्र शास्त्री और सदुरु तक भी सभी ने ओशो की तारीफ़ के पुल बांधे हैं। ओशो को नकारना मुश्किल है, हां द्वेष और प्रेम निजी मसला है। ये बात तो वे खुद भी कहते थे। ओशो का कहा सब कुछ वीडियो के रूप में तो दर्ज नहीं है लेकिन सौभाग्य से इतना है कि उन्हें समझा और जाना जा सके। आचार्य रजनीश से भगवान रजनीश बनने के बाद वो उनके फॉलोअर्स के लिए ओशो हो गए थे। ओशो का मतलब विराट समुद्र से एक हो जाना, दार्शनिक भाषा में इसका अर्थ है ईश्वर से है।

धीरज साहू काली कमाई के ब्लैकहोल के नए आइकन...!

बीते पांच दिनों से देश में दो जिज्ञासाएं शिद्दत से तैर रही हैं। एक में उत्सुकता ज्यादा है और दूसरे में हैरानी। तीन राज्यों में विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत के बाद च्कौन बनेगा मुख्यमंत्रीज् पर च्एक जिज्ञासा और एक शख्स भारी पड़ा है, वो है धीरज साहू। धीरज साहू राज्यसभा में कांग्रेस के सदस्य हैं और पिछले साल उन्होने एक ट्वीट कर जिज्ञासा जताई थी कि लोगों के पास इतने करोड़ रुपये कहां से आते हैं? इस सवाल के साथ उन्होंने यह जवाब भी दिया था कि देश में भ्रष्टाचार कांग्रेस ही समाप्त कर सकती है। ये बात अलग है कि ताजा छापों के पहले ओवर में 2 करोड़ रुपये की काली कमाई मिलने के बाद धीरज साहू चुप्पी साध गए हैं। हालांकि, उनके अपने सवाल का जवाब भी उन्होंने खुद दे दिया है। यही आत्म ज्ञान है। इनकम टैक्स और ईडी आदि के छापो में करोड़ो रू. नकद मिलने की खबर अब ज्यादा नहीं चौंकाती, क्योंकि ज्यादातर यह पैसा, नेताओं, कारोबारियों, अफसरों, मुलाजिमों या और दूसरे धंधों में लिप्त लोगों के यहां से बरामद होता है। लिहाजा च्लखपतिज् तो छोड़िए च्करोड़पतिज् शब्द भी अब बेमानी हो चुका है। क्योंकि दो नंबर का पैसा अब अरबों में मिलने लगा है। इतना कि शहर की कई बैंकों में रोजाना की नकदी से भी ज्यादा। कई एटीएमों में डेली भरी जाने वाली रकम से भी अधिक।

ऐसे में धीरज साहू 21 वीं सदी में दो नंबर की रकम के हिमालय को घर में रखने वाले रोकड़ा रोही हैं। दिलचस्प बात यह है कि लोगों की रूचि धीरज ने यह पैसा कैसे कमाया और इस कमाई को टैक्स बचाने की खातिर कैसे बचाया, से भी ज्यादा इस बात में है कि इतनी बड़ी भारी रकम उन्होंने सालों तक अल्मारियों में दबा कर क्यों रखी? इसका मकसद क्या था? करोड़ों रूपए के नोट नमी खा जाएं तो किसी काम के नहीं रहते, क्या धीरज को यह पता नहीं होगा? तो क्या उनके लिए नोटों के यह ढेर महज कूड़ा रहे होंगे? अगर ऐसा भी था तो इसके पीछे वजह क्या रही होगी? अवैध लेन देन से अरबों कमाकर भी उसके प्रति यह इतना च्वैराग्य भावज् क्यों कर धीरज साहू शराब कारोबारी हैं और शराब के धंधे में जितनी एक नंबर की शराब होती है, उतना ही दो नंबर का पानी भी होता है। कहा जाता है कि उनका परिवार आजादी के आंदोलन के समय से कांग्रेस और स्वतंत्रता सेनानियो से जुड़ा हुआ है। इससे लगता है कि उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के नैतिक मूल्यों को ज्यादा तवज्जो नहीं दी। बताते हैं कि शराब की बोतलों से पैसे उलीचकर पहले आजादी की लड़ाई में लगाया और बाद में नियम कानूनों से आजादी की चाहत में अपने गोदामों में भरा।

वैसे भी आजकल लक्ष्मी का वाहन आजकल उल्लू के बजाए सियासत हो गया है। सियासत में कदम रखते ही तमाम पाप साफ और माफ हो जाते हैं। धीरज साहू ने ओडिशा में वही किया। कहते हैं कांग्रेस ने उन्हें दो बार लोकसभा का टिकट दिया था। लेकिन धीरज दोनों बार हारे। शायद इस काम में लक्ष्मी उनके काम नहीं आई। बाद में इसी नकद नारायण के भरोसे उन्होंने कांग्रेस से राज्यसभा का टिकट लिया। धीरज का कार्यकाल अगले साल खत्म होने वाला है। उसके पहले ही ये चोट हो गई। वरना धीरज अगली टर्म का टिकट भी ले लेते। धीरज साहू ने ये पैसा कैसे कमाया, इस तरह अल्मारियों में छुपाकर क्यों रखा? क्यों नहीं इस राशि पर टैक्स देकर उसे एक नंबर में कन्वर्ट करने की कोशिश की? क्यों उन्होंने यह ट्रक भर रकम गरीबों को बांटकर या मंदिरों में सोने का पत्रा आदि चढ़वाकर दानवीर बनने की कोशिश नहीं की, क्या वे इतनी रकम अपनी अल्मारियों में सजाकर अरबों की नकदी की सार्वजनिक प्रदर्शनी लगाना चाहते थे, इन तमाम सवालों के जवाब अभी मिलना है। लेकिन टीवी के माध्यम से लाखों लोग जो देख रहे हैं, वह सचमुच आंखे चुंधियाने वाला और दिमाग को चकरा देने वाला है। यह तो सुना था कि मानसिक रोगी कई बार मृत देह को जिंदा मानकर अपने घरों में रखे रहते हैं, लेकिन धीरज ने चलतू नोट इतनी बड़ी तादाद में डंप कर पटके हुए थे कि मानों कबाड़खाने में करीने से रखी रही हो। कारूं के अकूत खजाने की तरह धीरज साहू के घर से रोज मिल रहे करोड़ों के कर्रे नोट, उन्हें गिनती करने वाली मशीनों का दम तोड़ना, मशीने परेट कर उन नोटों के बंडल बनाने वाले पचासों हाथों का थकना, गिने हुए नोटों को भरने के लिए लाए गए बोरों का टोटा पड़ जाना, जिस बैंक में इन नोटों को रखा गया है, वहां के कर्मचारियो की आंखें भी इतने नोट देखकर फटी की फटी रह जाना और वो करोड़ों जनता जिनके लिए जेब में पांच सौ का नोट भी भी बड़ी अमानत की तरह होता है, का इतने रूपए एक साथ देखकर हतप्रभ रह जाना सब कुछ परीकथा सा है। ऐसी परी कथा जो अपने आप में एक बोध कथा भी है, जिसकी कल्पना हमारे पूर्वजों ने भी शायद नहीं की होगी। धन के देवता कुबेर भी स्वर्ग में सारा काम छोड़कर नोटों की इस मनोरंजक गिनती को देख रहे होंगे तो पाप पुण्य का हिसाब रखने वाले चित्रगुप्त के लिए यह केस अबूझ पहेली बन गया होगा कि इस रकम को और उसे अर्जित करने वाले आदम को किस खाते में डालें। उधर हर दिन बैंक के सूत्रों से यह खबर आती है कि बरामद नोटों की गिनती अभी खत्म नहीं हैं। फाइनल फिगर का सस्पेंस अभी बाकी है। अभी तक 350 करोड़ ही गिने जा सके हैं,अंतिम आंकड़ा कहां जाकर ठहरेगा, यह उतना ही उत्सुकता से भरा है, जब भाला फेंक की किसी भी वैश्विक स्पर्द्धा में कौतुहल रहता है कि नीरज चोपड़ा का भाला कितनी लंबी दूरी पर जा धंसेगा, लेकिन यहां नीरज और धीरज में बुनियादी अंतर है। नीरज जिद और दृढ़ संकल्प को रिकॉर्ड में बदलने वाले खिलाड़ी हैं तो धीरज गैर कानूनी तरीके से अर्जित माल को दबाने का रिकॉर्ड बनाने वाले खिलाड़ी हैं। धीरज की इस बेहिसाब नकदी ने राजनेताओं के धनार्जन और धनाधारित राजनीति को नया मोड़ दे दिया है। कल तक भाजपा को भ्रष्टाचार पर घेरने और मप्र में 50 फीसदी कमीशन का आरोप लगाने वाली कांग्रेस इस धीरज पुराण पर चुप है। जबकि, खुद भ्रष्टाचार का आरोप झेल रही भाजपा अब इस नकद नारायण कांड को उछाल कर कांग्रेस के मुखौटे के पीछे लगी कालिख को बेनकाब करने में जुटी है। इस बेहिसाबी रकम के विस्फोट के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट कर कांग्रेस से जवाब मांगा तो कांग्रेस तथा इंडिया गठबंधन की इस नकद चैप्टर के पन्ने खुलने के बाद बोलती ही बंद हो गई। क्योंकि यह पैसा आया कहां से, किस स्रोत से आया और इसे अब तक छुपाया क्यों गया, काली कमाई करने वाला यह शख्स इतनी आसानी से राज्य सभा का टिकट कैसे पा गया, ये तमाम सवाल खुद कांग्रेस को असहज करने वाले हैं।

संसद की सर्वोच्चता पर मुहर

केशवानंद भारती निर्णय के आगे एक बड़ी छलांग

मार्क ट्वेन ने कहा था कि सच के जूते पहनने तक झूठ आधी दुनिया का सफर तय कर लेता है। अनुच्छेद-370 संविधान के अध्याय-21 का हिस्सा है, जिसका शीर्षक अस्थायी और संक्रमणकालीन है। इस अस्थायी प्रावधान को स्थायी बताने के झूठ का पर्दाफाश करने में सात दशक लग गए। इस मामले में शीर्ष अदालत के न्यायिक फैसले से घड़ी की सुइयों को पीछे ले जाना मुश्किल था। संविधान पीठ में शामिल प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ के साथ बाकी चार जजों में से तीन आने वाले समय में शीर्ष अदालत के प्रधान न्यायाधीश होंगे। सभी पांच जजों ने सर्वसम्मति से फैसला देकर संविधान के तहत संसद और राष्ट्रपति की सर्वोच्चता पर मुहर लगाई है।

इस फैसले में कुछ बातें बड़ी साफगोई से कही गई हैं। जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है और विलय के बाद राज्य के पास कोई आंतरिक संप्रभुता नहीं बची थी। अनुच्छेद-356 के तहत राष्ट्रपति शासन के दौरान राष्ट्रपति और संसद राज्य की विधानसभा के अधिकारों को टेकओवर कर सकते थे। संविधान सभा का अस्तित्व खत्म होने के बाद अनुच्छेद-370 को हटाने के लिए जनमत संग्रह की कोई जरूरत नहीं थी। भारतीय संविधान के तहत राज्य के किसी हिस्से को केंद्र-शासित प्रदेश में बदलने के लिए संसद और केंद्र सरकार को अधिकार हासिल हैं। इसलिए लद्दाख को बगैर विधानसभा के केंद्रशासित प्रदेश बनाने का फैसला सही है। सॉलिसिटर जनरल के आश्वासन के अनुसार जल्द चुनाव होंगे। इसलिए जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने और अनुच्छेद-3 की व्याख्या के मामले पर शीर्ष अदालत ने फिलहाल फैसला नहीं दिया है। न्यायमूर्ति कौल ने दक्षिण अफ्रीका के जुलू कबीले में प्रचलित उबंटू प्रथा को उद्धृत करते हुए करुणा और क्षमा के मानवीय आधार पर फैसला लिखा है। दक्षिण अफ्रीका से महात्मा गांधी का गहरा नाता था। तथ्यों और सच की जांच करने वाले आयोग से कश्मीर में भरोसा बढ़ेगा या नफरत की कहानियां? सोशल मीडिया में झूठ और फरेब के दौर में इसका फैसला जनता की अदालत में ही होगा। सर्वोच्च न्यायालय को संविधान का संरक्षक माना जाता है, लेकिन वह हर मर्ज की दवा नहीं है। कुछ लोग इस फैसले की नैतिकता के आधार पर आलोचना कर रहे हैं। हकीकत यह है कि अनुच्छेद-370 कश्मीर में भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण का सबसे बड़ा माध्यम बन गया था। नेताओं, आंदोलनकारियों और बड़े वकीलों को यह समझने की जरूरत है कि सच या झूठ के नैरेटिव को गढ़ने के लिए अदालतों के बेजा इस्तेमाल से संविधान के साथ लोकतंत्र कमजोर होता है। फैसले के बाद पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद और घुसपैठ से पीड़ित कश्मीर में अनिश्चितता के बादल छटेंगे। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में केंद्र सरकार के अधिकारों को मजबूती देने के साथ न्यायपालिका की सीमा निर्धारित करने वाला यह फैसला केशवानंद भारती के आगे एक बड़ी छलांग है। 370 की तर्ज पर किसी भी क्षेत्र या वर्ग के लिए विशिष्ट प्रावधान बनाना आसान है, लेकिन उन्हें खत्म करना कठिन है। इससे नेताओं और सरकारों को चेतना जरूरी है। न्यायपालिका के लिए इस फैसले के अनेक सबक हो सकते हैं। 2015 से लंबित मामलों की सुनवाई में कई साल का विलंब होने से शीर्ष अदालत की साख कमजोर हुई। उसके बाद इस मामले की 16 दिन तक मैराथन सुनवाई हुई। अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट में हर पक्ष के वकील को आधे घंटे बहस का मौका मिलता है। लेकिन भारत की शीर्ष अदालत में बड़े वकीलों से जुड़े मामलों में सुनवाई की कोई समय-सीमा न होने से बहमूल्य अदालती समय नष्ट होता है। इसकी भरपाई आम जनता और जूनियर वकीलों से जुड़े मामलों में होती है। राज्यपाल और स्पीकर द्वारा फैसलों में विलंब के खिलाफ शीर्ष अदालत ने सख्त रुख अपनाया है। उसके द्वारा जारी गाइडलाइंस के अनुसार सुनवाई के बाद रिजर्व किए गए मामलों में तीन माह के भीतर फैसला होना चाहिए, जिसका इसमें पालन नहीं हुआ। जजों के अनुसार, फैसले संक्षिप्त और तार्किक होने चाहिए, जिसकी इस फैसले में अनदेखी हुई है। इसके खिलाफ पुनर्विचार याचिका दायर हो सकती है, लेकिन उससे फैसले में बदलाव की नगण्य संभावना है। पर राज्य में जल्द चुनाव नहीं हुए, तो नए राउंड की मुकदमेबाजी फिर से शुरू हो सकती है। पांच अगस्त का ऐतिहासिक दिन हर भारतीय के दिल और दिमाग में बसा हुआ है। हमारी संसद ने अनुच्छेद 370 को निरस्त करने का ऐतिहासिक निर्णय पारित किया और तब से जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में बहुत कुछ बदलाव आया है। सभी केंद्रीय कानून अब बिना किसी डर या पक्षपात के लागू होते हैं, प्रतिनिधित्व भी पहले से अधिक व्यापक हो गया है। त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली लागू हो गई है, बीडीसी चुनाव हुए हैं, और शरणार्थी समुदाय, जिन्हें लगभग भुला दिया गया था, उन्हें भी विकास का लाभ मिलना शुरू हो गया है। केंद्र सरकार की प्रमुख योजनाओं ने शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया है। आवास, नल से जल कनेक्शन और वित्तीय समावेशन में प्रगति हुई है। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भी बुनियादी ढांचे का विकास किया गया है। सरकारी रिक्तियां, जो कभी भ्रष्टाचार और पक्षपात का शिकार होती थीं, पारदर्शी और सही प्रक्रिया के तहत भरी गई हैं। बुनियादी ढांचे और पर्यटन में बढ़ावा सभी देख सकते हैं।

जम्मू-कश्मीर में मोहभंग, निराशा और हताशा की जगह अब विकास, लोकतंत्र और गरिमा ने ले ली है। इससे लोगों में यह संदेश भी गया कि संकट के दौरान हमारी सरकार वहां के लोगों की मदद के लिए कितनी संवेदनशील है। मुझे जम्मू-कश्मीर में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मिलने का अवसर मिला है और इन संवादों में एक बात समान समान रूप से उभरती है-लोग न केवल विकास चाहते हैं, बल्कि वे दशकों से व्याप्त भ्रष्टाचार से भी मुक्ति चाहते हैं। उस साल मैंने जम्मू-कश्मीर में जान गंवाने वाले लोगों की याद में दीपावली नहीं मनाने का फैसला किया। मैंने दीपावली के दिन जम्मू-कश्मीर में मौजूद रहने का भी फैसला किया। जम्मू एवं कश्मीर की विकास यात्रा को और मजबूती प्रदान करने के लिए हमने यह तय किया कि हमारी सरकार के मंत्री बार-बार वहां जाएंगे और वहां के लोगों से सीधे संवाद करेंगे। इन लगातार दौरों ने भी जम्मू एवं कश्मीर में सद्भावना कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 2015 का विशेष पैकेज जम्मू एवं कश्मीर की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसमें बुनियादी ढांचे के विकास, रोजगार सृजन, पर्यटन को बढ़ावा देने और हस्तशिल्प उद्योग को सहायता प्रदान करने से जुड़ी पहल शामिल थीं।

लोकतंत्र और गरिमा की स्थापना

सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को निरस्त करने का ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। शीर्ष अदालत ने भारत की संप्रभुता और अखंडता बरकरार रखी है। सुप्रीम कोर्ट का यह कहना पूरी तरह से उचित है कि पांच अगस्त, 2019 को हुआ निर्णय सांविधानिक एकीकरण को बढ़ाने के उद्देश्य से लिया गया था, न कि इसका उद्देश्य विघटन था। शीर्ष अदालत ने इस तथ्य को भी भलीभांति माना है कि अनुच्छेद 370 का स्वरूप स्थायी नहीं था। मुझे अपने जीवन के शुरुआती दौर से ही जम्मू-कश्मीर आंदोलन से जुड़े रहने का अवसर मिला है।

जम्मू-कश्मीर महज एक राजनीतिक मुद्दा नहीं था, बल्कि यह विषय समाज की आकांक्षाओं को पूरा करने के बारे में था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को नेहरू मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण विभाग मिला हुआ था और वह काफी लंबे समय तक सरकार में बने रह सकते थे। फिर भी, उन्होंने कश्मीर मुद्दे पर मंत्रिमंडल छोड़ दिया और आगे का कठिन रास्ता चुना, भले ही इसकी कीमत उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। लेकिन उनके अथक प्रयासों और बलिदान से करोड़ों भारतीय कश्मीर मुद्दे से भावनात्मक रूप से जुड़ गए। कई वर्षों बाद अटल जी ने श्रीनगर में एक सार्वजनिक बैठक में च्इंसानियतज्, च्जम्हूरियतज् और कश्मीरियत का प्रभावशाली संदेश दिया, जो सदैव ही प्रेरणा का महान स्रोत भी रहा है। मेरा हमेशा से दृढ़ विश्वास रहा है कि जम्मू-कश्मीर में जो कुछ हुआ था, वह हमारे राष्ट्र और वहां के लोगों के साथ एक बड़ा विश्वासघात था।

मेरी यह भी प्रबल इच्छा थी कि मैं इस कलंक को, लोगों पर हुए इस अन्याय को मिटाने के लिए जो कुछ भी कर सकता हूं, उसे जरूर करूं। अनुच्छेद 370 और 35 (ए) जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के सामने बड़ी बाधाओं की तरह थे। इनके कारण जम्मू-कश्मीर के लोगों को वह अधिकार और विकास कभी नहीं मिल पाया, जो उनके साथी देशवासियों को मिला। इन अनुच्छेदों के कारण, एक ही राष्ट्र के लोगों के बीच दूरियां पैदा हो गईं। मैं एक बात को लेकर बिल्कुल स्पष्ट था- जम्मू-कश्मीर के लोग विकास चाहते हैं तथा वे अपनी ताकत और कौशल के आधार पर भारत के विकास में योगदान देना चाहते हैं। वे अपने बच्चों के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता चाहते हैं, एक ऐसा जीवन जो हिंसा और अनिश्चितता से मुक्त हो। जम्मू-कश्मीर के लोगों की सेवा करते समय, हमने तीन बातों को प्रमुखता दी- नागरिकों की चिंताओं को समझना, सरकार के कार्यों के माध्यम से आपसी-विश्वास का निर्माण करना तथा विकास, निरंतर विकास को प्राथमिकता देना। मुझे याद है, वर्ष 2014 में हमारे सत्ता संभालने के तुरंत बाद, जम्मू-कश्मीर में विनाशकारी बाढ़ आई थी, जिससे कश्मीर घाटी में बहुत नुकसान हुआ था। सितंबर, 2014 में, मैं स्थिति का आकलन करने के लिए श्रीनगर गया और पुनर्वास के लिए विशेष सहायता के रूप में 1,000 करोड़ रुपये की घोषणा भी की।

इससे लोगों में यह संदेश भी गया कि संकट के दौरान हमारी सरकार वहां के लोगों की मदद के लिए कितनी संवेदनशील है। मुझे जम्मू-कश्मीर में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मिलने का अवसर मिला है और इन संवादों में एक बात समान समान रूप से उभरती है-लोग न केवल विकास चाहते हैं, बल्कि वे दशकों से व्याप्त भ्रष्टाचार से भी मुक्ति चाहते हैं। उस साल मैंने जम्मू-कश्मीर में जान गंवाने वाले लोगों की याद में दीपावली नहीं मनाने का फैसला किया। मैंने दीपावली के दिन जम्मू-कश्मीर में मौजूद रहने का भी फैसला किया। जम्मू एवं कश्मीर की विकास यात्रा को और मजबूती प्रदान करने के लिए हमने यह तय किया कि हमारी सरकार के मंत्री बार-बार वहां जाएंगे और वहां के लोगों से सीधे संवाद करेंगे। इन लगातार दौरों ने भी जम्मू एवं कश्मीर में सद्भावना कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 2015 का विशेष पैकेज जम्मू एवं कश्मीर की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसमें बुनियादी ढांचे के विकास, रोजगार सृजन, पर्यटन को बढ़ावा देने और हस्तशिल्प उद्योग को सहायता प्रदान करने से जुड़ी पहल शामिल थीं। हमने खेल शक्ति में युवाओं के सपनों को साकार करने की क्षमता को पहचानते हुए जम्मू- कश्मीर में इसका भरपूर सदुपयोग किया। विभिन्न खेलों के माध्यम से, हमने वहां के युवाओं की आकांक्षाओं और उनके भविष्य पर खेलों से जुड़ी गतिविधियों के परिवर्तनकारी प्रभाव को देखा। स्थानीय स्तर पर फुटबॉल क्लबों की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना इन सबमें एक सबसे अनूठी बात रही। इसके परिणाम शानदार निकले। मुझे प्रतिभाशाली फुटबॉल खिलाड़ी अफशां आशिक का नाम याद आ रहा है। वह दिसंबर, 2014 में श्रीनगर में पथराव करने वाले एक समूह का हिस्सा थी, लेकिन सही प्रोत्साहन मिलने पर उसने फुटबॉल की ओर रुख किया, उसे प्रशिक्षण के लिए भेजा गया और उसने खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पंचायत चुनाव भी इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ। पंचायत चुनावों की सफलता ने जम्मू एवं कश्मीर के लोगों की लोकतांत्रिक प्रकृति को इंगित किया।

कॉप-28 जलवायु नियंत्रित करने के लिये कमर कसे

धरती की पर्यावरण चिंताओं पर विचार और समस्याओं के समाधान के लिए दुबई (संयुक्त अरब अमीरात) में आयोजित हो रहा संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन-कॉप-28 बहुत महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्लोबल वॉर्मिंग का असर हमारे जीवन पर साफ-साफ दिखने लगा है। 2021 में हुए पेरिस समझौते में दुनिया का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस पर ही रोकने की बात की गई थी, इस साल 38 से भी अधिक दिन ऐसे रहे हैं जिनमें तापमान औसत से डेढ़ डिग्री ज्यादा रहा था। इस साल तापमान में वृद्धि, महासागर की गर्मी, अंटार्कटिका की बर्फ का घटना आदि ने ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को चिन्ताजनक स्तर तक पहुंचा दिया है। जिससे समुद्र किनारे बसे अनेक नगरों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है, बार-बार बाढ़, सूखा एवं भुस्खलन हो रहा है। इसलिए, विकसित देशों को अपना कार्बन उत्सर्जन कम करने और ग्रीन एनर्जी में निवेश करने की आवश्यकता है। पर्यावरण के बिगड़ते मिजाज एवं जलवायु परिवर्तन के घातक परिणामों ने जीवन को जटिल बना दिया है।

वैज्ञानिक और पर्यावरणविद चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले दशकों में वैश्विक तापमान और बढ़ेगा इसलिए अगर दुनिया अब भी नहीं सर्तक होगी तो इक्कीसवीं सदी को भयानक आपदाओं से कोई नहीं बचा पाएगा। रोम में सम्पन्न हुए जी-20 सम्मेलन में सभी देश धरती का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस कम करने पर राजी हुए हैं। इसके अलावा उत्सर्जन को नियंत्रण करने के तथ्य निर्धारित किये गए हैं। जी-20 ने तो शताब्दी के मध्य तक कार्बन न्यूट्रेलिटी तक पहुंचने का वादा भी किया है। कहीं बाढ़, कहीं सूखा

तो कहीं बेमौसम बरसात के चलते 2023 को दुनिया भर के मौसम वैज्ञानिक एक ऐसा वर्ष मान रहे हैं, जहां से पृथ्वी का पर्यावरण एक अज्ञात क्षेत्र यानी संकटकालीन परिवेश में प्रवेश कर रहा है। जाहिर है कि कॉप-28 में अब निर्णायक एवं कार्यकारी स्तर पहुंचना होगा, सिर्फ लुभावनी योजनाओं एवं भाषणों से काम नहीं चलने वाला, जैसा कि अभी इसमें शामिल 198 देश और उनके प्रतिनिधि कोरी खानापूर्ति करते आए हैं। कॉप की बैठकें भले ही अच्छे भविष्य की रूपरेखा बनाने के लिए आयोजित होती रही हों, लेकिन एक पेरिस समझौते को छोड़ दें तो अभी तक इसमें समस्या के समाधान के लिये बहुत काम नहीं हो पाया है। सभी प्रतिनिधि देशों को इस विकराल एवं ज्वलंत समस्या से निजात पाने के लिये न केवल कमर कसनी होगी, बल्कि आर्थिक सहयोग भी करना होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कॉप-28 में भाग लेने दुबई पहुंच गये हैं। उन्होंने ग्लासगो में आयोजित हुए अंतरराष्ट्रीय जलवायु सम्मेलन (सीओपी 26) में बढ़ते पर्यावरण संकट में पिछड़े देशों की मदद की वकालत की ताकि गरीब आबादी सुरक्षित जीवन जी सके। मोदी ने अमीर देशों को स्पष्ट संदेश दिया कि धरती को बचाना उनकी प्राथमिकता होनी ही चाहिए, वे अपनी इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। दरअसल कार्बन उत्सर्जन घटाने के मुद्दे पर अमीर देशों ने जैसा रुख अपनाया हुआ है, वह इस संकट को गहराने वाला है। जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभावों ने भारत ही नहीं पूरी दुनिया की चिंताएं बढ़ा दी हैं। जलवायु संकट से निपटने के लिए अमीर एवं शक्तिशाली देशों की उदासीनता एवं लापरवाह रवैया को लेकर भारत की चिंता गैरवाजिब नहीं है। दुनिया को जलवायु परिवर्तन की चुनौती को गंभीरता से लेना होगा और इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए कदम उठाने होंगे। अभी तक अपने स्वार्थ की वजह से दुनिया के कई देश इस दिशा में तेजी से कदम नहीं उठाते, खासतौर पर अमीर देश। दरअसल, नेट जीरो का लक्ष्य हासिल करने के लिए ग्रीन एनर्जी में भारी-भरकम निवेश करना होगा और प्रदूषण फैलाने वाले ईंधनों का इस्तेमाल घटाना होगा। लेकिन इससे कुछ समय के लिए आर्थिक ग्रोथ में कमी आ सकती है। इस वजह से भी एक हिचक कई देशों में दिखती है, जिसके कारण आने वाली पीढ़ियों एवं धरती पर पर्यावरण का भविष्य खराब हो सकता है।

भारत में ग्लोबल तापमान के चलते होने वाला विस्थापन अनुमान से कहीं अधिक है। मौसम का मिजाज बदलने के साथ देश के अलग-अलग हिस्सों में प्राथमिक आपदाओं की तीव्रता आई हुई है। भारत में जलवायु परिवर्तन पर इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फार एनवायरमेंट एंड डवलपमेंट की जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि बाढ़-सूखे के चलते फसलों की तबाही और चक्रवातों के कारण मछली पालन में गिरावट आ रही है।

देश के भीतर भू-स्खलन से अनेक लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। भू-स्खलन उत्तराखंड एवं हिमाचल जैसे दो राज्यों तक सीमित नहीं बल्कि केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, सिक्किम और पश्चिम बंगाल की पहाड़ियों में भी भारी वर्षा, बाढ़ और भूस्खलन के चलते लोगों की जानें गई हैं, इन प्राकृतिक आपदाओं के शिकार गरीब ही अधिक होते हैं, गरीब लोग प्राथमिक विपदाओं का दंश नहीं झेल पा रहे और अपनी जमीनों से उखड़ रहे हैं। गरीब लोग सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन कर चुके हैं। विस्थापन लगातार बढ़ रहा है। महानगर और घनी आबादी वाले शहर गंभीर प्रदूषण के शिकार हैं, जहां जीवन जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। भारत में नदियों के पानी के बंटवारे को लेकर कई राज्यों की सरकारें आपस में उलझी हैं। किसी और को अपना पानी किसी भी हाल में न देने या किसी और से हर सूरत में पानी छीन लाने के नाम पर चुनाव लड़े और जीते जा रहे हैं। लेकिन नदियों की हालत कैसे सुधरे, उनका पानी कैसे बढ़ाया जाए और उन्हें कचरे का ढेर बनने से कैसे रोका जाए, यह बात राजनीति तो क्या नागरिक समाज के अजेंडे से भी बाहर है। एक आधुनिक कहावत है कि अपने ग्रह के साथ हम ऐसे खिलवाड़ कर रहे हैं, जैसे इसके विकल्प के रूप में कोई और ग्रह हमने बक्से में बंद कर रखा हो- यह बिगड़ जाएगा तो क्या हुआ, उससे खेल लेंगे! अमेरिका की नैशनल इंटेलिजेंस इस्टीमेट रिपोर्ट में भारत को पाकिस्तान और अफगानिस्तान सहित उन 11 देशों में शामिल किया गया है, जो जलवायु परिवर्तन के लिहाज से चिंताजनक श्रेणी में माने गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ये ऐसे देश हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण सामने आने वाली पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों से निपटने की क्षमता के लिहाज से खासे कमजोर हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि आने वाले समय में विश्व तापमान की दशा तय करने में चीन और भारत की अहम भूमिका रहने वाली है। आखिर चीन दुनिया का सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जक देश है। भारत भले चौथे नंबर पर है, लेकिन चीन के साथ जुड़ इसलिए जाता है क्योंकि इन दोनों ही देशों में उत्सर्जन की मात्रा साल-दर-साल बढ़ रही है। यह सर्वविदित है कि इंसान व प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। इंसान के लोभ, सुविधावाद एवं तथाकथित विकास की अवधारणा ने पर्यावरण का भारी नुकसान पहुंचाया है, जलवायु संकट एवं बढ़ते तापमान के कारण न केवल नदियां, वन, रेगिस्तान, जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं बल्कि ग्लेशियर भी पिघल रहे हैं, जो विनाश का संकेत तो है ही, जिनसे मानव जीवन भी असुरक्षित होता जा रहा है। जरूरत है कि कॉप-28 अमीर राष्ट्रों को संवेदनशील एवं उदार होने के साथ-साथ प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने एवं उसके प्रति जागरूक होने के लिए प्रेरित करें, ताकि हम जलवायु महासंकट से मुक्ति पा जाये एवं 2050 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। ग्लोबल वार्मिंग का खतरनाक प्रभाव ही है कि गर्मियां आग उगलने लगी हैं और सर्दियों में गर्मी का अहसास होने लगा है। इसकी वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर तीव्रगति से बढ़ा रहे हैं। पर्यावरण के निरंतर बदलते स्वरूप ने निःसंदेह बढ़ते दुष्परिणामों पर सोचने पर मजबूर किया है। औद्योगिक गैसों के लगातार बढ़ते उत्सर्जन और वन आवरण में तेजी से हो रही कमी के कारण ओजोन गैस की परत का क्षरण हो रहा है। इस अस्वाभाविक बदलाव का प्रभाव वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तनों के रूप में दिखलाई पड़ता है। उससे मुक्ति के लिये जागना होगा, संवेदनशील होना होगा एवं विश्व के शक्तिसम्पन्न राष्ट्रों को सहयोग के लिये कमर कसनी होगी तभी हम जलवायु संकट से निपट सकेंगे अन्यथा यह विश्व मानवता के प्रति बड़ा अपराध होगा।

संस्कृति के पन्नों से: कैसे बना विष्णु का सुदर्शन चक्र और शिव का त्रिशूल

देवताओं के शिल्पकार विश्वकर्मा की एक कन्या थी। नाम था संज्ञा। विश्वकर्मा ने उसका विवाह सूर्यदेव से कर दिया। सूर्यदेव और संज्ञा की तीन संतान हुईं। वैवस्वत, यमुना और यमदेव। उनका वैवाहिक जीवन वैसे तो सुखमय था किंतु संज्ञा से सूर्य का कठोर ताप और तेज सहन नहीं होता था। संज्ञा ने बहुत प्रयास किया किंतु वह अधिक देर तक सूर्य के निकट नहीं रह पाती थी। यहाँ तक संज्ञा की त्वचा भी काली पड़ने लगी थी। एक दिन संज्ञा के संयम का बांध ढह गया।

हालांकि इसमें सूर्यदेव का कोई दोष नहीं था फिर भी संज्ञा ने निश्चय किया कि वह सूर्यदेव के साथ तब तक नहीं रहेगी जब तक उनका ताप कम नहीं हो जाता। परंतु सूर्य को अचानक छोड़कर जाना भी संज्ञा के लिए सहज नहीं था। तब उसे एक युक्ति सूझी। संज्ञा ने एक स्त्री को प्रकट किया, जो बिल्कुल उसी की तरह दिखती थी। संज्ञा की प्रतिच्छाया होने के कारण संज्ञा ने उसका नाम भी छाया रखा। फिर संज्ञा ने छाया को सूर्य की पत्नी बनकर रहने के लिए मना लिया और उसे अपनी पहचान छिपाकर रखने का आदेश दिया। छाया ने भी संज्ञा को आश्वासन दिया कि वह किसी को यह रहस्य नहीं बताएगी किंतु यदि किसी ने उसके केश खींचे तो फिर वह सच बोल देगी। छाया को सूर्यदेव के पास छोड़कर संज्ञा, अपने पिता विश्वकर्मा के घर लौट आई। पिता के पूछने पर संज्ञा ने उन्हें सारी बात बता दी। विश्वकर्मा के अनेक बार समझाने पर भी संज्ञा अपने पति के पास लौटने के लिए तैयार नहीं हुई। इधर छाया, सूर्य की पत्नी बनकर रहने लगी। यहां तक कि सूर्य से छाया ने तापी नाम की पुत्री और सावर्णी एवं शनि नाम के दो पुत्रों को भी जन्म दिया। छाया की अपनी संतान हो गईं तो उसका लगाव संज्ञा के बच्चों के प्रति कम होने लगा।

समस्त संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्यदेव से भला क्या छिप सकता था! उन्हें छाया पर संदेह हो गया तो एक दिन उन्होंने पूछताछ की। छाया ने असल बात छिपाने का बहुत प्रयास किया। फिर सूर्यदेव को क्रोध आ गया और उन्होंने छाया के केश पकड़ लिए। तभी छाया ने सूर्यदेव को सारी बात सच-सच बता दी। संज्ञा ने जो किया, उसे सुनकर सूर्य को दुख हुआ और क्रोध भी आया। वह तुरंत विश्वकर्मा के पास पहुंचे। विश्वकर्मा ने संज्ञा के व्यवहार के लिए सूर्य से क्षमा तो मांग ली किंतु उन्होंने संज्ञा को सूर्य के ताप और प्रकाश से होने वाली परेशानी के विषय में भी बता दिया। तब जाकर सूर्यदेव को एहसास हुआ कि उनके तेज प्रकाश और ताप के कारण उनकी पत्नी संज्ञा के लिए उनके साथ रहना कठिन हो गया था। परंतु अपने ताप को कम करना सूर्य के वश में नहीं था। उन्होंने विश्वकर्मा से ही इस समस्या का हल निकालने का अनुरोध किया। मैं छाया के साथ नहीं, अपितु संज्ञा के साथ रहना चाहता हूं। आप ही बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए?सूर्य ने पूछा। इस पर विश्वकर्मा ने सूर्य से कहा यह आपके अत्यधिक तेज और ताप का परिणाम है। मैं आपके तेज का कुछ अंश काटकर अलग कर देता हूँ। चमक और ताप में कमी आ जाएगी तो संज्ञा की परेशानी भी दूर हो जाएगी। सूर्य ने विश्वकर्मा की बात मान ली। सूर्य की मूल आभा को विश्वकर्मा ने कम कर दिया। इससे तुरंत ही सूर्य का ताप कम हो गया। सूर्य का बदला हुआ स्वरूप देखकर संज्ञा को बहुत राहत मिली और वह फिर से उनके संग रहने के लिए मान गई। ऐसा करने से सूर्य द्वारा संसार को दिए जा रहे प्रकाश और ताप पर भी विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। विश्वकर्मा के सामने अब यह प्रश्न था कि सूर्य के तेज का जो अंश उन्होंने काटकर अलग किया था, उसका क्या उपयोग किया जाए। तब काफी विचार-विमर्श करने के उपरांत विश्वकर्मा ने सूर्य के अतिरिक्त स्वर्णिम तेज से तीन दिव्य वस्तुओं का निर्माण किया - सुदर्शन चक्र, पुष्पक विमान और त्रिशूल। पुष्पक विमान, विश्रवानंदन कुबेर को मिला और त्रिशूल को भगवान शिव ने धारण कर लिया। सुदर्शन चक्र को धारण करने का अधिकार भगवान विष्णु को प्राप्त हुआ। इस प्रकार, संज्ञा का कष्ट दूर करने हेतु सूर्यदेव के अतिरिक्त तेज से सृष्टि की तीन दिव्य वस्तुओं का निर्माण संभव हो पाया।

राष्ट्रीय सुरक्षा ताकत के इस्तेमाल पर सावधान करती है हेनरी किसिंजर की विरासत

महाशक्ति देश अमेरिका क्या करता है, और अमेरिका को क्या करना चाहिए-हेनरी किसिंजर इन दोनों के फर्क के सबसे प्रभावी प्रतीक थे। उनकी विदेश नीति में ताकत के इस्तेमाल का महत्व था, जिसमें मानवीय अस्तित्व की जगह कम थी। वर्ष 1969 से 1977 तक हेनरी किसिंजर ने खुद को सबसे प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में स्थापित किया। उस दौर की एक अवधि में वह एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश मंत्री की बिल्कुल अलग-अलग जिम्मेदारियां एक ही साथ निभाईं, नतीजतन उस दौरान अमेरिकी विदेश नीति की दिशा तय करने और उस पर अमल करने की सर्वोच्च जिम्मेदारी उन पर थी। जर्मन यहूदी मूल के होने और अपने खास उच्चारण के कारण अमेरिकी सत्ता राजनीति में जहां वह सबसे अलग थे, वहीं ताकत का बेहद सहजता से इस्तेमाल करने के कारण वह उस अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की भूमिका में स्वाभाविक थे, जिसने 20वीं सदी में अपनी क्षमता का विस्तार किया। हेनरी किसिंजर के रिटायर होने के दशकों बाद मैंने शीतयुद्ध और 9/11 की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में आठ साल तक अपनी जिम्मेदारी निभाई। हेनरी किसिंजर अपनी गुरुतर भूमिका से जरा भी असहज नहीं थे। उनके मुताबिक, पद की साख इसमें नहीं कि हमें क्या करना चाहिए, बल्कि इसमें है कि हमने क्या किया। हालांकि वैसे में मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के प्रति अमेरिकी प्रतिबद्धता ढुलमुल लगने लगती थी। उन्होंने वियतनाम के खिलाफ अमेरिकी युद्ध को सिर्फ व्यापक रूप ही नहीं दिया, कंबोडिया और लाओस तक उसका विस्तार भी किया। वहां अमेरिका ने ऐसी गहन बमबारी की, जैसी उसने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी और जापान पर भी नहीं की थी। उस बमबारी का, जिसमें कई बार निर्दोष नागरिकों का संहार भी हुआ, कोई सार्थक नतीजा नहीं निकला, हां, इससे यह संदेश जरूर मिला कि अपनी पराजय सामने होने पर अमेरिकी नाराजगी कितनी संहारक हो सकती है। यह विडंबना ही है कि शीतयुद्ध के दौर में मुक्त विश्व की तरफ से हेनरी किसिंजर ने व्यापक नरसंहार के अभियानों को समर्थन दिया - चाहे वह बंगालियों के खिलाफ पाकिस्तान का अभियान रहा हो या ईस्ट तिमोर के लोगों के खिलाफ इंडोनेशिया का। किसिंजर पर आरोप लगा कि चिली में उन्होंने सैन्य तख्तापलट की जमीन तैयार की, जिसका नतीजा निर्वाचित कम्युनिस्ट राष्ट्रपति साल्वाडोर अलेंदे की हत्या और फिर तानाशाही शासन के उथल-पुथल भरे दौर के रूप में सामने आया। विचारधारा की लड़ाई के संदर्भ में किसिंजर अपनी इन कवायदों को उचित ठहराते थे, जिससे सोवियत संघ और क्रांतिधर्मी कम्युनिज्म का खात्मा संभव हुआ। पर इस अमेरिकी सोच की तीखी आलोचना हुई। दुनिया को इसका क्रूर संदेश यह था कि अमेरिका सिर्फ अपने देश में लोकतंत्र की परवाह करता है, दूसरे देशों में नहीं। किसिंजर अमेरिका की मजबूत छवि निर्माण के आग्रही थे और चाहते थे कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अमेरिका के मुताबिक फैसले लेने से जो इन्कार करें, उन्हें उसकी कीमत चुकानी पड़े। लाओस पर बमबारी, चिली में तख्तापलट या पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में बंगालियों के संहार से शीतयुद्ध का संबंध जोड़ पाना मुश्किल है। पर यह दुनिया को देखने का किसिंजर का ठंडा और निरपेक्ष रवैया ही था, जिसके कारण अधिनायकवादी देश अमेरिका के पाले में आए, सोवियत संघ से अमेरिका के रिश्ते बेहतर होने से हथियारों की होड़ खत्म हुई, और चीन में खुलेपन की आर्थिक नीति ने सोवियत संघ से उसके रिश्ते बिगाड़ दिए। इसी आर्थिक नीति ने चीन को आर्थिक रूप से शक्तिशाली देश के रूप में स्थापित किया और अपने करोड़ों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला। चीन में आर्थिक सुधारों की शुरुआत जिन देंग श्याओ पिंग ने की थी, उन्होंने ही तिआनमन चौक पर जुटे प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी करने के आदेश दिए थे, और यही किसिंजर की अस्पष्ट विरासत के बारे में बताने के लिए काफी है। अमेरिका-चीन की निकटता ने शीतयुद्ध का परिणाम तय किया और इससे चीनियों का जीवन स्तर सुधरा। दूसरी तरफ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी वैश्विक भू-राजनीति में अमेरिका के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभरी, जो न सिर्फ दुनिया में अधिनायकवादी राजनीति का प्रतीक बनी, बल्कि जिसने लाखों लोगों को यातना शिविरों में डाला और उस ताइवान पर हमले की धमकी दी, जिसकी अनिश्चित राजनीतिक स्थिति का हल किसिंजर के कारण ही नहीं निकल पाया। सौ साल के किसिंजर ने आधी उम्र सरकार से बाहर आने के बाद गुजारी। दशकों तक राजनेताओं और दूसरे दिग्गजों के सम्मेलन में उनकी छवि अति विशिष्ट व्यक्ति की रही, तो शायद इसलिए कि वह कुछ लोगों के अति शक्तिशाली होने का औचित्य बौद्धिक तरीके से साबित कर सकते थे। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जो वैश्विक मामलों में उनकी मजबूत छवि की ही द्योतक थीं; आखिरकार इतिहास हमेशा किसिंजर जैसे ताकतवर लोगों ने ही लिखे हैं, महाशक्ति देश की बमबारी का शिकार हुए लोगों ने नहीं। अलबत्ता किसिंजर शायद यह जानते थे कि महाशक्ति देश की गलतियों को इतिहास माफ कर देता है। वियतनाम युद्ध के कुछ दशक बाद वे तमाम देश अमेरिका के साथ व्यापारिक रिश्ते में बंध गए, जिन पर अमेरिका ने बमबारी की थी। बांग्लादेश और ईस्ट तिमोर स्वतंत्र देश हैं, जो अमेरिकी मदद लेते हैं। चिली का नेतृत्व एक समाजवादी के हाथों में है, जिसकी रक्षामंत्री अलेंदे की पोती हैं। आज दुनिया में अधिनायकवाद और आक्रामक राष्ट्रवाद की लहर चल रही है। यूक्रेन पर रूस के हमले और गाजा में इस्राइली आक्रमण के बीच अमेरिकी रवैया दुखद है। अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के एक धड़े ने सत्ता तक पहुंचने को ही लोकतंत्र समझ लिया है। इन सबके लिए हेनरी किसिंजर जिम्मेदार नहीं हैं। पर किसिंजर की विरासत हमें सावधान भी करती है। हमें समझना चाहिए कि लाओस के बच्चे भी अमेरिकी बच्चों की तरह गरिमापूर्ण जीवन के हकदार हैं, और चिली को भी स्वतः फैसले लेने का उतना ही अधिकार है, जितना अमेरिका को है। यही सिद्धांत अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा का आधार होना चाहिए। इसे भूलकर हमने जोखिम ही आमंत्रित किया।

जी-20 की अध्यक्षता और नई शुरुआत, हमारी उपलब्धियों के बाद अगला अध्याय

भारत द्वारा जी-20 की अध्यक्षता ग्रहण करने के आज 365 दिन पूरे हो गए हैं। यह वसुधैव कुटुंबकम की भावना को प्रतिबिंबित करने, इसके लिए पुनः प्रतिबद्ध होने और इसे जीवंत बनाने का क्षण है। पिछले वर्ष जब भारत को यह जिम्मेदारी मिली थी, तब विश्व कोविड-19 महामारी से उबरने के प्रयासों, बढ़ते जलवायु खतरों, वित्तीय अस्थिरता और विकासशील देशों में ऋण संकट जैसी विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहा था। इसके अलावा कमजोर होता मल्टीलेटरलिज्म यानी बहुपक्षवाद इन चुनौतियों को और गंभीर बना रहा था।

जी-20 का अध्यक्ष बनने के बाद भारत ने दुनिया के सामने जीडीपी केंद्रित सोच से आगे बढ़कर मानव-केंद्रित प्रगति का विजन प्रस्तुत किया। भारत ने दुनिया को यह याद दिलाने का प्रयास किया कि कौन-सी चीजें हमें जोड़ती हैं। अंततः भारत के इन प्रयासों का परिणाम आया, वैश्विक संवाद आगे बढ़ा और कुछ देशों के सीमित हितों पर कई देशों की आकांक्षाओं को महत्व दिया गया। समावेशी, महत्वाकांक्षी, कार्रवाई-उन्मुख और निर्णायक-ये चार शब्द जी-20 के अध्यक्ष के रूप में भारत के दृष्टिकोण को परिभाषित करते हैं। नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन (एनडीएलडी), जिसे सभी जी-20 सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से अपनाया गया है, इन सिद्धांतों पर कार्य करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। समावेश की भावना हमारी अध्यक्षता के केंद्र में रही है। जी-20 के स्थायी सदस्य के रूप में अफ्रीकी संघ (एयू) को शामिल करने से 55 अफ्रीकी देशों को इस समूह में जगह मिली, जिससे इसका विस्तार वैश्विक आबादी के 80 प्रतिशत तक पहुंच गया है। भारत द्वारा अपनी तरह की पहली बैठक च्वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ समिटज् ने बहुपक्षवाद की एक नई शुरुआत की। इससे एक ऐसे युग की शुरुआत हुई है, जहां विकासशील देशों को ग्लोबल नैरेटिव की दिशा तय करने का उचित अवसर प्राप्त होगा। समावेशिता की वजह से ही जी-20 में भारत के घरेलू दृष्टिकोण का भी प्रभाव दिखा। %जन भागीदारी% कार्यक्रमों के माध्यम से जी-20 1.4 अरब नागरिकों तक पहुंचा और इस प्रकिया में सभी राज्यों एवं केंद्र-शासित प्रदेशों को भागीदार के रूप में शामिल किया गया। भारत ने यह सुनिश्चित किया कि मुख्य विषयों पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान जी-20 के दायित्वों के अनुरूप विकास के व्यापक लक्ष्यों की ओर हो। 2030 के एजेंडे को ध्यान में रखते हुए भारत ने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) में तेजी लाने के लिए जी-20 का 2023 ऐक्शन प्लान पेश किया। इसके लिए भारत ने स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता, पर्यावरणीय स्थिरता सहित परस्पर जुड़े मुद्दों पर व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। जी-20 के माध्यम से हमने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर रिपॉजिटरी को सफलतापूर्वक पूरा किया, जो वैश्विक तकनीकी सहयोग की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति है। कुल 16 देशों के 50 से अधिक डीपीआई को शामिल करने वाली यह रिपॉजिटरी समावेशी विकास की शक्ति का लाभ उठाने के लिए ग्लोबल साउथ को डीपीआई का निर्माण करने, उसे अपनाने और व्यापक बनाने में मदद करेगी। वन अर्थ% की भावना के तहत हमने तात्कालिक, स्थायी और न्यायसंगत बदलाव लाने के महत्वाकांक्षी एवं समावेशी लक्ष्य पेश किए। इस रोडमैप में रोजगार एवं इको सिस्टम एक दूसरे के पूरक हैं। इसके अलावा घोषणापत्र में जलवायु न्याय और समानता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया है, जिसके लिए ग्लोबल नॉर्थ से पर्याप्त वित्तीय और तकनीकी सहायता देने का अनुरोध किया गया है। पहली बार विकास के वित्तपोषण से जुड़ी कुल राशि में भारी बढ़ोतरी की जरूरत स्वीकार की गई, जो अरबों डॉलर से बढ़कर खरबों डॉलर हो गई है। जी-20 ने यह माना कि विकासशील देशों को वर्ष 2030 तक अपने च्राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी)ज् को पूरा करने के लिए 59 खरब (5.9 ट्रिलियन) डॉलर की आवश्यकता है। इतने ज्यादा संसाधन की आवश्यकता को देखते हुए जी-20 ने बेहतर, ज्यादा विशाल और अधिक प्रभावकारी मल्टीलैटरल डेवलपमेंट बैंक के महत्व पर विशेष जोर दिया। इसके साथ-साथ भारत संयुक्त राष्ट्र में सुधारों को लागू करने, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे प्रमुख संस्थानों के पुनर्गठन में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जिससे और भी अधिक न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था सुनिश्चित होगी। नई दिल्ली घोषणापत्र में महिला-पुरुष समानता को केंद्र में रखा गया, जिसकी परिणति अगले वर्ष महिलाओं के सशक्तीकरण पर एक विशेष वर्किंग ग्रुप के गठन के रूप में होगी। भारत का महिला आरक्षण विधेयक, 2023, जिसमें भारत की लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की एक तिहाई सीटों को महिलाओं के लिए आरक्षित किया गया है, महिलाओं के नेतृत्व में विकास के प्रति हमारी वचनबद्धता का प्रतीक है। नई दिल्ली घोषणापत्र इन प्रमुख प्राथमिकताओं में सहयोग सुनिश्चित करने की एक नई भावना का प्रतीक है, जो नीतिगत स्पष्टता, विश्वसनीय व्यापार और महत्वाकांक्षी जलवायु कार्रवाई पर केंद्रित है। यह बड़े गर्व की बात है कि हमारी अध्यक्षता के दौरान जी-20 ने 87 परिणाम हासिल किए और 118 दस्तावेज अपनाए, जो अतीत की तुलना में उल्लेखनीय रूप से काफी अधिक है।

जी-20 की हमारी अध्यक्षता के दौरान भारत ने भू-राजनीतिक मुद्दों और आर्थिक प्रगति एवं विकास पर उनके प्रभावों पर व्यापक विचार-विमर्श की अगुवाई की। आतंकवाद और नागरिकों की हत्या पूरी तरह से अस्वीकार्य है, और हमें जीरो-टॉलरेंस की नीति अपनाकर इससे निपटना चाहिए। हमें शत्रुता से परे जाकर मानवतावाद को अपनाना होगा और यह दोहराना होगा कि यह युद्ध का युग नहीं है। मुझे अत्यंत खुशी है कि हमारी अध्यक्षता के दौरान भारत ने असाधारण उपलब्धियां हासिल कीं - इसने बहुपक्षवाद में नई जान फूंकी, ग्लोबल साउथ की आवाज बुलंद की, विकास की हिमायत की, और हर जगह महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए लड़ाई लड़ी।

महिलाओं में होती है दूसरों की खुशी के लिए खुद को बदलने की क्षमता, कहीं ये बीमारी तो नहीं

दूसरों की नजरों में अच्छा बनना और हमेशा बने रहना संभव नहीं है। अगर आप भी लगातार दूसरों की नजरों में अच्छा बनने का प्रयास करती हैं तो सतर्क हो जाएं, क्योंकि यह चुड गर्ल सिंड्रोमज् का संकेत हो सकता है। क्या आप ऐसी लड़की हैं, जो सभी का ध्यान और प्यार पाने के लिए हमेशा अच्छी बनी रहना चाहती हैं। अच्छी से आशय है, ऐसी लड़की जिसे जमाना अच्छा समझे, जो सबकी बात सिर झुका कर माने, उनके अनुरूप कपड़े पहने और जैसा वे कहे, बिल्कुल वैसा ही करें। आज लोगों के मन में लड़कियों को लेकर अलग तरह की सोच है। वे मानते हैं कि लड़की सुंदर हो, समझदार हो और सर्वगुण संपन्न हो पर जैसी भी हो उनकी भावनाओं के अनुरूप हो। वे पारंपरिक रीति-रिवाज जानती हो व मानती भी हो और आकर्षक दिखने के साथ ही वह पारिवारिक भी हो। आज की दुनिया में अच्छी लड़की होना आसान नहीं है, क्योंकि समाज का मानना है कि महत्वाकांक्षी बनो, लेकिन प्राथमिकता में केवल परिवार को रखो! ऐसी स्थिति में लड़कियां दूसरों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश में कब अपने आप को बदल लेती हैं, उन्हें खुद भी पता नहीं चलता, जिसे गुड गर्ल सिंड्रोम कहते हैं। यानी अच्छा बनने की कोशिश में अपनी नैसर्गिक क्षमताओं को भुला देना। ऐसे हालात न सिर्फ महिलाओं की पर्सनालिटी पर, बल्कि उनके फैसले लेने की क्षमता पर भी बुरा असर डालते हैं। बर्मिंघम की क्लिनिकल मनोवैज्ञानिक डॉ. ललिता सुगलानी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में अच्छी लड़की को लेकर आठ अच्छाइयों का जिक्र किया और उन आदर्शों का भी खुलासा किया, जो समाज उनसे चाहता है। इन आदर्श गुणों में था, हमेशा खुश रहो दूसरों की अपेक्षा के मुताबिक संपूर्ण बनने की कोशिश करो ज्यादा से ज्यादा अच्छा बनने की कोशिश करो किसी बात को ठान लो तो उसे पूरा करो अपने आपको हमेशा शंका में रखो कि कहीं कोई गलती न हो, खुद को हमेशा दूसरों की सेवा के लिए तैयार करो अपने व्यवहार को सबके अनुरूप बनाओ आज्ञाकारी बेटी बनी रहो। यह आठों आदर्श गुण समाज ने महिलाओं के लिए तय किए हैं। वह कहती है कि गुड गर्ल सिंड्रोम सिर्फ लड़कियों तक सीमित हो ये जरुरी नहीं, ये लड़कों पर भी लागू होता है। डॉ. सुगलानी के मुताबिक, यह सिंड्रोम दर्शाता है कि कैसे लड़कियां दूसरों की खातिर सामाजिक रूप से प्रेरित होती हैं। बचपन से ही उन्हें सिखाया जाता है कि प्यार और सुरक्षा पाने के लिए हमें अपने आस-पास के लोगों को खुश रखना जरुरी है। फिर वह दूसरों की इच्छाओं को समझकर खुद को उस रूप में ढालती हैं और उनकी अपेक्षाओं को प्राथमिकता देती हैं।

इस प्रक्रिया ने एक तरह से हमारे व्यक्तित्व को दबा दिया, जो वास्तव में एक तरह से आत्म-परित्याग का ही रूप है। कई लड़कियां इस अवधारणा का बड़े होने तक ही पालन नहीं करतीं, बल्कि इसे जीवन का फार्मूला ही बना लेती हैं। आज भले ही लड़कियों को पहले की अपेक्षा ज्यादा फॉरवर्ड माना जाता हो पर ये संख्या बहुत ज्यादा नहीं है, जिसका सीधा सा मतलब है कि परिवार उनसे उतना ही बदलने की अपेक्षा करता है, जितना उनके लिए जरुरी हो।

दूसरों को खुश करने के बाद भी लड़कियों की सराहना नहीं

आश्चर्य कि बात तो यह है कि इतना सब करने के बाद भी लड़कियों के काम की सराहना नहीं की जाती। आखिर उनका भी उतना ध्यान क्यों नहीं रखा जाता, जितना वे दूसरों का रखती हैं। लड़कियों को लेकर बताए गए ये आठ आदर्श या मापदंड अक्सर दूसरों को खुश रखने में ही खर्च हो जाते हैं। इस बीच, संभावित गलती के डर या दूसरों को निराश न करने की कोशिश से उनकी असल सोच भी प्रभावित होती है और अपने आपको उन आदर्शों पर खरा उतरने का प्रयास तनाव और चिंता को जन्म देता है और इससे आपकी रचनात्मकता सीमित होती जाती है और आप दूसरों की नजर में मूर्ख कहलाती हैं।

गुड गर्ल सिंड्रोम का संकेत

कभी किसी बात के लिए इंकार न करना भी लड़कियों के लिए अच्छा माना जाता। लड़कियां सबके सामने अच्छी छवि बनाए रखने के लिए ऐसा करती भी हैं। अगर आप भी दूसरों की भावनाओं को ठेस न पहुंचाने के लिए न नहीं कह पातीं, तो इसका संकेत है कि आपको गुड गर्ल सिंड्रोम है। यह सिंड्रोम लड़कियों को अक्सर मनोवैज्ञानिक रूप से टॉक्सिक, अपमानजनक और अनहेल्दी रिलेशनशिप के प्रति संवेदनशील बनाता है। परिवार की इच्छा की वजह से परफेक्ट दिखना लड़कियों की मजबूरी भी होती है और समाज की नकारात्मक प्रतिक्रिया से बचने के लिए इसे जरुरी भी समझा जाता है। जैसे-जैसे वे बड़ी होती जाती हैं, इसका नतीजा %अनहेल्दी बिहेवियर% के रूप में सामने आने लगता है।

दूसरों को खुद से पहले रखना

किसी न किसी रूप में जो लड़कियां गुड गर्ल सिंड्रोम से प्रभावित होती हैं, वे दूसरों की जरूरतों को अपनी इच्छाओं से ऊपर रखती है। लेकिन इस स्थिति में खुद की जगह बनाने के लिए उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। यदि वास्तव में लड़कियां गुड गर्ल सिंड्रोम से उभरना चाहती हैं तो इसके लिए जरुरी है कि वे लोग क्या कहेंगे की सोच से ऊपर उठें, क्योंकि यही वे धारणा उन्हें दब्बू बना देती है। इसके अलावा किसी पर भी भावनात्मक रूप से इतना निर्भर न रहें कि वह आपका शोषण करने लगे। समाज के हर रिश्ते के लिए एक लिमिट सेट करना सीखें। दूसरों से पहले अपने आपसे प्यार करें तभी दूसरे आपकी इज्जत करेंगे और आपसे प्यार करेंगे। इसके लिए जरूरी है कि अपने मन की सुने, दूसरों की नहीं। डॉ. सुगलानी कहती हैं, यह याद रखना जरूरी है कि हमारा मूल्य इस बात से निर्धारित नहीं होता है कि हम दूसरों को कितना खुश करते हैं, बल्कि यह स्वयं को प्रामाणिक रूप से व्यक्त करने की हमारी क्षमता से निर्धारित होता है।

अब हालात वैसे नहीं

प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. दिव्या गुप्ता कहती हैं, हमारे समाज की जो पुरातन सोच है वह निश्चित रूप से समय, काल और परिस्थिति की वजह से बनी होगी। इस तरह की सोच को संस्कारों की देन भी कहा जाता रहा है। लेकिन समय के साथ समाज को भी इसमें बदलाव लाना जरुरी हो गया, क्योंकि अब लड़कियों को न तो सामाजिक बंधनों की जरुरत है और न ही आज सामाजिक हालात उस तरह के हैं। अब लड़कियों में भी जिम्मेदारी की भावना बदल रही है और वे जागरूक हो रही हैं। दरअसल, ये संक्रमणकाल है, जिसे समाज को भी महसूस करना होगा और लड़कियों को भी। दोनों तरफ से पहल जरुरी है। समाज और लड़कियों दोनों को दो-दो कदम आगे बढ़ाने होंगे तभी इस समस्या का हल निकलेगा

क्या काम करती हैं टीम इंडिया के खिलाड़ियों की पत्नी

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच विश्व कप 2023 का फाइनल मुकाबला 19 नवंबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में हो रहा है। खेल के मैदान पर भारत और ऑस्ट्रेलियाई टीम के खिलाड़ी अपना शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं तो वहीं उनका हौसला अफजाई करने के लिए दर्शकों के बीच स्टैंड में खिलाड़ियों का परिवार, बच्चे और पत्नी मौजूद हैं। टीम इंडिया के स्टार खिलाड़ियों के बारे में तो आप जानते हैं। अक्सर ही सोशल मीडिया पर खिलाड़ी अपने परिवार के साथ तस्वीरें शेयर करते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि इन खिलाड़ियों की लेडी लक यानी पत्नी खुद क्या करती हैं? विराट कोहली के पत्नी अनुष्का शर्मा अभिनेत्री हैं लेकिन रोहित शर्मा, रवींद्र जडेजा की पत्नी के करियर के बारे में पता है? टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली की पत्नी अनुष्का शर्मा अभिनेत्री हैं। बॉलीवुड की जानी मानी एक्ट्रेस अनुष्का विराट की तरह की सुर्खियों में रहती हैं। अपने करियर में बेहतरीन फिल्मों में काम कर चुकी हैं भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा मैदान में हिटमैन के रूप में जाने जाते हैं। रोहित शर्मा की पत्नी का नाम रितिका सजदेह है। रितिका एक प्रोफेशनल खेल मैनेजर रह चुकी हैं। वह रोहित शर्मा के क्रिकेट मैनेजर के तौर पर भी काम कर चुकी हैं। रवींद्र जडेजा की पत्नी के उस वीडियो ने दर्शकों का दिल जीत लिया था, जब मैच में टीम की जीत के बाद वह खेल में मैदान में पर साड़ी में पहुंची थीं और उनके पैर छूकर जीत की बधाई दी थी। रवींद्र जडेजा की पत्नी का नाम रिवाबा जडेजा है। रिवाबा राजनीति में हैं और भाजपा की सांसद हैं। जसप्रीत बुमराह की पत्नी संजना गणेशन बेहद स्टाइलिश और खूबसूरत हैं। संजना गणेशन स्पोर्ट्स प्रेजेंटर हैं। संजना अपनी एंकरिंग को लेकर काफी प्रसिद्ध हैं। टीम इंडिया के खिलाड़ी केएल राहुल की अथिया शेट्टी संग इसी साल जनवरी में शादी हुई है।

दुर्गा शक्ति नागपाल के एक आइडिया से महिलाएं कर रही हैं अच्छी कमाई

आप शायद कई ऐसे आईएएस अफसर को जानते हों, जिन्होंने अपनी सर्विस के दौरान कोई न कोई बहादुरी का काम क्या हो? ऐसी ही एक आईएएस अफसर हैं दुर्गा शक्ति नागपाल, जिनकी इन दिनों खूब तारीफ की जा रही है। दरअसल, मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आईएएस दुर्गा शक्ति ने महिलाओं को ईको फ्रेंडली दीये बनाने का आइडिया दिया। साथ ही जिलाधिकारी की टीम की तरफ से ही इन महिलाओं को प्रशिक्षण भी दिया गया। इससे इन महिलाओं की आय बढ़ी और आज वे अच्छी कमाई भी कर रहे हैं। तो चलिए जानते हैं आईएएस दुर्गा शक्ति के बारे में और उनके द्वारा किए गए इस कार्य के बारे में। आईएएस दुर्गा शक्ति का जन्म वर्ष 1985 में छत्तीसगढ़ में हुआ। उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई चंडीगढ़ के विवेक हाई स्कूल से की। इसके बाद साल 2007 में उन्होंने दिल्ली टेक्निकल यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। इसके बाद साल 2008 आया, जब उन्होंने यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की, लेकिन उनका चयन राजस्व सेवा में हुआ। इसके बाद अगले साल यानी 2009 में उन्होंने फिर से परीक्षा दी और ऑल इंडिया रैंकिंग में 20वां स्थान प्राप्त करते हुए आईएएस बनीं।

की यूपी की महिलाओं की मदद

जहां एक तरफ पहले गोबर का इस्तेमाल उपले या खाद बनाने के लिए किया जाता था, तो वहीं आईएएस दुर्गा के इस कदम से उत्तर प्रदेश की महिलाएं गोबर से दीये बना रही हैं। इससे महिलाओं के लिए आमदनी का नया रास्ता खुला और आज वे अच्छी कमाई भी कर रही हैं। यही नहीं, इस बार दिवाली के मौके पर इन दीयों को सेल कर महिलाओं की अच्छी कमाई भी हुई। आईएएस दुर्गा शक्ति ने इन महिलाओं को ईको फ्रेंडली दीये बनाने का आइडिया दिया, जो काम कर गया।

खाली बोतलें बेचकर कमाई करने से प्रतिष्ठित लेखिका बनने तक ऐसा रहा अरुंधति राय का सफर

प्रसिद्ध लेखिका और समाज सेविका अरुंधति राय देश-विदेश तक मशहूर हैं। साहित्य क्षेत्र में उनका योगदान सराहनीय है। अपने अथाह ज्ञान और कलम की ताकत से अरुंधति राय समाज सुधार के लिए जानी जाती हैं। अरुंधति राय अंग्रेजी की प्रसिद्ध लेखिका हैं। अरुंधति को अपने लेखन कार्य और सोशल वर्क के लिए कई बड़े अवार्ड मिल चुके हैं। 24 नवंबर को अरुंधति राय का जन्मदिन होता है। एक प्रतिष्ठित लेखिका और समाज सेविका बनने तक का सफर आसान नहीं था। आइए जानते हैं अरुंधति राय के जीवन संघर्षों के बारे में, जिन्होंने उन्हें बनाया देश की सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और समाजसेविका।

अरुंधति राय का जीवन परिचय

अरुंधति राय का जन्म शिलॉन्ग में 24 नवंबर 1961 को हुआ था। अरुंधति राय की मां का नाम मैरी रॉय और पिता का राजीव रॉय था। उनकी मां मैरी रॉय केरल की सीरियाई ईसाई परिवार से थीं, जबकि पिता कलकत्ता के एक बंगाली हिंदू परिवार से थे।जब अरुंधति दो साल की थीं तो उनके माता-पिता एक दूसरे से अलग हो गए। इसके बाद अरुंधति अपनी मां और भाई के साथ केरल आ गईं और अपना बचपन गुजारा।

अरुंधति राय की शिक्षा

केरल के अयमनाम में अरुंधति अपने परिवार के साथ रहती थीं। शुरुआती शिक्षा मां के स्कूल से पूरी की, जिसका नाम कॉर्पस क्रिस्टी था। बाद में अरुंधति ने दिल्ली आकर आर्किटेक्ट की पढ़ाई पूरी की।

16 साल में छोड़ा घर

महज 16 साल की उम्र में अरुंधति ने अपना घर छोड़ दिया और दिल्ली आकर रहने लगीं। अपने साक्षात्मकार में अरुंधति ने बताया था कि उन्होंने खाली बोतलें बेचकर फीस के पैसे जुटाए थे। तब जाकर उनका दिल्ली स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर में हुआ। करियर के शुरुआती दिनों में अरुंधति ने अभिनय भी किया। वह मैसी साहब नाम की फिल्म में लीड रोल किया। बाद में अरुंधति ने कई फिल्मों के लिए पटकथाएं लिखीं। उनके लेखन में परिवार, माता पिता का गहरा असर देखने को मिलता है। अरुंधति की किताब में उनके बचपन की घटनाओं का जिक्र मिलता है।

अरुंधति राय का किताब संग्रह

अंग्रेजी की उपन्यासकार अरुंधति राय ने इन विच एनी गिव्स इट दोज़ वंस (1989), इलेक्ट्रिक मून

प्राचीन भारत की विदुषी स्त्रियां, जिनके ज्ञान ने उन्हें बनाया महान

भारत में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए तरह-तरह के जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार कई तरह की योजनाएं चला रही है। हालांकि ये प्रयास आज का नहीं, दशकों से बहुत सी स्त्रियों को पढ़ने और स्कूल जाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। सवाल है कि क्या स्त्री शिक्षा दशकों पुरानी समस्या है या पौराणिक काल में स्त्रियों को दीक्षा दी जाती थी? प्राचीन भारत में पुरुषों को तो दीक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाता था लेकिन प्राचीन ग्रंथों में पौराणिक काल की कई विदुषी स्त्रियों का ज़िक्र मिलता है, जिनके ज्ञान के आगे बड़े-बड़े विद्वान भी नतमस्तक हो गए। इस लेख में प्राचीन काल की ज्ञानवान स्त्रियों के बारे में बताया जा रहा है।

विदुषी गार्गी

पौराणिक काल की विदुषी स्त्रियों का नाम आने पर सबसे पहले विदुषी गार्गी को स्मरण किया जाता है। विदुषी गार्गी का वेदों की रचना में महत्वपूर्ण योगदान था। गार्गी गर्गवंश में वचक्नु नामक महर्षि की पुत्री थीं, उनका पूरा नाम वाचकन्वी गार्गी है। रामायण काल में राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ, जिसमें ऋषि याज्ञवल्क्य और गार्गी के बीच प्रश्न-उत्तर किये गए। इन्हीं प्रश्नोंत्तर पर बृहदारण्यक उपनिषद का निर्माण हुआ।

माता सीता

गोस्वामी तुलसी दास की रामचरित मानस के मुख्य पात्र श्री राम की पत्नी जानकी यानी देवी सीता केवल अपने पतिव्रता होने के लिए नहीं, बल्कि ज्ञान के लिए भी प्रसिद्ध हैं। माता सीता की गुरु विदुषी गार्गी थीं, जिनसे उन्हें वेद पुराणों का ज्ञान मिला। बचपन में शिव धनुष उठाने वाली सीता केवल वीर ही नहीं अपितु विद्वान भी थीं।

विदुषी मैत्रेयी

प्राचीन भारत की सबसे ज्ञानी स्त्रियों में विदुषी मैत्रेयी का भी नाम शामिल है। उन्हे पिता मित्र ऋषि थे, वहीं राजा जनक के महल में विदुषी गार्गी से शास्त्रार्थ करने वाले महर्षि याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी भी थीं। बता दें महर्षि याज्ञवल्क्य पहली पत्नी भारद्वाज ऋषि की पुत्री कात्यायनी थीं। विदुषी मैत्रेयी शांत स्वभाव की स्त्री थीं, जिन्हें अध्ययन, चिंतन और शास्त्रार्थ में रुचि थी। जब ऋषि याज्ञवल्क्य ने गृहस्थ आश्रम छोड़कर वन में जाने का फैसला किया तो मैत्रेयी ने आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए पति संग जाने का फैसला लिया था।

द्रौपदी

महाभारत में पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी बहुत ज्ञानवान महिला थीं। वह जितनी सुंदर थीं, उतनी ही बुद्धिमान भी थीं। जब भी पांडव किसी फैसले को लेकर चिंतित होते या संकोच करते तो हमेशा द्रौपदी उन्हें सलाह देतीं।

कौन थीं झलकारी बाई, जयंती के मौके पर जानें आजादी की जंग में उनका योगदान

गुलाम भारत में अंग्रेजों की प्रताड़ना का सामना कई भारतीयों को करना पड़ा। भारतीयों ने आजादी की लड़ाई के लिए स्वतंत्रता संग्राम का आगाज 1857 की क्रांति किया। 1857 की क्रांति इतिहास के पन्नों में मुख्य रूप से शामिल है। इस क्रांति में मंगल पांडे और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख हैं। आंदोलन की लड़ाई में झांसी की रानी की अकेली महिला नहीं थीं, उनका साथ देने के लिए एक महिला और थीं, जिनका नाम झलकारीबाई था। झलकारी बाई न तो रानी थीं और न ही झांसी की सत्ता उनके हाथ में थी। लेकिन मातृभूमि की रक्षा के लिए झलकारी बाई ने अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। आज स्वतंत्रता संग्राम की इस महिला आंदोलनकारी झलकारी बाई की जयंती है। आइए जानते हैं झलकारी बाई के जीवन से जुड़ी अहम बातें।

झलकारी बाई का बचपन

इतिहासकार बताते हैं कि झलकारी बाई झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के किले के पास रहती थीं। किले के दक्षिण में उन्नाव गेट था, जहां भोजला गांव स्थित था। इस गांव में झलकारी बाई के घराने के लोग आज भी रहते हैं। बचपन से ही साहसी झलकारी बाई ने मां के निधन के बाद पिता से घुड़सवारी और हथियार चलाने का प्रशिक्षण लिया।

साहसी झलकारी बाई

एक बार बचपन में झलकारी बाई पर एक तेंदुए ने हमला कर दिया था। बिना डरे कुल्हाड़ी से तेंदुए को मारकर झलकारी बाई ने अपना साहस दिखाया था। कहते हैं एक बार कुछ डकैतों ने गांव के व्यापारी के घर पर हमला कर दिया था, तब भी झलकारी बाई ने उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया और गांव से खदेड़ दिया।

झलकारी बाई की शादी

झांसी की सेना में तैनात एक सैनिक पूरन कोरी से झलकारी बाई का विवाह हुआ था। शादी के बाद रानी लक्ष्मी बाई से एक पूजा के दौरान झलकारी बाई की मुलाकात हुई। झलकारी बाई को देख कर रानी लक्ष्मीबाई हैरान रह गईं, क्योंकि वह बिल्कुल लक्ष्मीबाई जैसी दिखती थीं। लक्ष्मीबाई ने झलकारी बाई को झांसी की सेना में शामिल कर लिया। झलकारी बाई ने बंदूक चलाना, तलवार और तोप चलाना सीखा। अंग्रेजों ने जब झांसी के किले पर हमला किया तो सेनापतियों ने रानी लक्ष्मीबाई को किले से निकल जाने की सलाह दी। युद्ध में झलकारी बाई के पति भी शहीद हो चुके थे। झलकारी बाई ने अंग्रेजों को चकमा देने के लिए रानी लक्ष्मीबाई के कपड़े पहनें और सेना की कमान संभाल ली। अंग्रेजों को पता तक नहीं चला कि वह रानी लक्ष्मीबाई नहीं, बल्कि झलकारी बाई हैं।

गणतंत्र दिवस पर शानदार होगा IAF का फ्लाईपास्ट

सुरक्षा

हेलीकॉप्टर में मजबूत कवच सुरक्षा और जबरदस्त रात में हमला करने की क्षमता है।

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस के अवसर पर इस बार फ्लाईपास्ट के दौरान उड़ाए जाने वाले तांगेल फॉर्मेशन में हेरिटेज विमान डकोटा को शामिल किया गया है। इसमें दो डोर्नियर Do-228 विमान भी होंगे, जो एविएशन टर्बाइन फ्यूल और बायोफ्यूल के जरिए उड़ान भरेंगे। भारतीय वायु सेना मंगलवार को बताया कि तांगेल फॉर्मेशन उस सफल एयरड्रॉप को फिर से दोहराएगा जिसमें 11 दिसंबर, 1971 को भारतीय वायु सेना के जवानों को पैराशूट से गिराया गया था। बता दें कि भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान शत्रु क्षेत्र पर भारतीय सुरक्षा बलों की यह पहली

एयरड्रॉप थी।इसके अलावा, भारत में निर्मित हथियार प्रणालियां भी इस साल के गणतंत्र दिवस परेड में मुख्य आकर्षणों का केंद्र रहेंगे। इसमें भारतीय सेना से एलसीएच प्रचंड हेलिकॉप्टर, पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर और नाग एंटी-टैंक मिसाइलें शामिल हैं। बता दें कि एलसीएच प्रचंड एचएएल द्वारा डिजाइन और निर्मित पहला स्वदेशी मल्टी-रोल कॉम्बैट हेलीकॉप्टर है। इसमें शक्तिशाली जमीनी हमले और हवाई युद्ध की क्षमता है। हेलीकॉप्टर में मजबूत कवच सुरक्षा और जबरदस्त रात में हमला करने की क्षमता है। जहाज पर उन्नत नेविगेशन प्रणाली, नजदीकी लड़ाई के लिए तैयार बंदूकें और शक्तिशाली हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलें एलसीएच को आधुनिक युद्धक्षेत्र के लिए विशेष रूप से अनुकूल बनाती हैं। NAG को डीआरडीओ द्वारा दिन और रात की स्थितियों में अत्यधिक मजबूत दुश्मन टैंकों से निपटने के लिए विकसित किया गया है। मिसाइल में समग्र और प्रतिक्रियाशील कवच से लैस सभी एमबीटी को हराने के लिए निष्क्रिय होमिंग मार्गदर्शन के साथ फायर एंड फॉरगेट टॉप अटैक क्षमताएं हैं। ह्वत्र मिसाइल वाहक NAMICA उभयचर क्षमता वाली BMP II आधारित प्रणाली है। सेना के अधिकारियों ने कहा कि भारतीय उद्योग द्वारा स्वदेशी रूप से निर्मित नवीनतम बख्तरबंद वाहनों और विशेषज्ञ वाहनों को भी परेड में प्रदर्शित किया जाएगा, जहां फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन मुख्य अतिथि होंगे।

कूनो नेशनल पार्क में आए नन्हे मेहमान, चीता ज्वाला ने तीन शावकों को दिया जन्म

नई दिल्ली। कूनो नेशनल पार्क में नामीबियाई चीता ज्वाला ने तीन नए शावकों को जन्म दिया है, जो चीता प्रोजेक्ट के लिए अच्छी खबर है। इससे पहले 3 जनवरी को मादा चीता आशा ने तीन शावकों को जन्म दिया था, जबकि अब चीता ज्वाला ने तीन नए शावकों को जन्म दिया है। कुल मिलाकर कूनो नेशनल पार्क में अब 6 नए चीते आ गए हैं। यह चीता प्रोजेक्ट के लिए और देश के लिए बहुत अच्छी खबर है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी देते हुए लिखा, कूनो के नए शावक! ज्वाला नाम की नामीबियाई चीता ने तीन शावकों को जन्म दिया है, यह नामीबियाई चीता आशा द्वारा अपने शावकों को जन्म देने के कुछ ही सप्ताह बाद आया है। देशभर के सभी वन्यजीव अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं और वन्यजीव प्रेमियों को बधाई। भारत में इसी तरह से वन्य जीवन फले-फूले।÷ केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने एक्स पर वीडियो शेयर किया है।

बीते वर्ष 27 मार्च 2022 को भी ज्वाला ने चार शावकों को जन्म दिया था, लेकिन इनमें से तीन शावकों की मौत हो गई। एक मादा शावक फिलहाल पूर्णत स्वस्थ है, वह 10 माह का हो चुका है।

गौरतलब है कि कूनो में दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से दो चरणों में कुल 20 चीते लाए गए थे जिनमें से सात की मौत हो चुकी है। अब शावकों की संख्या कूनो में सात हो गई है, जो जो 17 सितंबर 2022 को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू किए गए चीता प्रोजेक्ट के पिछले लगभग डेढ़ साल में बड़ी उपलब्धि है।

अगले 3-4 दिन और सताएगी ठंड, दिल्ली-यूपी समेत कई राज्यों में घना कोहरा करेगा परेशान

नई दिल्ली। ठंड और कोहरे से लोगों को अभी कुछ दिन और राहत नहीं मिलने की उम्मीद है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के हालिया अपडेट के अनुसार, उत्तर भारत के कई राज्यों में शीत लहर की चेतावनी जारी की गई है जो अगले 3 से 4 दिनों तक जारी रहेगी। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब के लोगों को कड़ाके की ठंड और शीत लहर का सामना करना पड़ रहा है। पूर्वानुमान के अनुसार, 21 और 22 जनवरी को दिल्ली, यूपी, राजस्थान और बिहार सहित कई उत्तर भारतीय राज्यों में घने कोहरे की संभावना जताई गई है। मध्य प्रदेश और बिहार में 24 जनवरी तक शीतलहर जारी रहने का अनुमान है। मौसम विभाग ने अगले 3 से 4 दिनों तक दिल्ली, यूपी, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब समेत कई राज्यों में शीतलहर चलने की चेतावनी दी है। साथ ही हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड के लिए कोहरे का अलर्ट जारी किया गया है। बता दें कि दिल्ली, पूर्वी मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम के अलग-अलग हिस्सों में कोल्ड डे की स्थिति बनी रहने की संभावना है। वहीं, 22 और 23 जनवरी को

अलग-अलग इलाकों में भी ठंडे दिन की स्थिति देखी गई है। पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के तहत, 25 से 28 जनवरी तक पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में हल्की छिटपुट वर्षा/बर्फबारी होने की संभावना है। 22 से 24 जनवरी के दौरान उत्तरी राजस्थान के अलग-अलग हिस्सों में कोल्ड डे से लेकर गंभीर कोल्ड डे की स्थिति जारी रहने की संभावना है और 22 जनवरी को उत्तरी मध्य प्रदेश के उत्तराखंड में अलग-अलग स्थानों पर जमीन पर पाला पड़ने की संभावना है। IMD की रिपोर्ट के अनुासर, 22 जनवरी की रात से 24 जनवरी की सुबह के दौरान हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम और मेघालय और मिजोरम और त्रिपुरा के अलग-अलग हिस्सों में सुबह के समय घना कोहरा छाए रहने की संभावना है।

तमिलनाडु सरकार को सौंपे जाएंगे दिवंगत जे जयललिता के सोने-हीरे के आभूषण

बेंगलुरु। बेंगलुरु की एक विशेष अदालत ने तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत जे जयललिता के सोने और हीरे के आभूषणों को तमिलनाडु सरकार को हस्तांतरित करने का आदेश दिया। बता दें कि तमिलनाडु सरकार इन सोने और हीरे के आभूषणों के निपटान पर आवश्यक कार्रवाई करेगी जो जयललिता और अन्य के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति मामले में सबूतों का हिस्सा थे। उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर मुकदमा कर्नाटक में आयोजित किया गया था और इसलिए सभी सबूत अब न्यायालय की हिरासत में कर्नाटक के खजाने में हैं। ङ्ङ्ङ्ढ्ढ अतिरिक्त सिटी सिविल और सत्र अदालत की अध्यक्षता कर रहे न्यायाधीश एच ए मोहन ने सोमवार को यह आदेश पारित किया।गौरतलब है कि अदालत ने पहले कहा था कि जयललिता के परिजन उन संपत्तियों के हकदार नहीं हैं जो राज्य द्वारा जब्त की गई हैं। विशेष सीबीआई अदालत ने जयललिता की भतीजी और भतीजे जे दीपा और जे दीपक द्वारा दायर याचिका को खारिज कर दिया था।

विशेष अदालत के न्यायाधीश ने गहनों को तमिलनाडु सरकार को हस्तांतरित करने का आदेश देते हुए कहा गहनों की नीलामी करने के बजाय, उन्हें तमिलनाडु राज्य के गृह विभाग के माध्यम से सौंपकर तमिलनाडु को स्थानांतरित करना बेहतर है। न्यायालय ने निर्देश जारी किया कि तमिलनाडु गृह विभाग %पुलिस के साथ-साथ सचिव स्तर के सक्षम व्यक्तियों को आने और गहने इकट्ठा करने के लिए अधिकृत करे। इसी आदेश में विशेष अदालत ने कर्नाटक को राज्य में चलाए गए मुकदमे के खर्च के लिए पांच करोड़ रुपये का भुगतान करने का भी आदेश दिया। भुगतान चेन्नई में भारतीय स्टेट बैंक की शाखा में जयललिता से संबंधित खाते में सावधि जमा से किया जाएगा।

असम में बुरे फंसे राहुल गांधी, मुख्यमंत्री हिमंता ने डीजीपी से FIR दर्ज करने को कहा

उल्लंघन

राहुल गांधी के अनियंत्रित व्यवहार और सहमत दिशानिर्देशों के उल्लंघन के परिणामस्वरूप अब गुवाहाटी में बड़े पैमाने पर ट्रैफिक जाम हो गया है।

गुवाहाटी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में भारत जोड़ो न्याय यात्रा असम के गुवाहाटी पहुंच गया है। मंगलवार को यहां कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच हिंसक झड़प हो गई। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए लाठीचार्ज किया। माना जा रहा है कि राहुल गांधी को शहर में यात्रा करने की इजाजत नही मिली जिससे कांग्रेस कार्यकर्ताओं और

पुलिस में झड़प शुरू हो गई। इस बीच असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने झड़प को लेकर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की और असम के डीजीपी को निर्देश जारी किए है। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने ङ्ग (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, ये असमिया संस्कृति का हिस्सा नहीं हैं। हम एक शांतिपूर्ण राज्य हैं। ऐसी नक्सली रणनीति हमारी संस्कृति से पूरी तरह अलग हैं। मैंने असम पुलिस के डीजीप को भीड़ को उकसाने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ मामला दर्ज करने और अपने हैंडल पर पोस्ट किए गए फुटेज को सबूत के रूप में उपयोग करने का निर्देश दिया है। राहुल गांधी के अनियंत्रित व्यवहार और सहमत दिशानिर्देशों के उल्लंघन के परिणामस्वरूप अब गुवाहाटी में बड़े पैमाने पर ट्रैफिक जाम हो गया है। दरअसल, भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीनिवास भद्रावती वेंकट ने झड़प की एक वीडियो सोशल मीडिया X पर शेयर की जिसमें उन्होंने लिखा, राहुल गांधी जी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को एक बार फिर से बैरिकेडिंग लगाकर रोकने की साजिश हुई है, लेकिन हम ये अब होने नही देंगे।

जितनी लाठियां चलानी है चलाओ।ये जंग अब जारी रहेगी। इस वीडियो पर ही असम के मुख्यमंत्री सरमा ने रीट्वीट कर डीजीपी को राहुल गांधी के खिलाफ FIR दर्ज करने के निर्देश दिए है।

खुदाई के कारण तीन मंजिला मकान जमींदोज

पुडुचेरी। पुडुचेरी के अट्टुपट्टी गांव में सोमवार को एक नवनिर्मित तीन मंजिला घर ढह गया। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि जिस दौरान यह घटना हुआ, उस समय घर खाली था। घर के मालिक के अनुसार, फरवरी में वह लोग गृह-प्रवेश समारोह आयोजित करने वाले थे।

सूत्रों के मुताबिक, घर का निर्माण वंचित वर्ग के परिवार को आवंटित जगह पर किया गया था और यह गांव से होकर गुजरने वाली जल निकासी नहर के करीब स्थित है। समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, सूत्रों ने कहा कि नहर के पास एक फ्लाईओवर के लिए खंभे खड़े करने का काम चल रहा था और जब मजदूर नहर के किनारे के हिस्से की खुदाई कर रहे थे, तो कंपन के कारण घर ढह गया।

सीबीआई के सामने पेश होंगे महुआ मोइत्रा के करीबी वकील देहाद्राई, लोकपाल-संदर्भित शिकायत मामले में होगी पूछताछ

नई दिल्ली। सीबीआई ने पूर्व टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ लोकपाल-संदर्भित भ्रष्टाचार की शिकायत की जांच के सिलसिले में वकील जय अनंत देहाद्राई को गुरुवार को उसके सामने पेश होने के लिए कहा है। अधिकारियों ने मंगलवार को इस बात की जानकारी दी है। अधिकारी ने कहा,

÷देहाद्राई कभी मोइत्रा की करीबी हुआ करते थे। उन्होंने पूर्व सांसद के खिलाफ भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए थे, जिनका उन्होंने दृढ़ता से खंडन किया था। उन्होंने बताया कि एजेंसी ने देहाद्राई को अपना पक्ष दर्ज कराने के लिए गुरुवार को दोपहर दो बजे एजेंसी की एसी-3 इकाई के सामने पेश होने को कहा है। समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल के संदर्भ पर सीबीआई ने मोइत्रा के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच शुरू की है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने संसद में सवाल उठाने के लिए रिश्वत लेने के आरोपों को लेकर मोइत्रा के खिलाफ शिकायत लेकर लोकपाल से संपर्क किया था।

24 घंटे में 10 जवानों ने गंवाई जान इजरायल की सेना पर गाजा में गिरी गाज

यरुशलम। इजरायली सेना ने कहा है कि मध्य गाजा में एक हमले में 10 सैनिक मारे गए हैं। इजरायली मीडिया का कहना है कि सैनिक सोमवार को मध्य गाजा में दो घरों को

ध्वस्त करने के लिए विस्फोटक तैयार कर रहे थे, तभी एक आतंकवादी ने पास के एक टैंक पर रॉकेट चालित ग्रेनेड दागा। जिसकी वजह से हुए विस्फोट में इजरायली सेना के 10 सैनिक मारे गए। इजरायल के चैनल 13 का कहना है कि मरने वालों की संख्या और भी अधिक है, और नामों की घोषणा की जाएगी। बता दें कि यह हमास के खिलाफ तीन महीने के युद्ध में सबसे घातक घटनाओं में से एक है, जो आतंकवादी समूह के 7 अक्टूबर को इजरायल पर हमले के बाद शुरू हुआ था। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने तब तक आगे बढ़ने की कसम खाई है, जब तक कि इजरायल सत्तारूढ़ हमास आतंकवादी समूह को कुचल नहीं देता और गाजा में बंदी बनाए गए 100 से अधिक बंधकों की रिहाई नहीं कर लेता। वहीं, इस्राइली इस सवाल पर बंटे हुए हैं कि क्या ऐसा करना संभव है। बंधकों के परिवारों और उनके कई समर्थकों ने इजरायल से संघर्ष विराम समझौते पर पहुंचने का आह्वान करते हुए कहा है कि बंधकों को जीवित घर वापस लाने का समय समाप्त होता जा रहा है। सोमवार को दर्जनों बंधकों के रिश्तेदारों ने अपने प्रियजनों की रिहाई के लिए समझौते की मांग करते हुए संसदीय समिति की बैठक पर धावा बोल दिया। सोमवार को हुई भारी मौतों से इजरायल द्वारा हमले को रोकने या यहां तक कि इसे पूरी तरह से बंद करने के आह्वान को नई गति मिल सकती है। बड़ी संख्या में इजरायली हताहतों की संख्या ने इजरायल सरकार पर पिछले सैन्य अभियानों को रोकने का दबाव डाला है। हमास द्वारा संचालित क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, हमले ने व्यापक विनाश किया है, गाजा की अनुमानित 85 प्रतिशत आबादी विस्थापित हो गई है और 25,000 से अधिक फलिस्तीनी मारे गए हैं। संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय सहायता एजेंसियों का कहना है कि लड़ाई ने एक मानवीय आपदा ला दी है, जिससे क्षेत्र के 2.3 मिलियन लोगों में से एक चौथाई लोग भुखमरी का सामना कर रहे हैं।

डेमोक्रेट्स चुनाव में हिस्सा न लें, जो बाइडन की आवाज में वोटर्स को आया रोबोकॉल

मैनचेस्टर। मंगलवार को राष्ट्रपति पद के प्राथमिक चुनाव से पहले, न्यू हैम्पशायर के निवासियों के पास एक फर्जी रोबोकॉल पहुंची है, जो अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन से मिलती-जुलती एआई आवाज लग रही है। इसमें मतदान न करने करने की सलाह दी जा रही है और नवंबर के आम चुनावों के लिए वोट बचाने की सलाह देते हुए सुना जा सकता है। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक,बाइडन की आवाज में कहा जा रहा है, ÷रिपब्लिकन नेता डेमोक्रेट मतदाताओं को अपनी प्राइमरी इलेक्शन में शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं। यह काफी बकवास है। न्यू हैम्पशायर के अटॉर्नी जनरल, जॉन फॉरमेला, ने इसे एक स्पष्ट अवैध प्रयास के रूप में बताते हुए कहा कि वह न्यू हैम्पशायर प्रेसिडेंशियल प्राइमरी इलेक्शन को विघटित करने और न्यू हैम्पशायर वोटर्स को दबा देने का प्रयास कर रहा है।

शिकागो में तीन अलग-अलग घरों में गोलीबारी, आठ की मौत

शिकागो। अमेरिका के इलिनोइस प्रांत के शिकागो के उपनगर में 3 जगह पर गोलीबारी कर एक बंदूकधारी ने 8 लोगों की हत्या कर दी। बाद में टेक्सास में कानून प्रवर्तन अधिकारियों के साथ मुठभेड़ में उसने खुद को गोली मार ली। पुलिस ने उसकी पहचान 23 वर्षीय रोमियो नेंस के तौर पर की है।

अंजाम

एक फेसबुक पोस्ट में पुलिस ने लिखा, बंदूकधारी ने जोलीट शहर और विल काउंटी में वारदातों को अंजाम दिया।

एक फेसबुक पोस्ट में पुलिस ने लिखा, बंदूकधारी ने जोलीट शहर और विल काउंटी में वारदातों को अंजाम दिया। इसके बाद टेक्सास में कानून प्रवर्तन अधिकारियों के साथ मुठभेड़ में उसने खुद को गोली मारी। हमलावर 23 वर्षीय रोमियो नेंस है। पुलिस ने फरार नेंस को टेक्सास में नतालिया के पास खोजा था।÷ पुलिस ने कहा कि हत्याओं का मकसद फिलहाल स्पष्ट नहीं है, लेकिन हमलावर नेंस पीड़ितों को पहले से जानता था। नेंस द्वारा जोलीट शहर और विल काउंटी में वारदातों को अंजाब देने के बाद सोमवार को पुलिस ने मीडिया से बातचीत में कहा, ÷हत्या किये गये व्यक्तियों के शव रविवार और सोमवार को तीन अलग-अलग स्थानों पर पाये गये। यह व्यक्ति बेहद खतरनाक है और हथियार भी साथ लिये हुए है। मारे गए व्यक्तियों में से एक का शव रविवार को विल काउंटी के एक घर में पाया

गया। सोमवार को जोलीट के दो घरों में सात अन्य पाए गए। पुलिस प्रमुख विलियम इवांस ने कहा कि वह 29 साल से पुलिस सेवा में हैं, लेकिन यह अब तक का सबसे बुरा अनुभव है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर सशस्त्र और खतरनाक अपराधी की चेतावनी दी गई थी। सोमवार दोपहर पहले एक फेसबुक पोस्ट में जोलियट पुलिस ने कहा कि वे मृत पाए गए कई लोगों की जांच कर रहे थे और उस व्यक्ति की तस्वीर और एक वाहन की तस्वीरें शेयर कीं। अधिकारियों ने वाहन की पहचान लाल टोयोटा कैमरी के रूप में की। इससे पहले सोमवार को विल काउंटी शेरिफ कार्यालय ने फेसबुक के माध्यम से उसी कार की तस्वीरें शेयर कीं, और कहा कि इसे रविवार दोपहर दो अलग-अलग गोलीबारी की घटना में देखा गया था।

पाकिस्तान क्रिकेट में छिड़ा विवाद और बढ़ा, बदहाली के लिए इंजमाम ने जका अशरफ को जिम्मेदार ठहराया

कराची। पूर्व कप्तान और चयन समिति के पूर्व अध्यक्ष इंजमाम उल हक ने पिछले साल भारत में हुए वनडे विश्व कप में राष्ट्रीय टीम के खराब प्रदर्शन के लिए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के निवर्तमान प्रमुख जका अशरफ को जिम्मेदार ठहराया है। जुलाई में पीसीबी के संचालन के लिए अंतरिम प्रबंधन समिति के प्रमुख बनाए गए जका ने कुछ दिन पहले समिति की एक बैठक में घोषणा की थी कि वह अध्यक्ष और बोर्ड के सदस्य के रूप में तुरंत इस्तीफा दे रहे हैं। इंजमाम को टूर्नामेंट की समाप्ति के बाद हितों के टकराव के आरोपों के कारण हटा दिया गया था। उन पर आरोप था कि उनका प्रबंधन ब्रिटेन स्थित कंपनी द्वारा किया जाता है जो कुछ सक्रिय खिलाड़ियों के व्यावसायिक हितों को भी देखती है।

रूस ने फिर बनाया यूक्रेन को निशाना कीव समेत कई क्षेत्रों में दागी मिसाइल

एपी, कीव। रूस-यूक्रेन के बीच युद्ध को दो साल से अधिक

प्रशासन

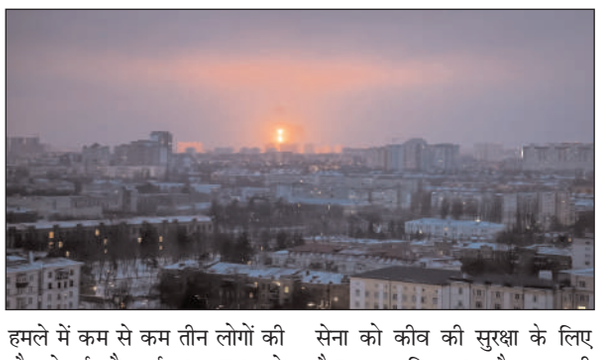

कीव के सैन्य प्रशासन के प्रमुख सेरही पोपको ने कहा कि एक व्यक्ति की हमले में मौत हो गई।

समय हो गया है। रूस लगातार यूक्रेन के क्षेत्रों पर हमले कर रहा है। इस बीच यूक्रेन के एक सैन्य अधिकारी ने दावा किया है कि रूस ने कीव और उसके आसपास के क्षेत्रों पर मिसाइल हमला किया है। समाचार एजेंसी एपी के मुताबिक, रूस ने मंगलवार सुबह यूक्रेन के कीव और खार्किव शहरों को मिसाइलों से निशाना बनाया। इस

हमले में कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। इसके अलावा कई आवासीय इमारतों को भी नुकसान पहुंचा है।

कीव के सैन्य प्रशासन के प्रमुख सेरही पोपको ने मैसेजिंग एप टेलीग्राम पर ने मंगलवार को बताया कि रूस ने राजधानी कीव और आसपास के क्षेत्रों को निशाना बनाया है। इस हमले के बाद वायु सेना को कीव की सुरक्षा के लिए तैनात कर दिया गया है। साथ ही शहर में हवाई हमले के अलर्ट को लेकर अलार्म भी बज रहे हैं।

कीव के सैन्य प्रशासन के प्रमुख सेरही पोपको ने कहा कि एक व्यक्ति की हमले में मौत हो गई। मेयर विटाली क्लिट्स्को ने कहा कि नौ लोग घायल हो गए, जिनमें एक 13 वर्षीय लड़का भी शामिल है।

क्षेत्रीय गवर्नर ओलेह सिनीहुबोव के अनुसार, खार्किव में दो लोग मारे गए और 11 लोग घायल हो गए। खार्किव के मेयर इहोर तेरेखोव ने कहा कि इस हमले में एक बहुमंजिला इमारत का एक पूरा हिस्सा तबाह हो गया है।

कीव क्षेत्रीय सैन्य प्रशासन ने टेलीग्राम पर कहा कि एयर डिफेंस सिस्टम को रूस के मिसाइल हमले को विफल करने में लगी हुई हैं। बता दें कि रूस ने साल 2022 में यूक्रेन के खिलाफ युद्ध छेड़ा था। दो साल से अधिक समय बाद भी यह युद्ध जारी है। हालांकि, कई देशों द्वारा सुलह की कोशिश भी की गई, लेकिन इस युद्ध का समाधान नहीं निकल पाया है।

दुनिया में पिछड़ा पाकिस्तान, पटरी पर वापस लाना नहीं आसान

खैबर पख्तूनख्वा। पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के प्रमुख और पूर्व पीएम नवाज शरीफ ने पाकिस्तान के हालत को लेकर बड़ा बयान दिया है। नवाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान को पटरी पर लाना आसान काम नहीं होगा। एक रैली को संबोधित करते हुए नवाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान दुनिया में पिछड़ गया है और देश का पुनर्निर्माण करना होगा। शरीफ ने कहा कि उनकी सरकार ने न केवल पाकिस्तानी रुपये के मुकाबले डॉलर को 104 तक सीमित किया था, बल्कि देश से लोड शेडिंग को भी समाप्त कर दिया था।

नवाज ने इमरान खान और अन्य दलों पर भी हमला बोला। उन्होंने अफसोस जताया कि खैबर पख्तूनख्वा की जनता ने झूठे लोगों को वोट दिया। नवाज ने मौलाना फजलुर रहमान पर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि फजलुर रहमान ने खैबर पख्तूनख्वा में गठबंधन सरकार बनाने के लिए उनसे संपर्क किया था। नवाज शरीफ ने इमरान खान की पार्टी से सवाल पूछा कि इन्होंने यहां की जनता के लिए अपने 10 साल के शासन के दौरान क्या किया। इमरान की पार्टी ने इस प्रांत को बर्बाद कर दिया है।

पूर्व पीएम ने दावा किया कि अगर उनकी पार्टी देश की सत्ता में लौटेगी तो वह युवाओं को रोजगार मुहैया कराएंगे। साथ ही मनसेहरा को अपना हवाई अड्डा मिलेगा। साथ ही यहां विश्वविद्यालय और कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। बता दें कि पाकिस्तान में आम चुनाव 8 फरवरी को होने हैं। पाकिस्तान के चुनाव आयोग द्वारा चुनाव को लेकर तैयारियां की जा रही है।

सुंदरकांड एवं विशाल भंडारे का आयोजन

जौनपुर (महराजगंज) अवधनामा संवाददाता। क्षेत्र के महराजगंज पुरानी बाजार में स्थित प्राचीन राम जानकी मंदिर पर संगीतमय सुंदरकांड पाठ एवं प्रसाद वितरण तथा आज मंगलवार के दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जहां हजारों की संख्या में राम भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया पूरे देश में भगवान श्री रामचंद्र की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर जगह-जगह राम भक्तों द्वारा आयोजन किया गया वहीं बाजार के मध्य स्थित प्राचीन राम जानकी मंदिर पर बाजार वासियों तथा मंदिर के संरक्षक बद्री पाण्डेय, वरिष्ठ अधिवक्ता उच्च न्यायालय पं. अमर नाथ पाण्डेय, सूर्यमणि पाण्डेय एवं बाजार वासियो द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया गया वही मंदिर कार्यक्रम व्यवस्थापक पत्रकार अमित पाण्डेय ने बताया कि मंदिर के अगल-बगल बाजार वासियो द्वारा सहयोग करते हुए 1100 दीपक जलाकर प्रधानमंत्री के आवाहन पर दीपावली मनाई गई। इस अवसर पर स्वामी श्याम जी महराज, डॉ. अतुल कुमार दुबे, राजेंद्र मिश्रा, सुभाष मिश्रा, जगदीश उपाध्याय, सुरेंद्र तिवारी, नागेंद्र मिश्र, श्याम मिश्रा, पंकज उपाध्याय, दीपक मिश्रा, राजकमल मिश्रा, राम पांडे, रमेश मिश्रा, अमरपाल तिवारी, निलेश मिश्रा ,पंकज उपाध्याय, राजेश पांडे तथा राम भक्त उपस्थित रहे।

वित्तीय साक्षरता का ज्ञान सभी के लिए आवश्यक

जौनपुर अवधनामा संवाददाता। जनपद के अग्रणी शिक्षण संस्थान तिलकधारी स्नाकोत्तर महाविद्यालय में शिक्षक शिक्षा विभाग एवं नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ सिक्योरिटीज मार्केट (सेबी) के संयुक्त तत्वाधान में कोना-कोना शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत एकदिवसीय वित्तीय साक्षरता कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें एम.एड्. प्रथम तृतीय सत्र के छात्रों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का प्रारंभ मां सरस्वती के चरणों में दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि के साथ हुआ। कार्यशाला को संबोधित करते हुए बी.एड. के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अजय कुमार दुबे ने कहा कि वित्तीय साक्षरता वर्तमान में सभी के लिए प्रासंगिक एवं आवश्यक है। कार्यशाला में सेबी की तरफ से संदर्भ दाता के रूप में चंद्रकेतु सिंह एवं निधि सिंह ने विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में वित्तीय प्रबंधन एवं महत्व को रेखांकित करते हुए निवेश एवं जोखिम के विविध पहलुओं से अवगत कराया। कार्यशाला संयोजन एवं संचालन डॉ वैभव सिंह ने किया। कार्यशाला में प्रो0 श्रद्धा सिंह, डॉ अरविंद कुमार सिंह, डॉ0 गीता सिंह, डॉ0 वंदना शुक्ला एवं डॉ0 सुलेखा सिंह, डॉ सीमांत कुमार राय ने भी संबोधित किया। कार्यशाला के अंत में श्री चंद्रकेतु सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजनैतिक दल के प्रतिनिधियों के साथ बैठक

आजमगढ़ अवधनामा संवाददाता। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार

जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज द्वारा आज कलेक्ट्रेट सभागार में प्रेस एवं राजनैतिक दल के प्रतिनिधियों के समक्ष अर्हता 01 जनवरी 2024 के आधार पर निर्वाचक नामावलियों का अन्तिम प्रकाशन किया गया। जिलाधिकारी ने बताया कि सभी मतदेय स्थलों पर संबंधित भाग की निर्वाचक नामावलियां एक सप्ताह के लिए जन सामान्य के निरीक्षण हेतु उपलब्ध रहेगी। उन्होने बताया कि जनपद आजमगढ़ में आलेख्य प्रकाशन 27 अक्टूबर 2023 के समय 3635436 वोटर का नाम मतदाता सूची में शामिल था तथा जेण्डर रेसिया 897 था एवं 23 जनवरी 2024 को अन्तिम आलेख्य प्रकाशन के समय 3676053 वोटर का नाम मतदाता सूची में शामिल हो गया है तथा वर्तमान में जेण्डर रेसिया 901 है। इसी के साथ ही 27 अक्टूबर 2023 को आलेख्य प्रकाशन के समय 18-19 आयुवर्ग के 7583 मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में शामिल हुआ तथा वर्तमान पुनरीक्षण अवधि में 18-19 आयुवर्ग के 28663 मतदाता बढ़े हैं तथा अन्तिम प्रकाशन की सूची में 18-19 आयुवर्ग के कुल 36246 मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में शामिल हुआ है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन अनिल कुमार मिश्र, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी बृजेश श्रीवास्तव तथा प्रेस एवं राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

धार्मिक आस्था पर टिप्पणी के आरोपी हिरासत में

आजमगढ़ अवधनामा संवाददाता। तरवा थाना क्षेत्र के बनगांव का मामला जहां पर मस्जिद में रहने वाले मौलवी ने महाराष्ट्र के ठाणे रोड पर रथ यात्रा के दौरान मुसलमानों के द्वारा दंगा किया गया। इस वीडियो को लेकर मौलवी ने अपने फेसबुक आईडी से मुसलमान को उकसाया है। जैसे ही यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। ग्रामीण आक्रोशित हो गए और मौलवी को पड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। जिसका ग्रामीणों ने एक लिखित प्रार्थना पत्र दिया है। जिसमें उन्होंने कार्रवाई की मांग की है। जब इस प्रकरण पर थाना अध्यक्ष तरवा से बात की गई उन्होंने कहा मामले की जांच कर संबंधित कार्रवाई की जाएगी।

जिला अध्यक्ष ने किया सुंदरकाण्ड पाठ का आयोजन

आजमगढ़ अवधनामा संवाददाता। प्रभु श्री राम के प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक

अवसर पर भारतीय जनता पार्टी लालगंज के जिला अध्यक्ष सूरज प्रकाश श्रीवास्तव के द्वारा अपने जमाल बाजबहादुर सिधारी स्थित आवास पर ब्राह्मण द्वारा विधि विधान के साथ सुंदरकाण्ड पाठ व भंडारे का भव्य आयोजन किया गया। भाजपा लालगंज के जिला सूरज प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि यह सदी का सबसे बड़ा उत्सव है। हम सबको इससे प्रेरित होकर इस उत्सव को हर्ष उल्लास के साथ मानना चाहिए। आज पूरे देश में इस उत्सव को दिवाली को तरह से मनाया जा रहा है।जैसे प्रभु श्री राम जब 14 वर्ष का बनवास के पश्चात जब वापस अयोध्या आगमन हुआ था ठीक उसी प्रकार आज उत्सव को पूरे प्रदेश और देश में मनाया जा रहा है। इसलिए आज इस शुभ अवसर पर सुंदरकांड पाठ व भंडारे का आयोजन किया गया है। इस भव्य आयोजन में मोहल्ले वासियों के साथ साथ सैकड़ों लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर संजय सिंह, अनिल सिंह, विद्याधार श्रीवास्तव,रजनीश श्रीवास्तव, भाजपा नगर अध्यक्ष मृगांक शेकर सिन्हा, बबलू चौहान, योगेंद्र यादव, सुरेश सरोज, अमन श्रीवास्तव, रामनयन यादव, केशव सिंह, राज सिंह, समर सिंह, राहुल श्रीवास्तव, आशुतोष उपाध्याय, सौरभ सरोज, विपिन सिंह, अयान उपाध्याय, हिमांशु आदि उपस्थित रहे।

आपदा प्रबंधन का पूर्वाभ्यास किया गया

प्रयागराज अवधनामा संवाददाता। माघ मेला प्रयागराज में प्रदेश के विभिन्न

जनपदों से ड्यूटी में आए पुलिसकर्मियों को लगातार मेला क्षेत्र में ड्यूटी के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों, आचरण एवं व्यवहार, मेले की भौगोलिक स्थिति सहित विभिन्न विषयों पर अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा लगातार प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसी क्रम में आज रिजर्व पुलिस लाइन्स माघ मेला के मानसरोवर सभागार में आपदा जोखिम को कम करने हेतु एनडीआरफ अरैल घाट पर तैनात कमांडर निरीक्षक चमन किशोर गुप्ता के द्वारा प्रशिक्षण के प्रथम कालांश में भूकंप एवं बाढ़ से बचाव के तरीके, गले में फसी बाहरी वस्तु के निकालने के तरीके, शारीरिक चोटो एवं सांप काटने का अस्पताल पूर्व उपचार, तात्कालिक स्ट्रेचर बनाना, लिफ्टिंग और मूविंग के तरीके, जल संरक्षण तकनीक, अग्निशामक यंत्र का उपयोग, सचेत ऐप के इंस्टॉलेशन और उपयोग आदि विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। इसी क्रम में द्वितीय कालांश में यातायात उप निरीक्षक अवधेश कुमार यादव के द्वारा प्रमुख मार्गो, महत्वपूर्ण स्थानो,स्नान घाटो, पार्किंगो, पांटून पुलों पर आवागमन के संबंध में यातायात व्यवस्था की सुचारू जानकारी प्रदान की।

भारत जोड़ो न्याय यात्रा को रोके जाने व हमले के विरोध में धरना

अवधनामा संवाददाता

आज़मगढ़। आज राष्ट्रीय आह्वान पर आज़मगढ़ कांग्रेस द्वारा अम्बेडकर जी की प्रतिमा पर बैठ कर भारतीय जनता पार्टी की तानाशाही सरकार द्वारा राहुल गांधी जी को भारत जोड़ो न्याय यात्रा के मार्ग में असम के नौगांव स्थित श्री श्री शंकर देव मंदिर में जाने से रोकना और पदयात्रा पर हमला एवं पोस्टरों के फाड़ने के विरोध में धरना प्रदर्शन किया गया।

कल सुबह जब पूर्व नियोजित कार्यक्रम के तहत भारत जोड़ो न्याय यात्रा लेकर निकले जिसकी पहले से प्रशासन द्वारा अनुमति दी गई थी इसके बावजूद भाजपा सरकार ने पुलिस का पहरा लगाकर उन्हें मंदिर जाने से रोक दिया और राहुल जी को इस तरह मंदिर जाने से रोके जाने पर लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन है आजाद भारत में कोई भी किसी भी व्यक्ति को किसी भी धार्मिक स्थल में प्रवेश से नहीं रोक सकता अध्यक्ष मोहम्मद नजम शमीम ने कहा भाजपा सरकार यात्रा में मिल रहा जन समर्थन से घबरा कर अपने सबसे भ्रष्ट मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा शर्मा से इस शांतिपूर्ण यात्रा को बाधित करने के लिए पूरी कोशिश कर रहे हैं देश संविधान से चलता है और वही संविधान हर मनुष्य को अपने धर्म का पालन करने के लिए कहता है पिछले दो दिनों में भारत जोड़ो न्याय यात्रा के काफिले के ऊपर सुनियोजित हमले पथराव करने और पोस्टर फाड़ने की घटनाएं हुई हैं भाजपा डरी हुई है और अपनी बौखलाहट का सबूत दे रही है आज पूरा देश राहुल गांधी जी की तरफ एक उम्मीद भरी निगाहों से देख रहा है कार्यक्रम में मोहम्मद नजम शमीम, रियाजुल हसन, रामगणेश प्रजापति, रमेश राजभर, अजीत राय, हरिओम उपाध्याय, रामप्यारे यादव, बेलाल अहमद, प्रदीप यादव, जोगिंदर यादव, चंदर्बली यादव, पुर्णमासी प्रजापति, देवमुनी राजभर, शाहिद खान, धर्मेंद्र यादव, मुन्नू मौर्य, अमरबहादुर यादव, मंत्राज यादव, मोहम्मद आमिर, सुनील यादव, पंकज यादव, रवि सआदित्य सिंह, रामनारायण, हीरालाल, मसूद अंसारी, मुशीर अहमद , समीर अहमद, शंभू शास्त्री आदि लोग उपस्थित रहे।

पौष पूर्णिमा 25 को, मेला क्षेत्र में रहेगा रूट डायवर्जेंट

प्रयागराज। माघ मेला-2024 के दौरान माघ मास, जो पौष पूर्णिमां 25 जनवरी से प्रारम्भ हो रहा है, में आगमन करने वाले भारी संख्या में कल्पवासियों के सुगम आगमन हेतु मार्ग निर्धारित किये गये हैं। यह जानकारी देते हुए डीआईजी सह माघ मेला एसएसपी डॉक्टर राजीव मिश्रा ने बताया कि कानपुर- लखनऊ- प्रतापगढ़ की तरफ से आने वाले समस्त कल्पवासी अपने हल्के वाहन के साथ पाण्टून पुल न0 03, 05, 06 से सम्बन्धित कल्पवास क्षेत्र में प्रवेश कर सकेंगे।

वाराणसी- जौनपुर क्षेत्र की तरफ से आने वाले समस्त कल्पवासी अपने हल्के वाहन के साथ टीकरमाफी- त्रिवेणी मार्ग से संगम लोवर मार्ग होते हुये, सम्बन्धित कल्पवास क्षेत्र में प्रवेश कर सकेंगे। इसी प्रकार मिर्जापुर- चित्रकूट- रीवा क्षेत्र की तरफ से आने वाले समस्त कल्पवासी अपने हल्के वाहन के साथ शास्त्री ब्रिज झूसी जिराफ चौराहे से टीकरमाफी त्रिवेणी मार्ग से संगम लोवर मार्ग होते हुए कल्पवास क्षेत्र में प्रवेश कर सकेंगे।

मां भारती की सेना नायक थे सुभाष चंद्र बोस: राजेश

नेताजी एवं क्रांतिकारी ठाकुर रोशन को दी गई श्रद्धांजलि

प्रयागराज अवधनामा संवाददाता। अमर क्रांतिकारी श्रद्धांजलि ग्रुप के द्वारा

मुट्ठीगंज स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पार्क में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 127वीं जन्म जयंती पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया और ठाकुर रोशन सिंह की 132 में जन्म जयंती मनाई गई। इस अवसर श्रद्धांजलि ग्रुप के अध्यक्ष राजेश केसरवानी ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस मां भारती के सच्चे नायक थे और भारत की आजादी में सैन्य शक्ति के रूप में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। उनके सैनिक शक्ति के पराक्रम के आगे अंग्रेजी सरकार को भारत छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। उन्होंने कहा कि देश की आजादी के लिए सुभाष चंद्र बोस जी के द्वारा दिया गया नारा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा और जय हिंद के नारे से देश की नौजवानों की तरूणाई राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए जागृत हुई। क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह के जीवन प्रदर्शन डालते हुए उन्होंने कहा कि ठाकुर रोशन अंग्रेजी सरकार के खिलाफ जाकर क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल के सहयोग से काकोरी कांड में अप्रत्यक्ष सहयोग किया। जिसको लेकर अंग्रेजी सरकार ने काकोरी कांड के क्रांतिकारियों के साथ उन्हें भी प्रयागराज के नॉर्थ मलाका (स्वरूप रानी हॉस्पिटल) स्थित जेल में फांसी दी। कार्यक्रम का संचालन शत्रुघ्न जायसवाल ने किया एवं संयोजक अभिलाष केसरवानी रहे। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में प्रमुख रूप से अजय अग्रहरि, विकास चौरसिया, श्रेयांश भार्गव, किशनचंद्र जायसवाल, सचिन गुप्ता, हरीश मिश्रा, नीरज केसरवानी, सुमित केशरवानी आदि मौजूद रहे।

सड़क सुरक्षा व यातायात माह का हुआ शुभारंभ

जौनपुर अवधनामा संवाददाता। शासन के निर्देश के क्रम में आज सड़क सुरक्षा माह-2024 के अन्तर्गत नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती के अवसर पर मानव श्रृखला को जिलाधिकारी जौनपुर अनुज कुमार झा, व पुलिस अधीक्षक जौनपुर डॉ0 अजय पाल शर्मा, के द्वारा हरी झण्डी दिखा कर शुभारम्भ किया गया। शासन के निर्देश के क्रम में सड़क सुरक्षा माह- 2024 के अन्तर्गत नेता सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती के अवसर पर मानव श्रृखला को जिलाधिकारी अनुज कुमार झा, व पुलिस अधीक्षक जौनपुर डॉ अजय पाल शर्मा, अपर पुलिस अधीक्षक नगर डा0 बृजेश कुमार, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सतेन्द्र कुमार, आरआईआरटीओ अशोक श्रीवास्तव, सम्भागीय प्रवर्तन अधिकारी, रमेश श्रीवास्तव, क्षेत्राधिकारी यातायात/सदर देवेश सिंह, क्षेत्राधिकारी नगर कुलदीप कुमार गुप्ता, प्रभारी निरीक्षक यातायात जी0डी0 शुक्ला व समस्त उप निरीक्षक यातायात की उपस्थिति में पूर्वान्ह 11.00 बजे से कक्षा 8 से 12 तक के विद्यालयों के छात्रों एवं उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के साथ-साथ स्टेक होल्डर विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों, एन0जी0ओ0, स्वयं सेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, एन0एस0एस0, एन0सी0सी0 एवं स्काउट गाईड के द्वारा मानव श्रृखला का निर्माण किया गया, श्रृखला में जनता के लोगों द्वारा बढ़-चढ़कर भाग लिया गया।

पीड़ित बच्ची को जिला अस्पताल के लिए किया रेफर

अतरौलिया, आज़मगढ़। चार वर्षीय बच्ची के साथ हुआ रेप पिता की तहरीर पर पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए मुकदमा दर्ज किया। बता दे कि स्थानीय थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी 4 वर्षीय बच्ची के साथ 19 जनवरी के दिन लगभग शाम गांव निवासी एक युवक उम्र लगभग 12 वर्ष व अपने ननिहाल में रहकर पढ़ाई कर रहे। एक युवक उम्र लगभग 13 वर्ष दोनों ने गांव के बाहर बच्ची को बहला फुसला कर ले जाकर बच्ची के साथ दुष्कर्म किया । इस दौरान दोनों युवकों द्वारा बच्ची के गुप्तांग में लकड़ी और एवं अंगुली भी डालकर चोट पहुंचाई गई। जिससे लड़की को काफी चोट आई, बच्ची द्वारा हल्ला करने पर कुछ लोगों को जब इसकी जानकारी हुई तो परिजनों को इसकी सूचना दिए। पीड़ित बच्ची की मां उसे लेकर अतरौलिया स्थित एक निजी अस्पताल पर पहुंची जहाँ डॉक्टर ने उसे जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। थानाध्यक्ष अतरौलिया सविंद्र राय ने बताया कि पीडित बच्ची के पिता की तहरीर पर आज मुकदमा पंजीकृत कर गिरफ्तारी की कार्रवाई की जा रही है।

ज़ाकिर ए अहलेबैत ज़ायर हुसैन नम आंखों से सुपुर्द-ए-खाक

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। शाहनूर अली गंज से जब ज़ाकिर ए अहलेबैत ज़ायर हुसैन का जनाजा निकला तो हर आंखें नम और चेहरा उदास था।ज़ायर हुसैन वह अज़ीम शख्सियत थे जो शहर की हर छोटी बड़ी मजलिसों में ज़िक्र ए अहलेबैत में अपने आप को मसरुफ़ किए रहते थे।

चाहे मजलिस पढ़नी हो या मर्सियाख्वानी या नौहा हर जगहां ज़ायर हुसैन मसरुफ़ ए शोहदाए कर्बला रहते थे। कल शाम उन्होंने लम्बी बीमारी से जुझते हुए अंतिम सांस ली। उनका जनाजा दिन में दो बजे घर से निकला तो हुजूम साथ दरियाबाद क़ब्रिस्तान तक रहा। अलम के साए में जनाजा चौक रानीमंडी से समदाबाद होते हुए अतरसुइया से दरियाबाद क़ब्रिस्तान पहुंचा जहां पहले से ही हज़ारों लोग अंतिम दर्शन को कतारबद्ध खड़े थे। शहर की दो दर्जन से अधिक मातमी अन्जुमनों व तन्ज़ीमो के लोग भी शामिल रहे। मौलाना जवादुल हैदर रिज़्वी साहब क़िब्ला ने नमाज़ ए जनाजा पढ़ाई। जनाजे में मौलाना जवादुल हैदर रिज़्वी, मौलाना आमिरुर रिज़्वी, मौलाना अम्मार ज़ैदी, मौलाना अफ़ज़ल अब्बास, ज़ाकिर ए अहलेबैत रज़ा अब्बास जैदी, काज़िम अब्बास, अहमद जावेद कज्जन, वक़ार हुसैन, ज़रग़ाम हैदर, नजीब इलाहाबादी , रौनक़ सफीपुरी, हसन नक़वी, अनीस जायसी, बाक़र मेंहदी, आसिफ रिज़्वी आदि शामिल रहे।

आयोजित हुई श्रीराम रूप सज्जा व निकाली शोभायात्रा

प्रयागराज। विद्या भारती से संबद्ध काशी प्रांत के रानी रेवती देवी स. वि. नि. इंटर कॉलेज, राजापुर मे श्रीराम रुप सज्जा एवं शोभा यात्रा का आयोजन विद्यालय के प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे के कुशल मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में विद्यालय के विशाल सभागार में राम रुप सज्जा कार्यक्रम का अयोजन किया गया जिसमें कक्षा प्रथम से लेकर द्वादश तक लगभभ 270 छात्र-छात्राओं ने श्री राम, लक्ष्मण एवं माता सीता का रुप धारण कर प्रभु श्रीराम दरवार की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती के सम्मुख दीपार्चन एवं पुष्पार्चन से हुआ। तत्पश्चात् विद्यालय के प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे ने कार्यक्रम की प्रस्ताविकी प्रस्तुत करते हुये कहा कि प्रभु श्रीराम का जन्मकाल लगभग 5100 ई0 पूर्व बताया जाता है,भगवान राम को विष्णु का अवतार माना जाता है, धरती पर असुरों का संहार करने के लिए भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में श्रीराम के रूप में मानव अवतार लिया था।

जनेश्वर मिश्र की 14वीं पुण्यतिथि मनी

आजमगढ़ अवधनामा संवाददाता। समाजवादी पार्टी कार्यालय, जनपद पर छोटे लोहिया के नाम से विख्यात, स्व. जनेश्वर मिश्र की 14वीं पुण्यतिथि उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर मनाई गई। समाजवादी पार्टी के नि. जिला अध्यक्ष हवलदार यादव ने कहा कि स्व.जनेश्वर मिश्र जी समाजवाद के पुरोधा थे, हमेशा सामाजिक न्याय के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे वे सादगी और ईमानदारी के प्रतीक थे। सामाजिक न्याय उत्थान के लिए शोषित, पीड़ित, वंचितों के हक और अधिकार दिलाने के लिए आजीवन प्रयत्नशील रहे। उनके त्याग, संघर्ष और सामाजिक योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। और वे हमेशा समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, सामाजिक समरसता, सर्वधर्म समभाव की बात करते थे। उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर ही समाजिक न्याय की रक्षा की जा सकती है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, पिछड़े, अल्पसंख्यक, महिलाओं, छात्र, नौजवानों, किसानों को धोखा देने का काम कर रही है और भाजपा सरकार नफ़रत भरे वातावरण को जन्म दे रही है व सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने का काम कर रही है और भ्रष्टाचारियों, माफ़ियाओं को संरक्षण देने का काम कर रही है। भाजपा सरकार में बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार हर मुद्दे पर फेल हो गई है। कार्यक्रम में विधायक- नफीस अहमद,बेचई सरोज, कमला कांत राजभर, पूजा सरोज, पूर्व मंत्री-रामआसरे विश्वकर्मा, पूर्व सांसद-नंदकिशोर यादव, अजीत कुमार राव, राजनरायन यादव, डॉ धनराज यादव,शिव सागर यादव, विवेक सिंह, टिफलुरहमान,अमीर अहमद, संतोष कुमार गौतम, विशाल विश्वकर्मा, निशान्त राय टीपू,अरून आदि समाजवादी पार्टी के नेता, पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती पर बनाई मानव श्रृंखला

अवधनामा संवाददाता

प्रयागराज। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 127 वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर सड़क सुरक्षा माह व स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत आज नेताजी सुभाष चन्द्र बोस चौराहा सिविल लाइन पर जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा एक साथ मानव श्रंखला बनाकर सड़क सुरक्षा व मतदाता जागरूकता का संदेश दिया गया।

इस मानव श्रंखला में सड़क सुरक्षा व स्वीप कार्यक्रम के समस्त स्टेक होल्डर विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों, एनजीओ, स्वंयसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, एनएसएस, एनसीसी एवं स्काउट गाइड के छात्र-छात्राओं, विभिन्न पदाधिकारियों व कार्मिकों एवं प्रतिनिधियों के द्वारा प्रतिभाग किया गया। सड़क सुरक्षा माह व स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं एवं अन्य प्रतिभागियों द्वारा सुभाष चौराहा, सिविल लाइन एवं सुभाष चौराहा से चारो दिशाओं को जाने वाले मार्ग यथा-सुभाष चौराहा से पत्थर गिरजा चौराहा, सुभाष चौराहा से सिविल लाइन बस अड्डा चौराहा, सुभाष चौराहा से पी0वी0आर0, रोबोट चौराहा, सुभाष चौराहा से डी0आर0एम0 आफिस जाने वाले मार्गो पर जनपद के विभिन्न विद्यालयों से आये छात्र-छात्राओं के द्वारा मानव श्रंखला बनायी गयी। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल द्वारा सुभाष चन्द्र बोस जी की मूर्ति पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। जिलाधिकारी द्वारा उक्त समारोह में उपस्थित छात्र- छात्राओं एवं समस्त उपस्थित प्रतिभागियों तथा विभागीय अधिकारियों और कार्मिकों को वाहन चलाते समय सड़क सुरक्षा से संबंधित संकेतो व यातायात नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित किया एवं शपथ दिलाई गई। उक्त कार्यक्रम में राजेश कुमार मौर्य, सम्भागीय परिवहन अधिकारी, प्रयागराज द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को सड़क दुर्घटना के गत वर्ष के आंकड़ों से अवगत कराते हुए दुर्घटना के फलस्वरूप होने वाली जन/धन हानि से सचेत किया गया। कार्यक्रम में जिला विद्यालय निरीक्षक पी0एन0 सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रभाकर त्रिपाठी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर संजीव गुप्ता सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन), राजीव चतुर्वेदी, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन) प्रयागराज, सुश्री अल्का शुक्ला, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन), टीआई अमित कुमार, पवन कुमार, मनोज, वी0एस0 यादव के साथ-साथ विद्यालयों के प्रधानाचार्य व शिक्षक- शिक्षिकाओं के साथ बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

प्रभु श्रीराम एवं अयोध्या मंदिर की सबसे बड़ी 3डी रंगोली बनाने वाले छात्र सम्मानित

प्रयागराज। श्री रामलला विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा के सुअवसर पर प्रभु श्री राम एवं अयोध्या मंदिर की विश्व की सबसे बड़ी 3डी रंगोली बनाने वाले अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं को आज माघ मेला परिक्षेत्र में स्थित विश्व हिंदू परिषद के शिविर में आरएसएस के प्रांत प्रचारक रमेश एवं अभाविप के प्रांत संगठन मंत्री अभिलाष ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। ध्यातव्य हो कि बनाई गई इस रंगोली के विश्व की सबसे बड़ी 3डी रंगोली होने का दावा अभाविप द्वारा किया जा रहा है। जिसे इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड द्वारा इसी सप्ताह तक प्रमाणिक कर दिया जाएगा। आज इस 3डी रंगोली को बनाने वाले समूह का नेतृत्व कर रहे अतुल कुमार सिंह सहित समूह के 24 विद्यार्थियों को शिविर में सम्मानित किया गया। आरएसएस के प्रांत प्रचारक, काशी प्रांत रमेश ने कहा कि विद्यार्थियों को उनके द्वारा प्रभु श्री राम का सजीव चित्रण करने की पहल सराहनीय है तथा आज के विद्यार्थियों को श्री राम द्वारा स्थापित आदर्शों को पुनः आत्मसात करने की आवश्यकता है।

विकास कार्यों में तमौली ग्राम सभा को शामिल किया जाये

अवधनामा संवाददाता

आजमगढ़। भगवान श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर ग्रामीण अंचलों में एक दूसरों के बीच पहुंचकर 101 किलो मिष्ठान वितरण कर जय श्री राम के नारों के उद्घोष के साथ प्रभु राम के प्रति लोगों ने अपना समर्पण एवं स्नेह प्रकट किया आजमगढ़ के तमौली ग्राम सभा में हो रहे हनुमान मंदिर के निर्माण कार्यों में आर्थिक सहयोग प्रदान करते हुए श्री शिल्पकार ने कहा कि देश की आजादी के बाद भी यह तमौली ग्राम सभा विकास कार्यों से वंचित है।

हम सरकार से ग्राम वासियों के लिए अपील करेंगे विकास कार्यों में तमौली ग्राम सभा को शामिल किया जाये शिक्षा की उच्च व्यवस्था के साथ-साथ आर्थिक एवं सामाजिक गतिविधियों को आगे बढ़ाया जा सके इसी अवसर पर डिह बाबा के स्थान पर 20 बाई 40 का टिनसेट रैन बसेरा तैयार किया जाएगा ताकि समय-समय पर उक्त स्थल का लोग लाभ ले सकें इस कार्य को पूर्वांचल जन मोर्चा के नेतृत्व में कराया जाएगा। इसी दौरान वनवासी समाज ऊंचा गांव एवं मोलनापुर माफी में भी मिष्ठान वितरण करते श्री भगवान विश्वकर्मा के मंदिर पर भी एक दूसरे को मिंष्ठान वितरण करते हुए जय श्री राम के नारों के साथ जन-जन में जय श्री राम मैं हो गया। इसी अवसर पर शासकीय अधिवक्ता राम प्रकाश त्रिपाठी एवं भाजपा पिछड़ा वर्ग के क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी मोनू विश्वकर्मा की गर्मीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में उपस्थित एवं शामिल अनिल चौहान, डॉक्टर साहब, अनिल विश्वकर्मा, प्रमोद विश्वकर्मा, रामफल मुसहर, विनोद कुमार, पवन कुमार, रजनीश विश्वकर्मा समेत सैकड़ो लोग उपस्थिति रहे।

कौशल्या माई हो स्वामी तुम जैसा मेरा रघुराई हो से माहौल बना राममय

अवधनामा संवाददाता

जौनपुर। अयोध्या धाम में श्री राम विग्रह स्थापना के हर्षित वातावरण में जौनपुर नगर झूम उठा। समाजसेवी राजनेता ज्ञान प्रकाश सिंह द्वारा आयोजित श्री राम मंदिर पर प्रतिष्ठा महोत्सव में सुप्रसिद्ध गायिका तृप्ति शाक्या के कभी राम बनके कभी श्याम बनके गीत के बोल से नगर वासी झूम उठे। मिथिला नगरिया फेम प्रिया मलिक ने जब अपने मिथिला नगरिया के सो निहाल सखियां गया तो पूरे माहौल में श्री रामचंद्रजी के मिथिला नगर का एहसास होने लगा। सोमवार की शाम गोपी घाट पर यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रारंभ में कार्यक्रम के संयोजक अमित सिंह बाबी ने आगंतुकों का स्वागत किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक रमेश जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात गोमती नदी के तट पर दीपदान कार्यक्रम संपादित किया गया। कार्यक्रम में आए महिलाओं और पुरुषों की टोली ने एक लाख 21 हजार डिपो से गोपीघाट से सद्भावना पुल तक गोमती तट के घाट पर जलाकर पूरे माहौल को दीपावली सरीखा बना कर अपनी खुशियों का इजहार किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण गोमती आरती रही। वाराणसी से आचार्य अमित की टोली ने भव्य आरती से मन मोह लिया कार्यक्रम में लोकप्रिय भजन गायिका तृप्ति शाक्या ने अपने सुमधुर आवाज में कौशल्या माई हो स्वामी तुम जैसा मेरा रघुराई हो से माहौल को राममय बना दिया।

महिन्द्रा युनिवर्सिटी ने ऑस्ट्रेलिया की ला ट्रोबे यूनिवर्सिटी के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किया

हैदराबाद, दिल्ली। महिन्द्रा युनिवर्सिटी और ऑस्ट्रेलिया की ला ट्रोबे युनिवर्सिटी ने एक सहमति ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया है। यह सिविल इंजीनियरिंग में

विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस रणनीतिक गठबंधन का उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ाना है और इसमें एक चार वर्ष का प्रोग्राम, एक समग्र विद्यार्थी आदान प्रदान पहल और फैकल्टी आदान प्रदान प्रोग्राम शामिल है। यह महिन्द्रा युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को अपने स्नातक प्रोग्राम के अंतिम दो वर्ष ला ट्रोबे युनिवर्सिटी में पूरा करने का अनूठा अवसर देगा और साथ ही एक विश्वविख्यात अकादमिक वातावरण उपलब्ध कराएगा जिससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय अनुभव मिलेगा। इस गठबंधन के तहत ला ट्रोबे युनिवर्सिटी इस प्रोग्राम में भागीदारी कर रहे विद्यार्थियों को सालाना 9500 ऑस्ट्रेलियाई डालर मूल्य की छात्रवृत्ति की पेशकश करेगा। ऑस्ट्रेलिया में दो वर्ष का अध्ययन पूरा करने पर विद्यार्थी दो वर्ष का पोस्ट स्टडी वर्क परमिट प्राप्त करने के पात्र होंगे जिससे वैश्विक स्तर पर रोजगार प्राप्त करने की संभावनाएं बढ़ेंगी। बेंडिगो कैंपस चुनने पर पोस्ट स्टडी वर्क की अवधि और दो वर्ष के लिए बढ़ जाएगी जिससे ऑस्ट्रेलिया में करियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए बेहतर विकल्प उपलब्ध होंगे। महिन्द्रा युनिवर्सिटी के कुलपति डाक्टर यजुलु मेदुरी के मुताबिक, यह एमओयू सिविल इंजीनियरिंग अनुसंधान और नवप्रवर्तन के क्षेत्र में भावी नेताओं को पोषण प्रदान करने की दिशा में हमारे प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कीर्तिमान है। इस साझीदारी से विद्यार्थियों को अत्याधुनिक ज्ञान, उद्योग प्रासंगिक कौशल और एक वैश्विक दृष्टिकोण तक पहुंच उपलब्ध होगा जो उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर सफल करियर के लिए तैयार करेगा।

आईआईएससी ने विप्रो जीई हेल्थकेयर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

नई दिल्ली। हेल्थकेयर प्रौद्योगिकियों डायग्नोस्टिक्स और डिजिटल समाधानों में अग्रणी वैश्विक प्रवर्तक विप्रो जीई हेल्थ सी ने आज भारत के प्रमुख अनुसंधान संस्थान भारतीय विज्ञान संस्थान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। भारत में स्वास्थ्य सेवा में नवाचार अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा देने के लिए एक अग्रणी गठबंधन। इस सहयोग का लक्ष्य पूरे जीवन चक्र को देखकर आपूर्ति की कमी को दूर करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना है जिसमें सह-विकास समाधान, प्रौद्योगिकियों को मान्य करना और उन्हें बाजार में लाने के लिए स्थानीय स्तर पर निर्माण करना शामिल है बागची पार्थसारथी अस्पताल और आईआईएससी मेडिकल स्कूल की आगामी स्थापना के साथ यह रणनीतिक सहयोग प्रयोगशाला से अस्पताल तक प्रौद्योगिकी लाएगा। भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) के निदेशक गोविंदन रंगराजन ने कहा हमारा मानना है कि नवीन अनुसंधान और विकास की तत्काल आवश्यकता है जो एनसीडी वाले रोगियों के लिए परिणामों में सुधार कर सकता है। यह सहयोग बेंच-टू-बेडसाइड इनोवेशन का प्रतीक बनाने के लिए अनुवादात्मक और नैदानिक अनुसंधान के साथ विज्ञान और इंजीनियरिंग के संयोजन पर जोर देगा।

त्रिपुरा में युवाओं को सशक्त बनाने के लिए पीएमकेवीवाई के तहत कौशल विकास पहल की शुरुआत

अगरतला, त्रिपुरा। त्रिपुरा के युवाओं को मांग आधारित, भविष्य के लिए तैयार करने और उद्योग के लिए तैयार कौशल के साथ आगे बढ़ाने के प्रयास में, माननीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, कौशल विकास और उद्यमशीलता और जल शक्ति राज्य मंत्री श्री राजीव चंद्रशेखर ने कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) की प्रमुख योजना प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत अगरतला, त्रिपुरा राज्य में कौशल विकास पहल शुरू की। पीएमकेवीवाई का यह नया संस्करण 3डी एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग, ड्रोन टेक्नोलॉजी, डेटा इंजीनियरिंग जैसे कुछ क्षेत्रों में 100 से अधिक फ्यूचर स्किल्स के साथ राज्य में युवाओं को आगे बढ़ाएगा। इस पहल के तहत, अगले 3 वर्षों में अगरतला, त्रिपुरा में 48,000 से अधिक युवाओं को कुशल बनाया जाएगा। यह पहल ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग और मजबूत उद्योग भागीदारी को भी प्राथमिकता देती है।

भारत सरकार में माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री कुमारी प्रतिमा भौमिक, कार्यक्रम का हिस्सा थे।

इस अवसर पर बोलते हुए, लेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, कौशल विकास और उद्यमशीलता

त्रिपुरा सरकार में उद्योग और वाणिज्य, गृह (जेल),ओबीसी कल्याण मंत्री सैन्टाना चकमा; एमएसडीई के सयुंक्त सचिव हिना उस्मा, फ्लिपकार्ट ग्रुप के पब्लिक पॉलिसी के हेड डॉ. तफ़ीम सिद्दीकी, सरकारी मामले और सार्वजनिक मामले, माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के डारेक्टर संदीप अरोड़ा, सिस्को के मैनेजिंग डारेक्टर हरीश कृष्णन और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस और जल शक्ति राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा, नरेंद्र मोदी सरकार न केवल घोषणाएँ करती है बल्कि सभी वादे पूरे करने के लिए कड़ी मेहनत भी करती है। यह हमारा लक्ष्य है कि त्रिपुरा में प्रत्येक युवा भारतीय को कौशल कार्यक्रमों और अवसरों तक पहुंच प्राप्त हो। इन कौशल अवसरों के माध्यम से, वे नौकरियाँ सुरक्षित कर सकते हैं, स्व-रोजगार में संलग्न हो सकते हैं और उद्यमशीलता को बढ़ावा दे सकते हैं।

राजीव गाँधी कैंसर संस्थान ने मुरादाबाद में कैंसर उपचार के क्षेत्र में स्थापित किए नये मानक

मुरादाबाद। राजीव गाँधी कैंसर संस्थान एवं रिसर्च केंद्र (आरजीसीआईआरसी) अत्याधुनिक तकनीकों के जरिए

कैंसर की जल्द पहचान, निदान, एकदम सटीक देखभाल और कैंसर के इलाज में होने वाले दुष्प्रभावों (साइड इफेक्ट्स) को न्यूनतम करते हुए कैंसर निदान एवं उपचार के क्षेत्र में क्रांति का नेतृत्व कर रहा है। इस प्रयोजन हेतु राजीव गाँधी कैंसर संस्थान द्वारा भारतीय चिकित्सा संघ (इंडियन मेडिकल एसोसिएशन आईएमए) मुरादाबाद के संग सतत चिकित्सा शिक्षा (कॉन्टीन्यूड मेडिकल एडुकेशन अथवा सीएमई) के अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कैंसर निदान और इलाज को प्रभावित करने वाले अतिमहत्वपूर्ण मुद्दों पर बात करने के लिए यह कार्यक्रम विशेषज्ञों के लिए विशेष मंच साबित हुआ। उन्होंने कैंसर निदान और उपचार पर असर डाल रही चुनौतियों और कैंसर-विज्ञान (ऑन्कॉलजी) में आधुनिकतम तकनीक की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में मुरादाबाद और राज्य के आसपास के क्षेत्रों के चिकित्सा जगत से जुड़े विशेषज्ञों ने भाग लिया।

छोटे शहरों में मरीजों को उपलब्ध कम जानकारी और कैंसर शब्द से जुड़ी सामाजिक जटिलताएंजैसी बड़ी चुनौतियों को रेखांकित करने वाले अपने भाषण में आरजीसीआईआरसी में वरिष्ठ सलाहकार एवं इकाई प्रमुख (सीनियर कंसलटेंट एंड यूनिट हैड) डॉ रजत साहा ने कहा कि इन मुद्दों को जल्द से जल्द सुलझाने की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों में मरीज अक्सर कैंसर के शुरूआती चरणों के बारे में अवगत नहीं हैं, और इसी वजह से वो लक्षणों को गंभीरता से नहीं लेते। लेकिन पिछले कई सालों में कैंसर के निदान को लेकर अच्छी-खासी प्रगति हुई है। अब तो उच्च गुणवत्ता की हेल्थ केयर सुविधाएं छोटे शहरों में भी उपलब्ध हैं। पिछले पांच वर्षों में सरकारी और निजी दोनों तरह के कैंसर अस्पतालों की संख्या काफी बढ़ी है।

कैंटाबिल रिटेल ने उत्तर प्रदेश में अपना 80वां स्टोर खोलकर अपनी अपनी रिटेल मौजूदगी का किया विस्तार

बहराईच। भारत के अग्रणी परिधान निर्माताओं एवं रिटेल विक्रेताओं में से एक, कैंटाबिल रिटेल इंडिया लिमिटेड ने बहराईच में

अपना रिटेल स्टोर खोलने की घोषणा की है। 1500 वर्ग फुट के क्षेत्र में फैला ब्रांड का यह स्टोर शॉप नंबर 48/41, रूप भवन गोंडा रोड, घसियारपुरा, बहराईच, उत्तर प्रदेश पर स्थित है।

स्टोर के उद्घाटन पर टिप्पणी करते हुए, कैंटाबिल रिटेल इंडिया लिमिटेड के निदेशक, श्री दीपक बंसल ने कहा, ÷हमें बहराईच में अपने नए रिटेल स्टोर के लॉन्च की घोषणा करते हुए बेहद खुशी महसूस हो रही है। एक ब्रांड के रूप में कैंटाबिल रिटेल को सभी आयु समूहों के मिड-प्रीमियम सेगमेंट में, ग्राहकों के बीच अच्छी तरह से स्वीकारा और सराहा गया है। अपने सभी ग्राहकों के लिए ट्रेंडी और प्रतिस्पर्धी फैशन परिधानों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए, हमने उत्तर प्रदेश में अपना यह स्टोर खोला है। आज, सम्पूर्ण देश में हमारी मजबूत उपस्थिति है और हमारा लक्ष्य अगले कुछ वर्षों में अपनी रिटेल उपस्थिति को और अधिक आक्रामक रूप से विस्तारित करना है।

नया कैंटाबिल रिटेल स्टोर अपने ग्राहकों को रिटेल अनुभव के भविष्य की झलक पेश करता है, जो कि प्रतिस्पर्धी मूल्य पर पुरुषों के लिए फॉर्मल वियर, कैजुअल एवं अल्ट्रा कैजुअल कपड़ों की सम्पूर्ण रेंज पेश करता है। इस स्टोर के खुलने के साथ ही, कैंटाबिल रिटेल पूरे भारत में 516 स्टोर तक पहुंच गया है और अपनी रिटेल उपस्थिति का विस्तार जारी रखने की योजना बना रहा है।

हीरो मोटोकॉर्प ने हीरो वर्ल्ड 2024 में पेश किया भविष्य का रोमांचक रोडमैप

नई दिल्ली। वर्ष 2024 वास्तव में बहुत खास है क्योंकि हम हीरो की 40वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। आज हम भारतीय प्रतिभा और उद्यम के प्रतीक के रूप में खड़े हैं। हम अपने देश की मैन्युफैक्चरिंग क्षमताओं, इंजीनियरिंग, नवाचार और प्रौद्योगिकी कौशल के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। वर्ष 2024 विशेष महत्व रखता है क्योंकि हम इस साल अपने संस्थापक और चेयरमैन एमेरिटस, मेरे प्यारे पिता और हमारे हीरो फॉरएवर डॉ. बृजमोहन लाल मुंजाल के शताब्दी वर्ष का जश्न मना रहे हैं और उनका स्मरण कर रहे हैं। उनका विशाल व्यक्तित्व अद्वितीय है, जो अपनी स्थायी विरासत और मजबूत नैतिक मूल्यों के जरिए हम सभी को प्रेरित करता रहता है। हीरो मोटोकॉर्प की वैश्विक पहुंच आज कई महाद्वीपों के लगभग 50 देशों तक फैली हुई है, जहां हीरो सिर्फ एक ब्रांड नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास से भरे भारत का एक चमकदार उदाहरण है जोकि देश के मूड एवं विजन को

प्रस्तुत करता है यह हमारे प्रधान मंत्री नरेंद्र भाई मोदी के विजन के मुताबिक उत्साह से भरपूर,

गतिशील, आत्मनिर्भर और महत्वाकांक्षी भारत को प्रतिबिंबित करता है। मोबिलिटी के भविष्य को ध्यान में रखते हुए, स्कूटर और मोटरसाइकिल बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी हीरो मोटोकॉर्प ने आज जयपुर में हीरो के अत्याधुनिक अनुसंधान एवं विकास केंद्र, सेंटर फॉर इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी में हीरो वर्ल्ड के बहुप्रतीक्षित दूसरे संस्करण का अनावरण किया। इस इवेंट में सबसे ज्यादा फोकस आईसीई सेगमेंट के नए प्रोडक्शन -रेडी वाहनों, ग्राहक-केंद्रित समाधानों, तकनीकी नवाचारों पर है। इसमें इलेक्ट्रिफिकेशन और सस्टेनेबिलिटी पर भी फोकस किया गया है। अपनी तरह के इस अनूठे आयोजन ने प्रतिष्ठित ब्रांड के लिए अपने महत्वाकांक्षी भविष्य के रोडमैप का अनावरण करने के लिए एक मंच का काम किया है।

कंपनी के 40 साल के शानदार इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित करते हुए, हीरो मोटोकॉर्प ने बहुप्रतीक्षित मैवरिक 440 मोटरसाइकिल के साथ मिड-वेट कटेगरी में कदम रखने की घोषणा की है। विश्वसनीय और कार्यकुशल मोटरसाइकिल और स्कूटर बानने की समृद्ध विरासत के साथ, कंपनी 400ष्ष सेगमेंट के डायनैमिक्स को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार है। मैवरिक 440 तकनीकी रूप से एक प्रमुख उत्पाद है जिसमें कई तरह के नए-नए प्रयोग किये गये हैं। यह डायनैमिक डिजाइन और उस खास विश्वसनीयता का एक आदर्श संयोजन है जिसके लिए हीरो मोटोकॉर्प जाना जाता है।

गैलेक्सी एस24 सीरीज की भारत में दमदार शुरुआत

गुरुग्राम। भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी सैमसंग ने आज अपनी हाल ही में लॉन्च हुई फ्लैगशिप गैलेक्सी एस24 सीरीज की रिकॉर्ड प्री-बुकिंग हासिल करने की घोषणा की है। इस शानदार उपलब्धि की बदौलत यह अब तक की सबसे सफल एस सीरीज बन गई है। तीन दिन पहले 18 जनवरी को देश में प्री-बुकिंग शुरू होने के बाद से भारत में 250,000 से अधिक ग्राहकों ने गैलेक्सी स्24 स्मार्टफोन का ऑर्डर दिया है। तुलनात्मक लिहाज से देखें तो सैमसंग को भारत में तीन हफ्तों में गैलेक्सी एस23 सीरीज के लिए 250,000 प्री-बुकिंग्स मिली थीं। सैमसंग इंडिया के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट राजू पुल्ल्न ने कहा, गैलेक्सी एआई से पावर्ड गैलेक्सी एस24 सीरीज, मोबाइल क्रांति के एक नए युग की शुरुआत करती है और नई संभावनाओं की खोज करने के लिए उपभोक्ताओं के हाथों में एआई की शक्ति देती है। गैलेक्सी एस24 के साथ, उपभोक्ता कम्युनिकेशंस को आसान और सरल बना सकते हैं और अपनी उत्पादकता और रचनात्मकता को अधिकतम कर सकते हैं, जो उनकी रोजाना की जिंदगी को सशक्त बनाता है। गैलेक्सी एस24 सीरीज की जबरदस्त सफलता दर्शाती है कि भारतीय उपभोक्ता नई तकनीक को तेजी से अपनाते हैं। मैं गैलेक्सी एस24 सीरीज को मिले जबर्दस्त रिस्पॉन्स के लिए हमारे उपभोक्ताओं को धन्यवाद देता हूं। मेड इन इंडिया गैलेक्सी एस24 अल्ट्रा, गैलेक्सी एस24+ और गैलेक्सी एस24 स्मार्टफोन लाइव ट्रांसलेट, इंटरप्रेटर, चैट असिस्ट, नोट असिस्ट और ट्रांसक्रिप्ट असिस्ट सुविधाओं के साथ फोन की सबसे बुनियादी भूमिका यानी कम्युनिकेशन या संचार के अनुभव को नई ऊंचाई पर लेकर जाते हैं। सैमसंग कीबोर्ड में एआई बिल्ट हिंदी सहित 13 भाषाओं में रियल टाइम में मैसेज को ट्रांसलेट भी कर सकता है। कार में, एंड्रॉएड ऑटो ऑटोमैटिक तरीके से आने वाले संदेशों को संक्षिप्त रूप में सामने रखते हुए प्रासंगिक रिप्लाई और एक्शन का भी सुझाव देगा।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के बेंगलूरु और भोपाल कैम्पस में पीजी कोर्सेस में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है

लखनऊ। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय अपने पूर्णकालिक दो वर्षीय पीजी कोर्सेस में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। इनमें एम.ए. एजुकेशन, एम.ए. डेवलपमेंट स्टडीज़, मास्टर ऑफ़ पब्लिक हेल्थ और एम.ए. अर्थशास्त्र कोर्सेस शामिल हैं। प्रवेश प्रक्रिया से महत्त्वपूर्ण तारीखें निम्नलिखित हैं आवेदन की अंतिम तारीख 9 फरवरी 2024, राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा 10 मार्च 2024, साक्षात्कार अप्रैल 2024, आवेदन प्रस्ताव मई 2024, कक्षाओं की शुरुआत जुलाई 2024। यह कोर्सेस अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के बेंगलूरु और भोपाल स्थित कैम्पस में चलाए जाएंगे। विद्यार्थियों को बेहतरीन शिक्षा उपलब्ध कराते हुए विद्यार्थियों में सामाजिक प्रतिबद्धता व विशेषज्ञता निर्माण करना इन कोर्सेस का लक्ष्य है। इसके जरिए सार्थक करियर बनाने के मौके मिलें।

अनुशासनात्मक ज्ञान का गहराई से विकास करना हमारे कोर कोर्सेस अकादमिक नींव मज़बूत करते हैं, वहीं अंतरानुशासनिक ऐच्छिक विषय विद्यार्थियों को अपने पसंदीदा व रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने मदद करते हैं। फ़ील्ड-प्रैक्टिस के ज़रिए जीवन के वास्तविक अनुभवों से विद्यार्थी को गहराई से जोड़ा जाता है। इन्टर्नशिप के अवसरों को उपलब्ध कराया जाता है और मेंटरिंग के साथ फ़ील्ड-वर्क प्रोजेक्ट करवाए जाते हैं। कैम्पस में आयोजित की जाने वाले वर्कशॉप, सेमिनार, गेस्ट-लेक्चर्स जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के ज़रिए दुनियावी अनुभवों से विद्यार्थियों को परिचित करवाया जाता है। विद्यार्थियों को अकादमिक विकास, भाषाओं को सीखने, व्यावसायिक विकास और प्लेसमेंट आदि के लिए व्यापक रूप में सहायता प्रदान की जाती है।

विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। पहले आवेदकों की लिखित परीक्षा ली जाएगी। लिखित परीक्षा में शॉर्टलिस्ट किए गए आवेदकों का साक्षात्कार लिया जाएगा। आवेदकों को परीक्षा और साक्षात्कार में प्रदर्शन के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा।

टाटा मोटर्स के फ्लीटएज ने 5 लाख कमर्शियल वाहनों को डिजिटल तरीके से जोड़ा

मुंबई। भारत में कमर्शियल वाहन बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी, टाटा मोटर्स ने आज अपने डेडिकेटेड कनेक्टेड व्हीकल प्लेटफॉर्म फ्लीटएज के साथ 5 लाख कमर्शियल वाहनों को जोड़ने की घोषणा की है। वाहनों के कुशल प्रबंधन के लिए विशेषतौर पर डिजाइन किया गया, फ्लीटएजस्मार्टटेक्नोलॉजीज का इस्तेमाल कर वाहन का अपटाइम बढ़ाता है और सड़क सुरक्षा में सुधार करता है। यह प्लेटफॉर्म इससे जुड़े हर वाहन की स्थिति, सेहत, जगह और ड्राइवर के व्यवहार पर वास्तविक समय में कार्यवाही के योग्य जानकारियां साझा करता है। इस प्रकार वाहनों के मालिक एवं प्रबंधक परिचालन क्षमता को बढ़ाने, लॉजिस्टिक्स खर्च कम करने और अपना फायदा बढ़ाने के लिये बेहतर फैसले कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण फीचर्स- टाटा मोटर्स फ्लीटएज

वाहन की सेहत पर रियल टाइम में जानकारी

वाहनों की ट्रैकिंग और ट्रेसिंग

ड्राइवर के व्यवहार पर अलर्ट्स

ईंधन की खपत का विश्लेषण

हित वाले डाटा की सुलभता

अपनी तरह की इस पहली उपलब्धि को हासिल करने के बारे में श्री भारत भूषण, हेड डिजिटलबिजनेस, टाटा मोटर्स कमर्शियलव्हीकल्सने कहा, 'टाटा मोटर्स लॉजिस्टिक्स को शानदार और सक्षम बनाने के लिये प्रतिबद्ध है। फ्लीटएज अपनेमहत्वपूर्ण मजबूत प्रस्ताव, डाटा पर आधारित इंटेलिजेंस, रियल-टाइम जानकारियों और वाहन के पूर्वानुमान के साथ इस कोशिश में एक असली गेमचेंजर रहा है। इससे फ्लीट का ज्यादास्मार्ट प्रबंधन संभव हुआ है। हमारे लाखों ग्राहकों को इसके इस्तेमाल से फायदा हो रहा है। उनकी परिचालन क्षमता बढ़ रही है और ट्रकों के स्वामित्व की कुल लागत कम हो रही है। सच्चे भागीदार के तौर पर हम अपने ग्राहकों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, ताकि उनका बिजनेसज्यादा सफल हो।'' फ्लीटएज अपने यूजर-फ्रेंडलीइंटरफेस के साथ आता है। यह वाहन में पहले से इंस्टॉलकिये गये विभिन्नसेंसर्स से मिलने वाले कई इनपुट्स दिखाता है। इस प्रकार वाहन की सेहत पर लगातार नजर रखी जा सकती है और सही समय पर मैंटेनेन्स के लिये अलर्ट्स से वाहन का अपटाइम बढ़ाया जा सकता है। ईंधन की बचत करने वालीतकनीकें बताने के लिये यह ड्राइविंग के तरीकों का विश्लेषण भी करता है और ड्राइवर के व्यवहार पर नजर रखता है।

कोटक सिक्योरिटीज ने लॉन्च किया ट्रेड फ्री प्रोप्लानइक्विटी ट्रेडर्स के लिए पे लैटर (एमटीएफ) के साथ सिर्फ 9.75% सालाना पर

लखनऊ। कोटक सिक्योरिटीज ने अपने कोटक निओ और कोटक स्टॉक ट्रेडर प्लेटफॉर्म पर व्यापारियों के लिए ट्रेड फ्री प्रो प्लान लॉन्च किया है। यह फीचर-पैक सब्सक्रिप्शन-आधारित प्लान 9.75 फीसदी सालाना पर पे लेटर, जिसे मार्जिन ट्रेडिंग फैसिलिटी भी कहा जाता है, प्रदान करता है। यूजर्स 1000 से ज्यादा स्टॉक ट्रेड कर सकते हैं और अपनी क्रय शक्ति को 4 गुना तक बढ़ा सकते हैं। पे लैटर (बाद में भुगतान) सुविधा की अन्य मुख्य विशेषताओं में अनलिमिटेड होल्डिंग अवधि, पोजिशन बनाने और एमटीएफ रिसर्च अनुसंधान सिफारिशें पाने के लिए नकदी के बजाय कोलैटरल के रूप में किसी के शेयरों और ईटीएफ का उपयोग करने की क्षमता है।

कोटक सिक्योरिटीज के एमडी और सीईओ जयदीप हंसराज ने कहा, हमारे ग्राहकों की जरूरतों को सुनना और पूरी करना हमारी यात्रा को आकार देने में महत्वपूर्ण रहा है। पे लैटर सुविधा की बढ़ती मांग को समझते हुए हमें ट्रेड फ्री प्रो योजना शुरू करने के लिए प्रेरणा मिली। हम ट्रेडर्स को उनकी इच्छा के अनुसार सशक्त बनाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, 9.75% सालाना की किफायती ब्याज दर पर योजना की पेशकश को लेकर उत्साहित हैं। हम यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी पेशकश को लगातार विकसित करने के लिए समर्पित हैं कि हम भारत में निवेशकों और ट्रेडर्स के लिए पसंदीदा ब्रांड बने रहें। कोटक सिक्योरिटीज के प्रेसिडेंट और हेड डिजिटल बिजनेस, आशीष नंदा ने कहा, कोटक सिक्योरिटीज में हमारे ग्राहकों की जरूरतें हमारी पेशकश के केंद्र में हैं।

सहयोगात्मक भावना का प्रतीक है गति शक्ति कार्यक्रम बढ़ी हुई फण्डिंग लाभकारी

नई दिल्ली। वर्ष 2024 का बजट भारत के वास्तविक बुनियादी - ढांचे की क्षमता को उजागर करने, देश को बेहतर कनेक्टिविटी, आर्थिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के भविष्य की ओर ले जाने की काफी संभावनाएं रख सकता है। गति शक्ति कार्यक्रम, सहयोगात्मक भावना का प्रतीक है, जिसने विभिन्न मंत्रालयों को एकीकृत करके और परियोजनाओं के निष्पादन को सुव्यवस्थित करके प्रगति की लौ जागृत की है। बजट में बढ़ती हुई फण्डिगं इन लौ को और जागृत करेगी जिससे परिवहन, ऊर्जा और शहरी नियोजन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी आएगी। यह समग्र दृष्टिकोण, तालमेल और दक्षता को बढ़ावा देने वाला होगा। इस बारे में एजिस इण्डिया कंसल्टिंग इंजीनियर्स प्रा. लिमिटेड के एमडी (भारत और दक्षिण एशिया) श्री संदीप गुलाटी का कहना है कि भारत को अपने बुनियादी ढांचे के अन्तर को कम करने और प्रगति का एक निर्बाध नेटवर्क बनाने के लिए बिल्कुल इसी बात की आवश्यकता है। एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व एसेट मॉनिटइजिंग इनिशिएटिव है। सड़कों, रेलवे और बंदरगाहों जैसी मौजूदा संपत्तियों के मूल्य का लाभ उठाकर, सरकार के पास निजी निवेश या आकर्षित करने और अपने बुनियादी - ढांचे नेटवर्क को आधुनिक बनाने का एक सुनहरा अवसर है। यह उचित रणनीति न केवल छिपी हुई क्षमता को उजागर करती है बल्कि भविष्य की परियोजनाओं के लिए बहुत आवशयक पूंजी भी लगाती है, जिससे विकास और विकास का एक अच्छा चक्र बनता है। हालाँकि, वास्तव में फ्यूचर-प्रूफ बुनियादी ढांचे की यात्रा एक मजबूत डिजिटल सुदृढता के बिना पूरी नहीं हो सकती है।

बलरामपुर फाउंडेशन का मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला परियोजना, भारत के गाँवों में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने का लक्ष्य है

बलरामपुर फाउंडेशन का मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला परियोजना, भारत के गाँवों में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने का लक्ष्य है। बलरामपुर फाउंडेशन, एक गैर लाभ कारी संगठन है , जिसका उद्देश्य बलरामपुर चीनी मिल्स लिमिटेड की सामूहिक जिम्मेदारी को पूरा करना है I इस धारणा के साथ , मोबाइल विज्ञान प्रयोगशालाओं की स्थापना की है ताकि भारत के पिछड़े क्षेत्रों में विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा मिले। बलरामपुर फाउंडेशन ने अगस्त्या इंटरनेशनल फाउंडेशन के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश के 4 विभिन्न जिलों में ग्रामीण छात्रों के जीवनों पर प्रभाव डाला है। मोबाइल विज्ञान प्रयोगशालाएं बलरामपुर, बाराबंकी, लखीमपुर खीरी और गोंडा जिलों में स्थापित की गई हैं ताकि उत्तर प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों में विज्ञान शिक्षा में क्रांति आ सके। इन मोबाइल विज्ञान प्रयोगशालाओं के साथ, बलरामपुर फाउंडेशन का लक्ष्य है उत्तर प्रदेश के ग्रामीण और असमर्थ क्षेत्रों के छात्रों के बीच एक अधिक निष्पक्ष प्रगति बनाना। मोबाइल विज्ञान प्रयोगशाला परियोजना के माध्यम से, बीसीएमएल ना केवल गुणवत्ता वाली शिक्षा और संसाधनों की सीमित पहुँच वाले क्षेत्रों में विज्ञान शिक्षा और हाथों की अनुभव से सीखने के अनुभवों को पहुँचा सकता है, बल्कि

समुदायों में समावेशीता की भावना भी बना सकता है।

डाबर ने लॉन्च किए स्पेशल लिमिटेड एडीशन अयोध्या पैक

अयोध्या। अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर डाबर इंडिया लिमिटेड ने अपने प्रमुख ब्रांड्स डाबर रैड पेस्ट और डाबर आंवला हेयर ऑयल - के स्पेशल एडीशन अयोध्या पैक लॉन्च किए हैं। इस पावन शुरूआत के उपलक्ष्य में खुशियों को बढ़ाने के लिए ये लिमिटेड एडीशन पैक डिज़ाइन किए गए हैं। ये स्पेशल पैक दो महीने के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश के बाज़ारों में उपलब्ध होंगे। डाबर रैड पेस्ट और डाबर आंवला हेयर ऑयल के लिए लिमिटेड एडीशन अयोध्या पैक का लॉन्च करते हुए हमें बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। डाबर इंडिया लिमिटेड के एक्ज़क्टिव वाईस प्रेज़ीडेन्ट मार्केटिंग श्री अभिषेक जुगरान ने कहा राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर ये स्पेशल पैक लॉन्च किए गए हैं और हमें खुशी है कि हमें इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा बनने का मौका मिला है। ये पैक हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं परम्पराओं के प्रति हमारे सम्मान की पुष्टि करते हैं।

पॉलीकैब अपने अत्याधुनिक वायरिंग और केबलिंग

लखनऊ। इलेक्ट्रिकल गुड्स की प्रमुख कंपनी और वायर और केबलों की मार्केट लीडर पॉलीकैब इंडिया लिमिटेड को देश के प्रतिष्ठित श्री राम मंदिर, सबरी मंदिर और अयोध्या में राम पथ राजमार्ग से इनके वायर और केबल सॉल्यूशन प्रोवाइडर के रूप में जुड़े होने पर गर्व है। पॉलीकैब ने इस टाइमलेस हेरिटेज की सुरक्षित विद्युतीकरण को सुनिश्चित करने के लिए एडवांस टेक्नोलॉजी वायर और केबल प्रदान किए है। कंपनी के प्रवक्ता ने कहा कि पॉलीकैब में हम प्रतिष्ठित श्री राम मंदिर प्रोजेक्ट का हिस्सा बनकर सम्मानित महसूस कर रहे हैं हमारे प्रोडक्ट, उच्चतम गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करते हुए, नवीनतम तकनीक और विश्व स्तरीय सामग्रियों से निर्मित होते हैं। वायर और केबल्स में लीडर के रूप में, पॉलीकैब हाई-परफॉर्मेंस वाले उत्पाद देने के लिए प्रतिबद्ध है जो श्री राम मंदिर जैसी प्रतिष्ठित संरचनाओं के विकास में योगदान करते हैं। पॉलीकैब इंडिया ने अटल टनल, आईएनएस विक्रांत, सूरत इंटरनेशनल एयरपोर्ट दुनिया के सबसे बड़े कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स सूरत डायमंड बाउर्स, समृद्धि महामार्ग और कई अन्य प्रतिष्ठित परियोजनाओं के लिए सफलतापूर्वक प्रोडक्ट्स की सप्लाई की है। चूंकि श्री राम मंदिर सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बन गया है, पॉलीकैब को अपनी एडवांस्ड टेक्नोलॉजी के माध्यम से विद्युतीकरण की सुविधा प्रदान करके इसकी यात्रा का एक अभिन्न अंग बनने पर बहुत गर्व है।

फाइलेरिया रोगियों को दी जा रही है एमएमडीपी किट

अवधनामा संवाददाता

देवरिया। फाइलेरिया उन्मूलन अभियान के तहत जिले के फाइलेरिया (हाथीपांव) रोगियों को एमएमडीपी किट का वितरण किया जा रहा है। इसके साथ ही फाइलेरिया रोगी नेटवर्क, आशा कार्यकर्ता और सीएचओ के सहयोग से मरीजों को फाइलेरिया ग्रसित अंगों की सफाई रखने के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है। अब तक जिले के 860 फाइलेरिया रोगियों को एमएमडीपी किट का वितरण किया जा चुका है। सीएमओ डॉ राजेश झा ने बताया कि जनपद में करीब 1900 फाइलेरिया ग्रसित हाथीपांव रोगी चिन्हित किए गए हैं। यह ऐसे लोग हैं जिनके हाथ-पैर में सूजन आ गई है या फिर उनके फाइलेरिया ग्रसित अंगों से द्रव का रिसाव होता है। इस स्थिति में प्रभावित अंगों की सफाई रखना बेहद जरूरी होती है। ऐसे मरीजों को किट दी जा रही है। किट में प्रभावित अंगों की अच्छी तरह से साफ-सफाई के लिए टब, मग, तौलिया, साबुन, गरम पट्टी व एंटी फंगल क्रीम दी जा रही हैं। फाइलेरिया ग्रसित अंगों की साफ-सफाई रखने से त्वचा पर संक्रमण का डर नहीं रहता है और सूजन में भी कमी रहती है। उन्होंने बताया कि फाइलेरिया क्यूलेक्स मच्छर के काटने से होता है। यह मच्छर दूषित पानी में पनपते हैं। जब यह मच्छर किसी फाइलेरिया ग्रसित व्यक्ति को काटने के बाद स्वस्थ व्यक्ति को काटता है तो फाइलेरिया के परजीवी खून के जरिए उसके शरीर में प्रवेश कर उसे भी फाइलेरिया से संक्रमित कर देते हैं।

5 से 15 वर्ष में दिखते फाइलेरिया के लक्षण

डीएमओ सुधाकर मणि ने बताया कि फाइलेरिया संक्रमण के लक्षण पांच से 15 वर्ष में उभरकर सामने आते हैं। इससे या तो व्यक्ति को हाथ-पैर में सूजन की शिकायत होती है या फिर अंडकोष में सूजन आ जाता है। महिलाओं के स्तन के आकार में असामान्य परिवर्तन हो सकता है।

व्यायाम से मिलता है आरामः बैतालपुर ब्लॉक के सिरजमदेइ निवासी फाइलेरिया मरीज पौहारी सिंह (62) ने बताया कि प्रशिक्षण में हाथीपांव के सूजन को कम करने के लिए व्यायाम और प्रभावित अंग के साफ-सफाई के बारे में जानकारी दी गई है। सफाई के लिए एमएमडीपी किट भी मिली है। किट में बाल्टी, बाथ टब, मग, साबुन,, तौलिया और क्रीम है। उन्होंने बताया मैं सबसे पहले अपने हाथी पांव वाले दाएं पैर को पानी से गीला करता हूँ।

एल्बेंडाजोल की टेबलेट खिलाई जाएगी निःशुल्क

देवरिया। जिलाधिकारी अखंड प्रताप सिंह की अध्यक्षता में आज सायं धनवंतरि सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की शासी निकाय की बैठक आयोजित हुई। बैठक में डीएम ने स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर किये जाने एवं आगामी एक फरवरी को आयोजित होने वाली डीवार्मिंग डे को सफल बनाने के संबन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि इस अभियान में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही न हो, यह बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण अभियान है। सभी लक्षित बच्चों को इस अभियान से जोड़े और उन्हें पेट के कीड़े मारने की दवा अवश्य खिलाएं।

जिलाधिकारी ने कहा कि इस कार्य में आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ती बढ़-चढ़कर के अपनी भागीदारी निभाये और सभी बच्चों में दवा का वितरण सुनिश्चित करें। इस अभियान में 16,80,117 बच्चे एवं किशोर 1-19 वर्ष आयुवर्ग के चिन्हित किए गए हैं, जिन्हें पेट के कीड़े मारने की दवा एल्बेंडाजोल की टेबलेट निःशुल्क खिलाई जाएगी।

जगह-जगह भक्तिभाव में उत्साह से अर्पण को बढ़े हाथ

अवधनामा संवाददाता

अमेठी। इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गई 22 जनवरी की तारीख जिसमें भक्ति की ऐसी भावना चतुर्दिक दिखाई पड़ी की हर हाथ भगवान के लिए कुछ अर्पण करने को बढ़ा दिखाई पड़ा। नगर हो या गांव गली हो या मोहल्ला हर जगह श्री धाम अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम चंद्र जी के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का उत्सव मनाया जा रहा था। शाम को चाहे झोपड़ी हो या अट्टालिका दीपावली की तर्ज पर रोशन हो उठी। पटाखों और फुलझड़ियों की गूंज सुनाई देने लगी।सोमवार देर रात तक यह उत्सव चलता रहा। अमेठी महिला स्वैच्छिक समिति की सचिव नीरज पाण्डेय की अगुवाई में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर बच्चों के बीच प्रसाद और उपहार वितरण किया गया।कार्यक्रम में समिति के पदाधिकारी और क्षेत्र के संभ्रांत लोग उपस्थित रहे। वहीं क्षेत्र के थौरा गांव से निकली शोभा यात्रा पिंडोरिया मुसवापुर होते हुए अमेठी आई। टिकरी चौराहे पर प्रवेश अग्रहरि सोनू पाण्डेय बजरंग पाण्डेय आदि के नेतृत्व में प्रसाद वितरित किया गया। रामापुर में विंध्या प्रसाद अग्रहरि पवन कुमार आदि ने प्रसाद वितरित किया। टिकरी गांव में पूर्व मंत्री डॉ संजय सिंह ने बाबा राम शाह स्मारक का उद्घाटन कर पूजन किया। टिकरी में चौबीस घंटों तक सीताराम नाम का जप भी चला यहां के लोगों ने भव्य शोभा यात्रा निकाली। डॉ संजय सिंह ने कहा कि आज भगवान श्री राम चंद्र जी के प्राण प्रतिष्ठा पर हम सबको ये सीख लेना चाहिए कि श्री रामचरित मानस में जो भी बातें बताई गई हैं उनका हम अनुपालन करें।

पराक्रम दिवस पर बनाई मानव श्रृंखला सड़क सुरक्षा का लिया गया संकल्प

अवधनामा संवाददाता

- सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में हुआ आयोजन
- यातायात नियमों का पालन करना सभी का कर्तव्यः कुलपति

गोरखपुर। पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर मंगलवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में सड़क सुरक्षा अभियान के तहत मानव श्रृंखला बनाकर सतर्कता व जागरूकता का संकल्प लिया गया।

प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय रोड सेफ्टी क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना और राष्ट्रीय कैडेट कोर के सयुक्त आयोजन में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन का स्मरण किया। सड़क सुरक्षा अभियान में युवाओं को जागरुक करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन बहुत अमूल्य है, इसकी सुरक्षा करें। यातायात नियमों का पालन करना सभी का कर्तव्य है। संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि नेता जी सुभाष चंद्र बोस पराक्रम और शौर्य के प्रतीक और सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। रोड सेफ्टी क्लब के नोडल अधिकारी धनंजय पाण्डेय, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे और एनसीसी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव ने सड़क सुरक्षा के प्रति सभी को जागरूक किया। मानव श्रृंखला बनाने के अभियान को कुलपति डॉ वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव ने शुभकामनाएं दीं।

कार्यक्रम में गुरु गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्या डॉ डीएस अजीथा, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एनएस, डॉ रोहित श्रीवास्तव, डॉ. शशिकांत सिंह, डॉ विमल दूबे सहित सभी प्राचार्य, अधिष्ठता, शिक्षकगण कक्षा समन्वयक आदि उपस्थित रहे।

परिवार के सदस्य की तरह सबकी चिंता करते हैं पीएम मोदीः रमापति

अवधनामा संवाददाता

देवरिया। देसही देवरिया विकास खंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत बरवा मीर छापर और सोनबरसा में मोदी की गारंटी गाड़ी पहुंची । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सदर सांसद डा रमापति राम त्रिपाठी ने मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर तथा दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अभी 22 जनवरी को ही हम लोगों ने भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर को दीपावली की तरह एक उत्सव के रूप में मनाया है, यह सुनहरा अवसर भाजपा सरकार का नेतृत्व कर रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन के नाते ही संभव हो पाया है, अब हम अपने आराध्य भगवान श्री राम का अद्भुत दर्शन कर पाएंगे। मोदी के ऊपर जनता का अटूट विश्वास है कि वो जो कहते हैं उसे गारंटी के साथ पूरा भी करते हैं । यह भाजपा की सरकार है जिसने गरीबों, किसानों, छोटे व्यापारियों और समाज के विभिन्न वर्गों की मदद की है। स्वतंत्रता के बाद लंबे समय तक विकास का लाभ कुछ बड़े शहरों तक ही सीमित था। लेकिन उनकी सरकार छोटे शहरों के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रही है और इससे विकसित भारत की नींव मजबूत होगी।

इंटरमीडिएट की प्रयोगात्मक परीक्षाएं कल से

अमेठी। जिला विद्यालय निरीक्षक रीता सिंह ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा परिषद की वर्ष-2024 की इण्टरमीडिएट प्रयोगात्मक परीक्षाएं 25 जनवरी 2024 से 01 फरवरी 2024 तक तथा हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की लिखित परीक्षाएं 22 फरवरी 2024 से 09 मार्च 2024 तक जनपद में आयोजित की जायेगी। इस सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि प्रयोगात्मक एवं लिखित परीक्षाओं में किसी भी छात्र छात्रा अभिभावक प्रधानाचार्य अथवा अध्यापक जानकारी कठिनाई शिकायत होने पर जिला विद्यालय निरीक्षक अमेठी रीता सिंह के मो0नं0-9454457413, 9452494270, 8318928624, बोर्ड परीक्षा कण्ट्रोल रूम प्रभारी सुनील श्रीवास्तव के मो0 नं0-9453768842 बोर्ड परीक्षा मानीटरिंग सेल प्रभारी डॉ0 अनुज मौर्य के मो0नं0-9532650681 व बोर्ड परीक्षा सहायक राकेश कुमार कश्यप के मो0 नं0-9415963016, 7355115417 पर अवगत कराया जा सकता है।

मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 45343 नए मतदाता जुड़ेः डीएम

जनपद में 26,68,967 मतदाता है व 2633 मतदेय स्थल

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। उप जिला निर्वाचन अधिकारी वैभव मिश्रा ने अवगत कराया है कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन मंगलवार 23 जनवरी को कर दिया गया है। मतदाता सूची समस्त तहसील मुख्यालय, बूथ तथा जिला निर्वाचन कार्यालय कुशीनगर में उपलब्ध है। मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को भी समस्त विधानसभाओं के मतदाता सूची की एक-एक प्रति उपलब्ध करा दी गई है। उन्होंने जनपद कुशीनगर के सभी मतदाताओं से अपील किया है कि उक्त मतदाता सूची को अपने-अपने बूथ पर जाकर देख सकते हैं। यदि कोई त्रुटि पायी जाय तो उसे संशोधित कराने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय, सम्बन्धित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं बीएलओ को सूचित कर सकते है। का नाम मतदाता सूची में सम्मिलित किया गया, जिनको जोड़ते हुए वर्तमान में जनपद में कुल मतदाताओं की संख्या 2668967 हो गई है। वर्तमान में जनपद में कुल 2633 मतदेय स्थल हैं, जिन पर मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन कर दिया गया है। उन्होंने जनपद कुशीनगर के सभी मतदाताओं से अपील किया है कि उक्त मतदाता सूची को अपने-अपने बूथ पर जाकर देख सकते हैं। यदि कोई त्रुटि पाई जाय तो उसे संशोधित कराने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय, सम्बन्धित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं बीएलओ को सूचित करा सकते हैं।

आरुषि व अभिनव का नवोदय विद्यालय में हुआ चयन

मथौली बाजार, कुशीनगर अवधनामा संवाददाता। मथौली कस्बा में स्थित श्री भीमराव अम्बेडकर पब्लिक स्कूल के दो छात्रों का चयन जवाहर नवोदय विद्यालय में हुआ है। जिसपर विद्यालय परिवार ने मिठाई खिलाकर बधाई दी।

जानकारी के अनुसार मथौली कस्बा के वार्ड नंबर 11 निवासी आरुषि गोंड पुत्री सुनील कुमार गोंड व कस्बा के ही वार्ड नंबर 04 निवासी अभिनव जायसवाल पुत्र रंजीत जायसवाल सहित दोनों बच्चों का चयन कक्षा छः के लिए हुआ है। छात्रों के चयन होने पर प्रबंधक रमेश चंद्र यादव ने बताया कि छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए शिक्षा दिया जाता है। तथा शिक्षक बच्चों को आगे बढ़ने का मार्गदर्शन करते रहते हैं। इस अवसर पर चेयरमैन नवरंग सिंह, दिपक कुमार, प्रधानाध्यापक बलबीर सिंह, लालजी गोंड, धर्मवीर मद्धेशिया, धर्मेंद्र श्रीवास्तव, अजय बगड़िया, भाजपा मंडल अध्यक्ष अदालत प्रसाद, सभासद प्रिंस जायसवाल, रविन्द्र सैनी, आदि ने चयन होने पर बधाई दिया है।

पत्रकार को पितृ शोक, दी गई श्रद्धांजलि

बोदरवार, कुशीनगर अवधनामा संवाददाता। मोतीचक विकास खंड के ग्राम पंचायत पोखरभिंदा नंबर दो निवासी पत्रकार यगवेंद्र मिश्रा के 105 वर्षीय पिता की मंगलवार को स्वर्गवास हो गया। इनके निधन पर क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। अंतिम संस्कार आज बुधवार को कप्तानगंज स्थित रामजनाकी घाट पर होगा। बता दें कि उक्त गांव निवासी एक दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार यगवेंद्र मिश्रा के पिता पं. गौरीशंकर मिश्र उम्र लगभग 105 वर्ष पिछले कई दिनों से बीमार चल रहे थे। मंगलवार को अचानक उनका स्वर्गवास हो गया। इनके निधन पर क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। जगह जगह पत्रकार संगठनों ने शोक सभा कर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दिया। शोक सभा में वरिष्ठ पत्रकार बेचू बीए, दिनेश यादव, प्रदीप मिश्र, अभिषेक पांडेय, शकील अहमद, संजय मिश्रा, शिवेश तिवारी, अनिल पांडेय, अरुण सिंह, आशुतोष उर्फ पंकज तिवारी, बृजबिहारी पांडेय, सुनील यादव, नर्वदा सिंह सहित तमाम पत्रकार उपस्थित रहे।

मानव श्रृंखला बनाकर दिलायी गई सड़क सुरक्षा की शपथ

अवधनामा संवाददाता

अमेठी। सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत मंगलवार को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती पर जवाहर नवोदय विद्यालय गौरीगंज के परिसर में सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला एवं सड़क सुरक्षा शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी सर्वेश सिंह द्वारा किया गया।

कक्षा-8 से 12 एवं उच्च शिक्षा के विद्यालयों के 817 छात्र-छात्राओं द्वारा मानव श्रृंखला में प्रतिभाग करने वाले प्रतिभागियों को यातायात नियमों का पालन करने हेतु उन्होंने सड़क सुरक्षा शपथ दिलायी। इसके अतिरिक्त तहसील मुख्यालयों पर उपजिलाधिकारी एवं ब्लाक मुख्यालयों पर खण्ड विकास अधिकारियों के अगुवाई में कक्षा-8 से 12 तक के समस्त विद्यालयों के छात्रों एवं उच्च शिक्षा के समस्त विद्यार्थियों को एक साथ सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला बनायी गई तथा सड़क सुरक्षा शपथ दिलायी गई। जिसमें कुल विद्यालयों के 42235 छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी ने कहा कि जनपद में सड़क सुरक्षा अभियान के तहत आज एक विशेष कार्यक्रम सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला का आयोजन किया गया है। कहा कि सड़क सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत परिवहन विभाग के साथ पुलिस लोक निर्माण समस्त निर्माण एजेंसी शिक्षा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रतिदिन विद्यालयों नगरीय निकायों एवं ब्लाक स्तर पर सड़क सुरक्षा के प्रति कार्यक्रम आयोजित कर आम जनमानस को यातायात नियमों का पालन करने हेतु जागरूक किया जा रहा है।

मतदाता सूची का हुआ अंतिम प्रकाशन

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। उप जिला निर्वाचन अधिकारी/अपर जिलाधिकारी वैभव मिश्रा ने अवगत कराया है कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन मंगलवार 23 जनवरी को कर दिया गया है।

मतदाता सूची समस्त तहसील मुख्यालय, बूथ तथा जिला निर्वाचन कार्यालय कुशीनगर में उपलब्ध है। मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को भी समस्त विधानसभाओं के मतदाता सूची की एक-एक प्रति उपलब्ध करा दी गई है। उन्होंने जनपद कुशीनगर के सभी मतदाताओं से अपील किया है कि उक्त मतदाता सूची को अपने-अपने बूथ पर जाकर देख सकते हैं। यदि कोई त्रुटि पायी जाय तो उसे संशोधित कराने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय, सम्बन्धित निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं बीएलओ को सूचित कर सकते है।

शौर्य और पराक्रम के प्रतीक है सुभाष चंद्र बोस

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। नेताजी सुभाष चंद्र बोस देश के शौर्य और पराक्रम के प्रतीक है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महानायक होने के साथ वे आजाद हिन्द फौज के नेतृत्वकर्ता थे। उन्होंने तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा जैसे अमर स्वाधीनता मंत्र का उद्घोष कर देशवासियों को आजादी के लिए प्रेरित किया था।

यह विचार नगरपालिका परिषद पडरौना के चेयरमैन विनय जायसवाल ने व्यक्त की। श्री जायसवाल मंगलवार को आजादी के महानायक सुभाष चंद्र बोस के जंयती पर नगर के सुभाष चौक पर स्थापित नेताजी को माल्यार्पण कर श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के बाद संबोधित कर रहे थे। नपाध्यक्ष ने पराक्रम दिवस के नाम पर मनाये जाने वाले इस दिवस पर राष्ट्र के प्रति समर्पित होने के लिए नगरवासियों का आवाहन भी किया। उन्होंने कहा कि विगत छह वर्षों से पडरौना नगरपालिका क्षेत्र में स्थापित सभी महापुरुषों और राष्ट्रनायकों की प्रतिमाओं की प्रतिदिन साफ-सफाई कर माल्यार्पण किया जाता है। कर उनका सम्मान किया जाता है। इसके पूर्व नपाध्यक्ष ने महानायक सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा की साफ-सफाई की, फिर माल्यार्पण किया। उन्होंने नेताजी के जीवन चरित्र पर विस्तार से चर्चा करते हुए उनके बताए गये मार्ग पर चलने का संकल्प दोहराया। इसी कडी मे नगर क्षेत्र के भूतपूर्व सैनिकों व उनके परिजनों को सम्मानित किया गया। इस मौके मेज़र एमके बरनावल, कैप्टन एल.बी. त्रिपाठी, कैप्टन समसुद्दी, सूबेदार मस्तराज गुप्ता, सूबेदार मुस्तफ़ा अली, फ़ौजदार निज़ामुद्दीन अंसारी, हवलदार अनिल सिंह, नायब सूबेदार राजेश पांडेय, नायब सूबेदार नथुनी प्रसाद, हवलदार मुरारी शर्मा, हवलदार युद्धवीर सिंह, सूबेदार एन. पी. पटेल, अध्यक्ष प्रतिनिधि मनीष बुलबुल जायसवाल, बृजेश शर्मा, भास्कर शर्मा, नीरज मिश्र, भरत चौधरी, विकास मद्धेशिया, आशुतोष मिश्र, रामु पाण्डेय, विपिन जायसवाल, अशोक जायसवाल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

सुभाषचंद्र बोस को जयंती पर भाजपाइयों ने किया नमन

देवरिया अवधनामा संवाददाता। नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पराक्रम दिवस पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने सुभाष चौक स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया। इस दौरान जनपद उपभोक्ता केंद्रीय भण्डार लिमिटेड के डायरेक्टर रामदास मिश्रा ने कहा कि भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने में नेताजी का बहुत बड़ा योगदान था। तुम मुझे खून दो-मैं तुम्हें आजादी दूंगा,जय हिंद-जय भारत और दिल्ली चलो जैसे नारों से उनहोंने देश के युवाओं में देशभक्ति की लौ जलाई थी। भाजपा किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष पवन कुमार मिश्रा ने कहा सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे, जिन्होंने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और अद्वितीय नेतृत्व के माध्यम से भारतीयों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान पूर्व जिला मंत्री संजीत धर द्विवेदी, अम्बिकेश पाण्डेय, सूरज पटेल, नवीन सिंह, विद्यासागर मिश्रा, प्रदीप कुमार, मुकेश मद्धेशिया, संदेश शर्मा, शशांक चौबे, अरविन्द यादव आदि रहे।

जागरूक मतदाता लोकतंत्र की नींवः डीएम

देवरिया अवधनामा संवाददाता। भारत रत्न सुभाष चन्द्र बोस जी की जयंती के अवसर पर आज स्वर्गीय रविन्द्र किशोर शाही स्टेडियम में स्वीप के अंतर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम एवं सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत सड़क सुरक्षा शपथ का आयोजन किया गया। छात्रों, महिलाओं एवं जागरुक नागरिकों ने मानव श्रृंखला बनाकर मतदान और सड़क सुरक्षा का संदेश भी दिया। इस अवसर पर जिलाधिकारी अखंड प्रताप सिंह एवं पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा ने स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। जिलाधिकारी ने भारत रत्न सुभाष चन्द्र बोस जी की जीवनी पर प्रकाश डाला तथा मतदाता जागरुकता एवं सडक सुरक्षा के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान उन्होंने मतदान तथा यातायात नियमों की शपथ भी दिलायी।

इमरान ने नीट की परीक्षा पास कर जिले का नाम किया रौशन

अवधनामा ब्यूरो

कुशीनगर। जनपद के डुमरभार गांव के निवासी बशीर अहमद के पुत्र इमरान अहमद ने नीट 2023 की परीक्षा उत्तीर्ण कर परिजनों सहित जिले का नाम रौशन किया है। उनकी सफलता से परिवार सहित पूरे गांव में खुशी की लहर है। परीक्षा उत्तीर्ण करने का श्रेय इमरान ने अपने माता-पिता, भाई-मित्र और गुरुजनों को दी है। उन्होंने प्रथम प्रयास में ही यह सफलता हासिल की है। खेती-बाड़ी कर परिवार का भरण-पोषण करने वाले बशीर अहमद के पुत्र इमरान अपनी प्राथमिक शिक्षा की पढ़ाई गांव के स्कूल से किये। सैनिक इण्टरमीडिएट कालेज साखोपार से वह हाईस्कूल में 56 फीसदी व बुद्ध इण्टरमीडिएट कालेज कुशीनगर से इण्टरमीडिएट की परीक्षा में 58 फीसदी अंक प्राप्त कर स्नातक की पढ़ाई करने के इलाहाबाद आ गए। केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद से इमरान ने अंग्रेजी विषय से स्नातक मे 78 प्रतिशत व स्नातकोत्तर मे 70 फीसदी अंक प्राप्त कर लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएचडी कर रहे है। इसी दरम्यान वह यूजीसी नेट में बैठने का निर्णय लिया और प्रथम प्रयास मे ही वह 58 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सफलता का परचम लहराया। इमरान की इस सफलता पर भाई-असलम अंसारी, डॉ पुष्कर यादव, डॉ मनोज यादव मोठ नवाज, मो0 कसीम, पूर्व प्रधान ग्यासुद्दीन मास्टर रियाजुद्दीन, मेहदी हसन, चन्द्र प्रताप दूबे, आजित कुमार दूबे, सोनू त्रिपाठी, बब्बू सिंह सहित क्षेत्रवासियों ने खुशी जाहिर की है।

भारत रत्न सुभाष चंद्र बोस की मनी जयंती

छात्र-छात्राओं ने मिलकर बनाया सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला

अवधनामा ब्यूरो

सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर माल्यार्पण करते डीएम व एसपी

कुशीनगर। भारत रत्न सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर मंगलवार को उदित नारायण इंटर कॉलेज पडरौना में जिलाधिकारी उमेश मिश्रा एवं पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल द्वारा सुभाष चंद्र बोस के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती मनाई गई। कक्षा 08 से 12 तक के समस्त विद्यालयों एवं जनपद स्तर पर उदित नारायण इण्टर पड़रौना में विद्यालयों के छात्रों के साथ-साथ गोस्वामी तुलसी दास इण्टर कालेज, सियोबाई इण्टर कालेज, हनुमान इण्टर कालेज एवं अन्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने सड़क सुरक्षा मानव श्रृंखला बनाई गई। जिलाधिकारी द्वारा सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई। जिलाधिकारी ने सड़क सुरक्षा के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सभी को यातायात नियमों के पालन हमेशा पूरी तत्परता के साथ करना चाहिए। कहा कि बच्चे व युवा देश के भविष्य हैं।

हम सभी यातायात के नियमों का पालन कर दुर्घटना से बच सकते है। दो पहिया वाहन चलाते समय स्वयं तथा पीछे बैठे हुए व्यक्ति को हेलमेट अवश्य पहनाए। चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें।

वाहन ड्राइविंग के समस्त नियमों का अनुपालन अवश्य करें। तेज रफ्तार में वाहन कदापि न चलाएं। पुलिस अधीक्षक द्वारा समस्त छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा नियमों के पालन किए जाने की जानकारी दी गई।

सूचना

मैं ऋचा शेट्टी (RICHA SHETTY) पत्नी अर्जुन शेट्टी, 3/100, विश्वास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ की निवासी हूं। मैंने अपना नाम ऋचा शेट्टी (RICHA SHETTY) से बदलकर ऋचा सिंह शेट्टी (RICHA SINGH SHETTY) रख लिया है, भविष्य मे अब मुझे ऋचा सिंह शेट्टी (RICHA SINGH SHETTY) के नाम से जाना, पहचाना और पुकारा जाए।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पासपोर्ट संख्या L1638798 मे मेरे नाम की स्पेलिंग त्रुटिवश WASHID ALI SIDDIQUI पड़ गई है मेरे नाम की सही स्पेलिंग WASID ALI SIDDIQUI है।

वासिद अली सिद्दीकी
पुत्र हामिद अली सिद्दीकी
निवासी 105 ज़म्बूर खाना
मछली मोहाल, लखनऊ

ग्राम लौका तहसील सदर में की जा रही अवैध प्लाटिंग

अवधनामा संवाददाता

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर के मोहल्ला अहमदपुर थाना आर0सी0 मिशन जिला शाहजहाँपुर का रामकिशोर की आराजी गाटा सं0-228 रकबा 194 हे0 ग्राम लौका परगना व तहसील सदर जिला शाहजहाँपुर में स्थित है। प्रार्थी की जमीन के पड़ोस में सुहेल अली खाँ पुत्र मुनव्वर अली खाँ निवासी मो0 महमंद हदक थाना सदर बाजार व मो0 शरीफ पुत्र अब्दुल रशीद नि0मो0 बाबूजई पेशावरी व अरशद खां पुत्र ताज मोहम्मद खां नि0मो0 ककरा कला थाना सदर व उबैस मियां पुत्र शकीलुउद्दीन गियां नि0गो0 ककरा खुर्द थाना कोतवाली पड़ोस की गाटा संख्या 227 पर अवैध रूप से इटे लगाकर प्लाटिंग कर रहे है। जिस कारण प्रार्थी की गाटा संख्या से जबरदस्ती रास्ता निकालना चाहते है। दिनांक 28.10.2023 को उक्त चारों लोग लेवर लेकर आये और प्रार्थी के पड़े प्लाट में खड़ी आलू की फसल खोदकर नष्ट कर दी तथा रास्ता साफ कर दिया। प्रार्थी जब सुबह को मौके पर गया तब प्रार्थी ने देखा कि उक्त लोगो ने प्रार्थी के प्लाट पर कब्जा कर रास्ता निकाल दिया है। प्रार्थी ने जब उक्त लोगो से रास्ता निकालने से मना किया तो उक्त सभी लोग प्रार्थी को गन्दी गन्दी गालियां देने लगे तथा जान से मारने की धमकी दी तो पीड़ित रामकिशोर ने 112 नंबर पर फोन किया जब पुलिस आयी तो पुलिस ने कहा कि आप थाने में तहरीर दो जाके। रामकिशोर थाने गया परन्तु उक्त माफियाओं के दबाव के कारण पुलिस ने रामकिशोर की कोई बात नहीं सुनी। बही कुछ लोग भू-माफिया किस्म के लोग है तथा रामकिशोर की जमीन पर जबरदस्ती कब्ज़ा करके जमीन से रास्ता निकालना चाह रहे है। उक्त लोगो ने दिनांक 28.12.2023 को रामकिशोर के कालम उखाड़ दिये एवं दिनांक 24.12.2023 को प्रार्थी के बांस काट लिये। न्यायहिल में उक्त भू-माफियाओं द्वारा की जा रही अवैध प्लाटिंग को रुकवाकर जमीन से कब्जा हटवाकर रास्ता निकालने से रोका जाना अति जरूरी है।

स्वास्थ्य शिविर, फल वितरण व असहाय व्यक्तियों को बाटें जायेंगे कम्बलः डीएम

75वे गणतंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी ने की बैठक

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह मनाये जाने सम्बंधी रुपरेखा निर्धारित करने हेतु जिलाधिकारी अक्षय त्रिपाठी ने कलैक्ट्रेट सभागार में सम्बंधित अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देश दिये कि शासन के निर्देशानुसार गणतंत्र दिवस का आयोजन पूरी भव्यता के साथ किया जाएगा, आयोजन के अंतर्गत 26 जनवरी को प्रातः प्रभातफेरी का आयोजन, घण्टाघर पर ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण, जेल चौराहे पर अम्बेडकर पार्क में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण, तुवन मंदिर के पास अवन्तीबाई, रानी लक्ष्मीबाई एवं परमानन्द की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया जायेगा, सभी कार्यालयों, शासकीय अर्द्धशासकीय कार्यालयों में शैक्षिक संस्थाओं को छोड़कर में झण्डा अभिवादन, राष्ट्रगान एवं तत्पश्चात संविधान में उल्लिखित संकल्प का स्मरण किया जायेगा। पुलिस लाइन में पुलिस, एनसीसी, होमगार्ड, स्काउट गाइड, वन विभाग के जवानों द्वारा परेड, कार्यक्रम समाप्त होने के उपरान्त मार्चपास्ट किया जाएगा। पुलिस लाइन में ही गणतंत्र दिवस कार्यक्रम पुलिस परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं शिक्षा विभाग द्वारा विज्ञान एवं शिक्षा से सम्बंधित कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। इसके अतिरिक्त सभी शैक्षिक संस्थानों में झंण्डा फहराया जाना, राष्ट्रगान तथा संकल्प पढ़ा जाएगा। कार्यक्रम के तहत कांशीराम आवास कॉलोनी गोविन्द नगर एवं डिग्री कॉलेज के पास तथा आसरा कॉलोनी केन्द्रीय विद्यालय के पास स्वास्थ्य शिविर, स्वास्थ्य सम्बंधी जानकारियों के पोस्टर आदि का प्रदर्शन किया जाएगा, वृद्धाश्रम, राजकीय सम्प्रेक्षण गृह सिद्धनपुरा एवं राजकीय किशोर गृह दैलवारा में फ्रूट आदि का वितरण किया जाएगा। स्टेडियम से मनोहर लाल के पेट्रोल पम्प तक एवं वापिस साईकिल रेस, स्टेडियम से कैलगुवां चौराहे तक व वापिस बालक तथा बालिकाओं की क्रॉस कन्ट्री रेस, जिला कारागार में फ्रूट तथा नगर क्षेत्र की निर्धन बस्तियों में निर्बल एवं असहाय व्यक्तियों को कम्बल वितरण किया जाएगा। बैठक में एडीएम वित्त एवं राजस्व अंकुर श्रीवास्तव, एडीएम नमामि गंगे लवकुश त्रिपाठी, सीएमओ डॉ इम्तियाज अहमद, डीडीओ केएन पाण्डेय, एसडीएम सदर अमित कुमार भारतीय, सीओ सिटी अभयनारायण राय, सीएमएस डॉ राजेन्द्र प्रसाद एवं डॉ मीनाक्षी सिंह, डीआईओएस ओपी सिंह सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

भगवान श्रीराम का किया हवन पूजन

ललितपुर अवधनामा संवाददाता। श्रीराम मंदिर अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के पावन पर्व पर देर तक विधि विधान से हवन पूजन जारी रहा। श्रद्धालुओं ने पांच सौ वर्ष बाद भगवान श्रीराम को उनके मंदिर में स्थापित कर उनकी प्राण प्रतिष्ठा कराये जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुये भगवान श्रीराम के नारे लगाकर प्रसाद का वितरण किया। हवन पूजन में विवेक मड़वैया, खुशाल समैया, आनंद सेन, चुनमुन सेन, कुंदन लाल प्रजापति, हरदेव सिंह, दाऊ साहब जगदीश सेन, कपूर पाटकर, जगदीश सेन, दिनेश डेरी, दीपक जैन, पुनीत कुशवाहा, भागचंद, तूफान राजपूत, रुपेंद्र सेन, मनोज कौशिक, पम्मी पांडे आदि श्रद्धालु उपस्थित रहे।

भीषण जाम को लेकर सक्रिय हुई एसडीएम व एसएचओ

सुलतानपुर अवधनामा संवाददता। श्रीराम की विख्यात नगरी अयोध्या ने प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा के उपरांत श्रद्धालुओ का तांता लगा हुआ है। भारी भीड़ व वाहनों की लंबी कतारो को दृष्टिगत रखते हुए यात्रियों की सुविधा को लेकर कूरेभार बाजार में एस पी सोमेन बर्मा ने कूरेभार बाजार ने यातायात व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने एसएचओ अमित कुमार मिश्र को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बल्दीराय एसडीएम विदुषी सिंह व कूरेभार प्रभारी निरीक्षक अमित कुमार मिश्रा ने यातायात व्यवस्था की कमान संभाली। रूट डायवर्जन करके यात्रियों को सुलभ यात्रा के लिए रास्ता बताया गया। वाहन चालकों व यात्रियों को समझाने बुझाने में एसडीएम विदुषी सिंह व एसएचओ अमित कुमार मिश्रा जूते हुए है।

थारू बाहुल्य क्षेत्रों में मेडिकल स्टोरों पर छापेमारी

बहराइच। औषधि निरीक्षक विनय कृष्ण ने बताया कि जनपद के सुदुर एवं सीमावर्ती क्षेत्रों के प्रमुख बाजार एवं बलईगांव में अनाधिकृत रूप से संचालित मेडिकल स्टोरों पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मोनिका रानी के निर्देश पर 59वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल एवं खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन द्वारा संयुक्त रूप से छापेमारी की कार्यवाही की गई। औषधि निरीक्षक ने बताया कि बलईगांव में अवैध रूप से बिना लाइसेंस संचालित पाये जाने 02 मेडिकल स्टोरों अनिल मेडिकल व शमा मेडिकल स्टोर पर औषधियों को सीज किया गया तथा नमूनें संग्रहित किये गये। निरीक्षण के दौरान मेडिकल स्टोर संचालकों द्वारा द्वारा किसी प्रकार का औषधि लाइसेंस एवं दवाओं से सम्बन्धित अभिलेख प्रस्तुत नहीं किये गये। श्री कृष्ण ने बताया कि इसके अलावा आवेश मेडिकल स्टोर, राहत मेडिकल हाल एवं न्यू भारत मेडिकल स्टोर से भी दवाओं के नमूने संग्रहीत कर नमूनों की जांच एवं परीक्षण हेतु राजकीय प्रयोगशाला, वाराणसी को प्रेषित किया गया है।

जिला संवाद कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस ने झोंकी ताकत

अवधनामा संवाददाता

- पूर्व कैबिनेट मंत्री छत्तीसगढ़ व प्रदेश के कई दिग्गज नेता होंगे शामिल

सुल्तानपुर। मंगलवार को जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय के प्रांगण में आयोजित जिला संवाद कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस ने पूरी तैयारी कर ली है। जिला संवाद कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि छत्तीसगढ़ सरकार में रहे कांग्रेस के पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश तिवारी उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष मनीष मिश्रा, प्रदेश महासचिव एवं जनपद प्रभारी योगेन्द्र मिश्रा, प्रदेश सचिव एवं जनपद प्रभारी अर्जुन पासी सम्मिलित होंगे। जिला संवाद (एक दिवसीय कार्यशाला) कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु कांग्रेस कार्यकर्ता व नेताओं ने पूरी ताकत झोंक दी है। ज्ञात हो कि आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस नेताओ ने कार्यकर्ता व आम जनता से सीधा संपर्क साधने में जुटे हैं, जिससे लोकसभा चुनाव 2024 में बेहतर से बेहतर परिणाम दिखे। कांग्रेस जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा ने बताया कि कांग्रेस पार्टी द्वारा मंगलवार को जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में जिला संवाद (एक दिवसीय कार्यशाला) कार्यक्रम आयोजित होना सुनिश्चित किया गया है। कार्यक्रम में मुख्यतिथि छत्तीसगढ़ कांग्रेस सरकार में रहे पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश तिवारी, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रदेश महासचिव एवं प्रदेश सचिव विशिष्टतिथि के तौर पर सम्मिलित होंगे। वहीं उन्होंने बताया कि जिला कार्यालय पर %जिला संवाद% (एक दिवसीय कार्यशाला) का कार्यक्रम में जनपद के सभी नेता, जिला और शहर कांग्रेस कमेटी के समस्त पदाधिकारी, ब्लॉक के पदाधिकारी व सभी न्याय पंचायत के अध्यक्ष और सभी फ्रंटल संगठनों के लोग मौजूद रहेंगे।

विभागीय स्टॉलों के माध्यम से कल्याणकारी योजनाओं की दी जाएगी जानकारीः सीडीओ

अवधनामा संवाददाता

ललितपुर। 26 जनवरी तक ''उत्तर प्रदेश दिवस'' के आयोजन की तैयारियों हेतु मुख्य विकास अधिकारी कमलाकान्त पाण्डेय की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने समस्त अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आज से 26 जनवरी तक उत्तर प्रदेश दिवस का आयोजन भव्यतापूर्वक किया जाना है, जिसके आयोजन के लिए विभिन्न विभागों के कार्य निर्धारित किये जाने हेतु बैठक आयोजित की गई है। कार्यक्रम में होने वाली प्रत्येक गतिविधि के लिए नोडल अधिकारी नामित किये गए हैं, प्रतिदिन होने वाले कार्यक्रम भी निर्धारित किये गए हैं। आज मोनिया नृत्य, सरस्वती वंदना, स्वागत गीत, अतिथियों का उद्बोधन, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की शपथ, उत्कृष्ट उत्तीर्ण 10 छात्राओं को प्रोत्साहन राशि का वितरण, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बुन्देली गीत, बीसी सखी को साड़ी वितरण, विद्युत सखी को प्रिंटर वितरण, सांस्कृतिक कार्यक्रम-वाद विवाद प्रतियोगिता, नाटक, नृत्य, लोक कलाकारों द्वारा मंच प्रस्तुति एवं दिव्यांगजनों को उपकरण वितरण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। बैठक में पीडीडीआरडीए एके सिंह, डीडीओ केएन पाण्डेय, डीसी मनरेगा रविन्द्रवीर यादव, डीपीआरओ नवीन मिश्रा, पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी राजेश कुमार बघेल, प्रोबेशन अधिकारी नन्दलाल सिंह, कार्यक्रम अधिकारी नीरज सिंह, कृषि अधिकारी राजीव कुमार भारतीय, उद्यान अधिकारी परवेज खान, एनआरएलएम से रवि दुबे, विद्यासागर, सूचना विभाग से सुमित कुमार सहित समस्त सम्बंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

जिम्मेदार अधिकारियों की घोर उपेक्षा का शिकार नगर का प्रेस क्लब

सुलतानपुर अवधनामा संवाददता। जनपद के प्रशासनिक अधिकारियों को प्रेस क्लब नही दिखा, जबकि प्रदेश के मुखिया व देश के प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों के क्रम में जनपद के समस्त सरकारी भवनों पर पेट्रोल पंप, ढाबा व प्रतिष्ठानों को साफ स्वच्छ, रंगाई-पुताई करते हुए साज सजावट करने के निर्देश दिए गए थे। जिला अधिकारी व जिला सूचना अधिकारी की लापरवाही तथा घोर उपेक्षा का शिकार जनपद का प्रेस क्लब हो रहा है।न उत्सव, न साज- सजावट, न रंगाई-पुताईऔर ना ही किसी प्रकार की कोई रोशनी-लाईटिंग की व्यवस्था ही की गई। आखिर क्यों जिला प्रशासन/जिला सूचना अधिकारी की नजर नहीं पड़ी। प्रेस क्लब का मालिकाना हक व उसकी चाभी सूचना कार्यालय में जिला सूचना अधिकारी के पास रहती है,उसके उपयोग व रखरखाव की जिम्मेदारी उन्ही को बनती है।जिले के पत्रकारों के संगठन पत्रकार ऐशोसिएशन द्वारा कुछ माह पूर्व प्रेस क्लब परिसर की झाड़ियां साफ करवाकर साफ सफाई करवाई गई थी।जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा प्रेस क्लब की उपेक्षा किए जाने से जनपद के पत्रकारों में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है। पत्रकारों ने उक्त लापरवाही की शिकायत प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ व प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी जी से करने का निर्णय लिया है।

डीएम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक

बहराइच अवधनामा संवाददाता। वित्तीय वर्ष 2024-25 अन्तर्गत ''पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ जन अभियान-2024'' का सफल बनाये जाने के उद्देश्य से कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जिला पर्यावरण समिति एवं जिला गंगा संरक्षण समिति की बैठक के दौरान जिलाधिकारी मोनिका रानी ने लक्षित विभागों को निर्देश दिया कि आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष पौधरोपण कराएं जाने हेतु गडढों की खुदाई, पौधों की उपलब्धता, उठान तथा सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु रोपित गये पौधों की सुरक्षा को सुनिश्चित कराने के व्यापक प्रबन्ध किये जाएं। डीएम ने अधिकारियों को सुझाव दिया कि निर्धारित लक्ष्य 65 लाख 59 हज़ार 840 पौधों तक ही सीमित न रहें, विभागीय परिसम्पत्तियों में यदि पर्याप्त स्थान उपलब्ध है और वह स्थान पौधरोपण के लिए उपयुक्त है तो लक्ष्य से अधिक पौधे भी रोपित कराने का प्रयास करें। गंगा व सहायक नदियों में पर्यावरणीय प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण एवं उपशमन और जल के सतत पर्याप्त प्रवाह सुनिश्चित करने के उपाय करने के उद्देश्य से गठित जिला स्तरीय गंगा समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम ने कहा कि गंगा नदी के भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारणों के अद्वितीय महत्व को देखते हुए गंगा व सहायक नदियों का संरक्षण एवं पुनर्द्धार अत्यन्त आवश्यक है। डीएम ने डीएफओ को निर्देश दिया कि नदियों के तट पर स्थित ग्रामों में श्रमदान के माध्यम से बांस के पौध रोपित कराये जाएं। बैठक में वर्चुअली प्रतिभाग कर रहे खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि घाटों की साफ-सफाई की व्यवस्था के साथ-साथ वहां पर स्थायी रूप से डस्टबिन स्थापित करा दिये जायें ताकि कोई भी तीज-त्योहार के समय नदियों के तटों व नदियों को कूड़ा करकट से बचाया जा सके। डीएम ने निर्देश दिया पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए छात्र-छात्राओं के माध्यम से विभिन्न सोशल एक्टिविटी को प्रोत्साहित किया जाय ताकि समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सोच पैदा हो। डीएम ने कहा कि इस सुन्दर धरा पर मानव जीवन के लिए जरूरी है कि हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे। बैठक के अन्त में डीएम ने कतर्नियाघाट के कैलेण्डर का भी विमोचन किया बैठक का संचालन डीएफओ बहराइच अजीत प्रताप सिंह ने किया।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताएं सम्पन्न

डीएम ने एसपी के साथ विजयी प्रतिभागियों को किया सम्मानित

अवधनामा संवाददाता

बहराइच। ''विकसित भारत संकल्प यात्रा'' के उपलक्ष्य में इन्दिरा गॉधी स्पोर्ट्स स्टेडियम में दो दिवसीय एथलेटिक्स एवं आर्चरी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर जिलाधिकारी मोनिका रानी द्वारा पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला, नगर मजिस्ट्रेट शालिनी प्रभाकर व अन्य अधिकारियों के साथ विजयी प्रतिभागियों को मेडल प्रदान देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सीओ सिटी राजीव सिसौदिया, प्रशिक्षु पीसीएस ज्योति चौरसिया, सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन) राजीव कुमार, (प्रवर्तन) ओमप्रकाश सिंह, यातायात निरीक्षक अवधराज सिंह, जिला बाक्सिंग संघ के सचिव कैलाश चन्द्र यादव, शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक, प्रधानाचार्य, शिक्षक, शिक्षकाएं, खेल प्रेमी, गणमान्य एवं संभ्रान्तजन तथा अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम के अंतिम श्रृंखला में भाजपा जिलाध्यक्ष बृजेश पाण्डेय, उपाध्यक्ष रणविजय सिंह भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन उपक्रीड़ा अधिकारी अभिषेक धानुक की देख-रेख में हुआ। कार्यक्रम के निर्णायक के रूप में तैराकी जीवन रक्षक रोहित सिंह, एथलेटिक्स कोच मनोज पाल, वीरेन्द्र पाल सिंह, अजय सिंह, विवेक रावत, संतोष सिंह, विनोद यादव, राहुल वर्मा, राजेश वर्मा, संजय यादव, अरविन्द कुमार, राजेश सिंह, राकेश पासवान, मनीष कुमार बघेल, विनोद कुमार, मो0 आरिफ आदि लोगों द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। उप क्रीड़ा अधिकारी, अनुपमा धानुक द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

अयोध्या में राम मंदिर का हुआ उद्घाटन

गुप्तारगंज, कूरेभार। आखिरकार कल सोमवार का वो दिन आ ही गया, जिसका सभी देशवासियों को बेसब्री से इंतजार था। कल 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत सुबह कारीबन 9 बजे से दोपहर को 2 बजे तक चला। सुल्तानपुर जिले के चौक शहर, गोलाघाट, द्वारिकगंज, कटका, बाबूगंज, गुप्तारगंज, मुजेश, कूरेभार सहित पूरे भारत मे हर तरफ भगवान राम के भजन सुनने को मिला। अयोध्या, सुल्तानपुर समेत कई जिलों में सुबह से ही कार्यक्रम होने लगा। मंदिरों में भीड़ जुटी रही। जय श्री राम के नारों के साथ भक्त दर्शन कर रहे थे, घरों व मंदिर में सुंदरकांड का पाठ भी देखने को मिला, रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा के दिन को लोग ऐतिहासिक बना दिए। इस दौरान जगह-जगह भजन कीर्तन होता रहा। वही राम मंदिर अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में सुल्तानपुर जिले के गोसाईगंज थाना क्षेत्र के बाबूगंज बाजार में बाबा बर्फानी ग्रुप की तरफ से विशाल दुख-दुरिया कार्यक्रम आयोजित किया गया।

नेताजी सुभाष चंद्र की जयंती पर निकली बाइक रैली, हुआ माल्यार्पण

अवधनामा संवाददाता

सुल्तानपुर। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती को पराक्रम दिवस के रूप में मनाते हुए आजाद समाज सेवा समिति द्वारा नगर में प्रभात फेरी निकालकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस सहित नगर में स्थित समस्त शहीदों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात सुभाष मार्केट स्थित नेताजी की प्रतिमा के समक्ष विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष अशोक सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नेताजी भारत की आजादी को लेकर बेचैन थे। उन्होंने जन-जन में आजादी के संघर्ष की अलख जगा दी। अंग्रेजों से भारत को आजाद करने के लिए नेताजी ने 1943 में आजाद हिंद सरकार का गठन किया , जर्मनी, इटली, जापान, आयरलैंड, चीन, कोरिया, फिलीपींस समेत 9 देश की मान्यता इस सरकार को मिल गई थी। संस्था उपाध्यक्ष विजय यादव व मंत्री गिरीश तिवारी बबलू ने कहा कि नेताजी के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के साथ मतभेद हो गए थे हालांकि उन्होंने कभी भी गांधी जी का अनादर नहीं किया राष्ट्रीय कांग्रेस से स्वयं को अलग कर एक नए दल का गठन किया और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष जारी रखा।

मतदाता सूची का हुआ अन्तिम प्रकाशन

अवधनामा संवाददाता

बहराइच। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जनपद में अर्हता तिथि 01 जनवरी 2024 के आधार पर संचालित किये गये मतदाता पुनरीक्षण अभियान के पश्चात जिला निर्वाचन अधिकारी मोनिका रानी ने जिला निर्वाचन कार्यालय, बहराइच में मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन करते हुए मौजूद राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों को मतदाता सूची की हार्ड कापी एवं साफ्ट उपलब्ध करायी।

डीएम ने अपर जिलाधिकारी गौरव रंजन श्रीवास्तव के साथ भाजपा के सुनील श्रीवास्तव, कांग्रेस के गोपी नाथ, बसपा के अशर्फी लाल गौतम, सपा के रामहर्ष यादव व अपना दल के गिरीश चन्द्र को मतदाता सूची की हार्ड एवं साफ्ट कॉपी सौंपी। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विधानसभा निर्वाचक नामावलियों के संक्षिप्त पुनरीक्षण के लिए संचालित अभियान के पश्चात प्रकाशित अन्तिम मतदाता सूची के अनुसार जनपद में कुल मतदाताओं की संख्या 2602367 है जिसमें से पुरूष 1373190, महिला 1229095 जबकि अन्य की संख्या 82 है। जबकि जनपद ई.पी. रेशियों 56.03 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 895 है। यदि इससे पूर्व 27 अक्टूबर 2023 को प्रकाशित अन्तिम मतदाता सूची की बात की जाय तो कुल मतदाताओं की संख्या 2544834 थी जिसमें पुरूष 1346512, महिला 1198167 जबकि अन्य की संख्या 155 है। जबकि जनपद ई.पी. रेशियों 54.79 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 890 था। जनपद में विधानसभावार निर्वाचन क्षेत्रों की बात की जाय तो 282-बलहा (अ.जा.) में कुल मतदाताओं की संख्या 372370 है जिसमें से पुरूष 197441, महिला 174921 जबकि अन्य की संख्या 8, ई.पी. रेशियों 56.67 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 886 है।

जबकि 27 अक्टूबर 2023 को प्रकाशित अन्तिम मतदाता सूची की बात की जाय तो कुल मतदाताओं की संख्या 360339 थी जिसमें पुरूष 191517, महिला 168816, अन्य 06, ई.पी. रेशियों 54.84 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 881 थी। 283-नानपारा में कुल मतदाताओं की संख्या 351429 है जिसमें से पुरूष 185053, महिला 166363, अन्य 13, ई.पी. रेशियों 56.29 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 899 है। जबकि 27 अक्टूबर 2023 को प्रकाशित अन्तिम मतदाता सूची की बात की जाय तो कुल मतदाताओं की संख्या 343172 थी जिसमें पुरूष 181389, महिला 161769, अन्य 14, ई.पी. रेशियों 54.97 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 892 थी। 284-मटेरा में कुल मतदाताओं की संख्या 351432 है जिसमें से पुरूष 184929, महिला 166501, अन्य 02, ई.पी. रेशियों 56.38 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 900 है। जबकि 27 अक्टूबर 2023 को प्रकाशित अन्तिम मतदाता सूची की बात की जाय तो कुल मतदाताओं की संख्या 342062 थी जिसमें पुरूष 180285, महिला 161755, अन्य 22, ई.पी. रेशियों 54.88 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 897 थी। 285-महसी में कुल मतदाताओं की संख्या 345968 है जिसमें से पुरूष 182915, महिला 163049, अन्य 04, ई.पी. रेशियों 55.22 प्रतिशत तथा जेण्डर रेशियों 891 है।

मरीमाता मन्दिर परिसर में आयोजित हुआ दीपोत्सव

बहराइच। अयोध्या में आयोजित श्री राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष्य में सोमवार को देर शाम जनपद में भव्य दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सरयू के तट पर स्थित श्री मरीमाता मन्दिर परिसर में आयोजित दीप उत्सव कार्यक्रम में जिलाधिकारी मोनिका रानी ने नगर मजिस्ट्रेट शालिनी प्रभाकर, उप जिला अधिकारी सदर प्रिन्स वर्मा, प्रशिक्षु पी सी एस ज्योति चौरसिया, खण्ड विकास अधिकारी तजवापुर अजय सिंह, मिहींपुरवा अजीत प्रताप सिँह व अन्य अधिकारियों, क्षेत्र पंचायत प्रमुख तजवापुर के प्रतिनिधि रमाकर पाण्डेय सहित गणमान्य एवं संभ्रान्तजन के साथ दीप जलाये तथा मौजूद निराश्रित, असहाय व निर्धन लोगों को कड़ाके की ठंड से राहत दिलाये जाने के उद्देश्य से कम्बल का वितरण किया। उल्लेखनीय है कि डीएम मोनिका रानी ने अपने आवास पर दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया।

सड़क सुरक्षा के लिए बनायी मानव श्रृंखला

अवधनामा संवाददाता

बहराइच। मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की प्रेरणा से शासन के निर्देशानुसार जिलाधिकारी मोनिका रानी के कुशल मार्गदर्शन में सड़क सुरक्षा माह के अन्तर्गत नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जी की जयन्ती के अवसर पर इन्दिरा गांधी स्पोर्ट्स स्टेडियम में मानव श्रृंखला का आयोजन किया गया। श्रृंखला के दौरान मौजूद लोगों को जिलाधिकारी मोनिका रानी ने यातायात नियमों का पालन करने के लिए शपथ दिलायी। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला, नगर मजिस्ट्रेट शालिनी प्रभाकर, पुलिस क्षेत्राधिकारी नगर राजीव कुमार सिसोदिया, प्रशिक्षु पीसीएस ज्योति चौरसिया, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी प्रशासन, राजीव कुमार, प्रवर्तन ओ.पी. सिंह सहित अन्य अधिकारी तथा विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक, प्रधानाचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाएं व छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में मौजूद रहे। डीएम मोनिका रानी ने सभी लोगों को सुभाष चन्द्र जयन्ती की बधाई देते हुए कहा कि यातायात नियमों का पालन कराये जाने के उद्देश्य से छात्र-छात्राओं द्वारा मानव श्रृंखला का निर्माण किया गया है। डीएम ने छात्र-छाओं को आहवान किया यातायात नियमों का पालन करने हेतु परिवार के सदस्यों को प्रेरित करें। यदि परिवार के व्यस्क सदस्य भी बगैर हेलमेट के बाईकिंग करें तो उन्हें हेलमेट लगाने के लिए अवश्य प्रेरित करें। डीएम ने कहा कि सड़क दुर्घटना का दर्द एक पीड़ित परिवार ही बयान कर सकता है। मानव श्रृंखला में प्रतिभाग करने वाले विद्यालयों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर युवा, महिला, दिव्यांग व अनुसूचित जाति जनजाति के लोगों को शत-प्रतिशत मतदान के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित करें। बेस्ट पोस्टर बनाने वाले छा-छात्राओं को सम्मानित भी किया जायेगा। पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला ने कहा कि यातायात नियमों का पालन करने से ही सड़क दुर्घटनाओं में कमी आयेगी। जिम्मेदार नागरिकों का कर्तव्य है कि वे यातायात नियमों का पालन करते हुए स्वयं भी सुरक्षित रहें तथा दूसरों की सुरक्षा का भी ध्यान रखें। एसपी ने शिक्षण संस्थाओं का आहवान किया कि मोटराईज्ड व्हैकिल से स्कूल आने वाले बच्चों की रैण्डमली चेकिंग करें कि कहीं उनके द्वारा अनाधिकृत रूप से वाहन नहीं चलाया जा रहा है।

एनसीएल में 19वीं सिंगरौली नराकास की बैठक सफलतापूर्वक हुई सम्पन्न

अवधनामा संवाददाता

सोनभद्र/सिंगरौली। मंगलवार को भारत सरकार की मिनिरत्न कंपनी नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) के मुख्यालय में नगर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिंगरौली (नराकास) की 19 वीं बैठक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

बैठक के दौरान एनसीएल सीएमडी श्री भोला सिंह बतौर मुख्य अतिथि और निदेशक (कार्मिक) श्री मनीष कुमार, निदेशक (वित्त) रजनीश नारायण, निदेशक (तकनीकी/संचालन) श्री जितेंद्र मालिक, निदेशक (तकनीकी/परियोजना व योजना) सुनील प्रसाद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस दौरान अपने उद्बोधन में भोला सिंह ने उपस्थित सभी से हिन्दी को राजभाषा के रूप में कार्यालयीन जीवन में गर्व के साथ आत्मसात करने हेतु आह्वान किया। उन्होंने हिन्दी के शत प्रतिशत कार्यालयीन प्रयोग हेतु सर्वप्रथम हिन्दी को बोल चाल की भाषा के रूप में अपनाने हेतु सभी को प्रेरित किया एवं कहा कि देश एकता की भावना को प्रगाढ़ करने के लिए हमें अपनी राजभाषा पर गर्व करना चाहिए। साथ ही उन्होनें कार्यालय में पत्राचार के दौरान हिन्दी को प्रमुखता से स्थान देने , राजभाषा नियम 11 एवं अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का अनिवार्य अनुपालन एवं कार्यालयीन कार्यों व दस्तावेजों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु सभी को प्रोत्साहित किया।

एनसीएल के तत्वाधान में आयोजित इस बैठक में नराकास के समस्त कार्यालयों की अर्द्धवार्षिक हिन्दी प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई। साथ ही राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) व नियम 11 के अनुपालन की समीक्षा हेतु दिशानिर्देश दिए गए। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक (एनटीपीसी) ई. सत्य फणी, बीईएमएल, पॉवर ग्रिड, सीआईएसएफ, यूबीआई वैढ़न, यूबीआई विंध्यनगर, एसबीआई वैढ़न, बीएसएनएल, एनसीएल मुख्यालय एवं सभी परियोजनाओं के महाप्रबंधकगण, विभागाध्यक्ष तथा बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे।

विंध्यनगर में राम लल्ला के आगमन का उत्सव मनाया गया

सोनभद्र/विंध्याचल। इतिहास में शानदार रूप से 22 जनवरी को राम लल्ला के घर लौटने का जश्न मनाया गया, जिसमें विंध्यनगर के श्री श्री सर्वेश्वर मंदिर प्रबंधन समिति ने अपने शिव मंदिर परिसर में एक श्रृंगारी प्रयास किया। दिन की शुरुआत 9ः00 बजे से हुई श्री सुंदरकांड के संगीतमय पाठ से, जिसमें एनटीपीसी कर्मचारियों और सहयोगियों ने भक्तिभाव से भरी धुन में प्रदर्शन किया। इसके बाद, मंदिर में होने वाले आरती और प्रसाद वितरण के साथ विविध कार्यक्रमों ने स्थानीय जनता को आकर्षित किया, जोने अपने आदर्श की ओर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आत्मीयता की रौशनी राम ज्योति का प्रज्वलन

सायंकाल में, परियोजना प्रमुख श्री सत्य पानी कुमार और समिति के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक (ओ एंड एम), राजेश भारद्वाज ने श्री राम ज्योति को प्रज्वलित करने के साथ ही 501 दीपकों की रौशनी से मंदिर परिसर को प्रकाशित किया। भजन संध्या के बाद, महा आरती और प्रसाद वितरण का आयोजन हुआ, जिसने श्रद्धालुओं को आनंदित किया और समिति के प्रयासों को समर्थन दिया। मंदिर समिति ने इस प्रकार के भव्य कार्यों का आयोजन करके समुदाय के बीच एक शांतिपूर्ण और आध्यात्मिक वातावरण का संचार किया है, जिसे स्थानीय निवासियों ने उच्च मूल्यांकन दिया है।

जल जीवन मिशन एलईडी वाहन प्रचार-प्रसार के लिए वीडियो व एडीओ पंचायत ने दिखाया हरी झंडी

अवधनामा संवाददाता

चोपन/ सोनभद्र। चोपन ब्लॉक परिसर में मंगलवार को जल जीवन मिशन परियोजना हर घर नल जल योजना का प्रचार प्रसार के हेतु एलईडी वाहन को विकास खण्ड अधिकारी शुभम बर्नलवाल एवं सहायक विकास पंचायत अधिकारी सुनील पॉल ने हरी झण्डी दिखाकर वाहनों को रवाना किया। वही नीलेश कुमार पाठक के देखरेख में एलईडी वाहन के द्वारा प्रचार प्रसार को लेकर बताया गया कि ग्रामीणों को जागरूक करने हेतु ब्लॉक से ग्रामीण क्षेत्रों के लिए वाहन को रवाना किया गया है।एलईडी वाहन के माध्यम से लोगो को शुद्ध पानी के उपयोग और उसे संचय संरक्षित करने सहित दूषित पानी पीने से बचने हेतु जागरूक किया जायेगा की दूषित पानी को कैसे शुद्ध किया जा सके और पानी से होने वाले बीमारियों से आमजन को बचाया जा सके। विकास खण्ड अधिकारी शुभम बर्नलवाल ने कहा कि चोपन ब्लॉक के क्षेत्र के हर परिवार को शुद्ध जल मिले जिनके लिये केन्द्र व राज्य सरकार निरन्तर प्रयासरत है और प्रयास भी कर रही हैं। साथ मे इफोटेग सॉल्यूशन नोएडा सोनभद्र यूनिट जिला उप समन्वयक आशुतोष तिवारी टीम लीडर के साथ लोगों को जागरूक करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में जल नल योजनाओं के बारे में लोगों को शुद्ध पानी का उपयोग करने के लिये बताया जा रहा है और साथ ही साथ पानी का सही इस्तेमाल करने के लिए भी बताया जा रहा है।इस मौके पर यूनिसेफ प्रतिनिधि विष्णु मौर्य,अवर अभियंता विवेक कुमार, विकास कुमार इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

वाराणसी शक्ति नगर मार्ग पर लगे स्टील लाइट का किया शुभारंभ जगमगाया नगर

सोनभद्र। पंचम राज्य वित्त आयोग मद से नगर पालिका परिषद सोनभद्र की सीमा में अवस्थित वाराणसी-शक्तिनगर राजमार्ग पर जिलाधिकारी कार्यालय से उत्तर उरमौरा फलाई ओवर तक कुल 81 पोलों पर डबल आर्म की 180 वाट की 162 स्ट्रीट लाइटों तथा 81 तिरंगा रोपवे लाइटों का कम्पलीट अवस्थापना कार्य नगर पालिका परिषद सोनभद्र द्वारा कराया गया जिसका लोकार्पण सोमवार देर सांय 6.00 बजे रूबी प्रसाद , अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद सोनभद्र के कर-कमलों द्वारा नन्दलाल गुप्ता , जिलाध्यक्ष , भारतीय जनता पार्टी सोनभद्र एवं नगर पालिका परिषद सोनभद्र के समस्त सदस्यगणों विजय कुमार यादव, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद सोनभद्र तथा गणमान्य नागरिक गण की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

कोहरा और ठण्ड से दलहनी फसलों को नुकसान होने के आसार

सुमेरपुर हमीरपुर। पिछले एक माह से लगातार पड़ रहे कोहरे ने मटर, मसूर, अरहर की सेहत को बिगाड़ दिया है। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई है। मौसम साफ होने के बाद इन फसलों में हुए नुकसान का अंदाजा लग सकता है।

पिछले एक माह से कोहरे के साथ पड़ रही भीषड़ ठंड का विपरीत असर दलहनी फसलों में स्पष्ट दिखने लगा है। धूप के नदारत रहने से इन फसलों का फूल पूरी तरह से गायब हो गया है। किसानों का आशंका है कि इससे मटर, मसूर, अरहर में नुकसान हो सकता है। किसान परशुराम, सुरेश यादव, इंद्रपाल सिंह, उदयभान, राजू यादव, रामेश्वर वर्मा, नरेंद्र सिंह, चंद्रजीत सिंह, मनीराम प्रजापति, लल्लू धुरिया आदि ने बताया कि लगातार कोहरे के साथ भीषण ठंड ने मटर, मसूर, अरहर की फसलों पर विपरीत असर डाला है।

दीपोत्सव से प्रारम्भ हुआ मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

अवधनामा संवाददाता

हमीरपुर। जनपद हमीरपुर में 14 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस की थीम वोट जैसा कुछ नहीं वोट जरुर डालेंगे हम की शुरुआत राहुल पांडे जिलाधिकारी /जिला निर्वाचन अधिकारी हमीरपुर के निर्देशानुसार मतदाताओ को जागरूक करने के लिए दीपोत्सव कार्यक्रम से की गयी। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार प्रत्येक बूथ पर दिनांक 23/01/2023 को निर्वाचक नामावली का प्रकाशन किया जाएगा। आज स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत मतदाता जागरूकता अभियान में उप जिलाधिकारी सदर पवन प्रकाश पाठक के नेतृत्व में 1100 दीपक जलाकर अपर जिलाधिकारी न्यायिक नागेंद्रनाथ तथा उप जिलाधिकारी निर्वाचन खालिद अंजुम ने प्रकाश महोत्सव की शुरुआत की। दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन अपर जिलाधिकारी अरुण कुमार मिश्रा के नेतृत्व में स्वीप कोऑर्डिनेटर अकबर अली द्वारा यमुना पाथ वे पर दीपदान कर किया गया । इस अवसर पर जनपद हमीरपुर के सभी मतदाताओं को यह संदेश दिया गया की आने वाले लोकसभा चुनाव में अपने मत का प्रयोग कर मतदाता अवश्य करें और एक जिम्मेदार नागरिक होने का परिचय दें। जनपद में वर्हिद स्तर पर 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन किया जा रहा है। जिसके कार्यक्रम पूरे सप्ताह चलेंगे।

सड़क सुरक्षा व मतदाता जागरूकता के कार्यक्रम में लोगों ने ली शपथ

अवधनामा संवाददाता

हमीरपुर। सड़क सुरक्षा के कार्यक्रम को मतदाता जागरूकता स्वीप अभियान से जोड़ते हुए जनपद मुख्यालय के समस्त विद्यालयों के बड़े छात्र एवं छात्राओं ने रानी लक्ष्मीबाई से ईदगाह तक मानव श्रृंखला बनाई तथा निर्धारित समय 11ः00 बजे सड़क सुरक्षा एवं मतदाता जागरूकता की शपथ ली । जिला अधिकारी /जिला निर्वाचन अधिकारी हमीरपुर राहुल पांडे एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी अरुण कुमार मिश्रा तथा सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी के निर्देशन में चलाए जा रहे स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत के के ओझा जिला विद्यालय निरीक्षक एवं आलोक सिंह जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के निर्देशन में समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्य शिक्षक कार्यक्रम प्रभारी अकबर अली जिला स्काउट मास्टर एवं स्वीप कोऑर्डिनेटर हमीरपुर के नेतृत्व में प्रातः एक रैली निकालकर सड़क के दोनों और एक लंबी मानव श्रृंखला लक्ष्मीबाई से ईदगाह सिटी फॉरेस्ट तक बनवाई गयी। जिसमें बच्चे हाथों में मतदाता जागरूकता तख्तियां लिए नामित किए गए नोडल शिक्षकों के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा व मतदाता जागरूकता सम्बन्धित शपथ ली तथा संकल्प लिया कि अपने वह अपने परिवार के साथ ही समाज को आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन में अपने-अपने बूथ में शत-प्रतिशत मतदान करेंगे व कराएंगे। बच्चों ने वोट जैसा कुछ नहीं वोट जरुर डालेंगे हम का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम का संचालन अकबर अली स्वीप कोऑर्डिनेटर हमीरपुर ने किया।

खेलेगा सदर तो खिलेगा सोनभद्र क्रिकेट मैच का हुआ शुभारंभ

राबर्ट्सगंज नगर स्थित हाइडील मैदान परिसर में आयोजित हुआ क्रिकेट टूर्नामेंट

अवधनामा संवाददाता

सोनभद्र। राबर्ट्सगंज नगर स्थित हाइडील मैदान परिसर में मंगलवार को विधायक खेल महाकुंभ का सदर विधायक भूपेश चौबे नपा अध्यक्ष रूबी प्रसाद द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया आगाज कई जनपदों से आए खिलाड़िय करेंगे प्रतिभा।

सदर विधायक भूपेश चौबे ने बताया कि खेलेगा सदर तो खिलेगा सोनभद्र मिशन अभियान के तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अथवा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन पर देश व प्रदेश जिले स्तर पर युवाओं के लिए खेल महोत्सव आगाज को हुए दिशा निर्देश के क्रम में मंगलवार को विधायक खेल महाकुंभ का शुभारंभ किया गया जिसमें तीरंदाजी क्रिकेट बैडमिंटन सहित अन्य खिलाड़ियों के प्रतिभागियों व छात्राओं के साथ नगर में प्रभात फेरी निकालते हुए एक दिन पूर्व अयोध्या में श्री राम लाल के आगमन व प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर को याद करते हुए प्रभु श्री राम के जयकारे लगाते हुए नगर भ्रमण किया गया अंततः खेल मैदान

पहुंचकर आयोजित क्रिकेट मैच का फीता काटकर शुभारंभ हुआ वहीं मौजूद युवाओं का हौसला बर्तन करते हुए उनका क्रिकेट टूर्नामेंट के प्रति रुचि उत्साह बढ़ाने का काम किया गया वहीं श्री चौबे ने बताया कि युवाओं के लिए विशेष उत्साह पूर्वक होता है क्रिकेट मैच जिसको लेकर पूरा ध्यान संरक्षण कमेटी को लगाया गया है और आज मंगलवार को चतरा और नगमा के बीच मैच खेला गया जिसमें अंपायर के रूप में राम सिंह व पंकज ओझा अपनी भूमिका निभा रहे निर्णायक सभी सदस्यों का आभार इस मौके पर मुख्य रूप से नगर पालिका अध्यक्ष रूबी प्रसाद नगवा ब्लाक प्रमुख आलोक सिंह, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अमरेश पटेल, सुरेश शुक्ला, संजय जयसवाल, संतोष शुक्ला, कमलेश चौबे, दिलीप चौबे, शिबू, विकास, गौरव शुक्ला, विकास मिश्रा, धीरज कुमार इत्यादि लोग हैं।

महिलाओं के विरूद्ध यौन उत्पीड़न के सम्बन्ध में न्यायिक अधिकारीयों के मध्य गोष्ठी

अवधनामा संवाददाता

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार जनपद न्यायाधीश विष्णु कुमार शर्मा की अध्यक्षता में कार्यस्थल पर महिलाओं के विरूद्ध यौन उत्पीड़न अधिनियम-2013 के संबंध में जागरूकता हेतु सभी न्यायिक अधिकारीगण के मध्य एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जनपद न्यायाधीश द्वारा बताया गया कि यह अधिनियम कार्यस्थल पर महिलाओं के उत्पीड़न को रोकने हेतु बनाया गया है इस अधिनियम के अन्तर्गत सभी सरकारी, गैर-सरकारी सस्थाओं, स्कूल, कालेज, युनिवर्सिटी आदि में जहाँ महिला अधिकारी अथवा कर्मचारी कार्यरत है। उनके उत्पीड़न निवारण हेतु एक आन्तरिक शिकायत निवारण समिति का गठन किया जाना आवश्यक है। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, श्रीमती गीतांजलि गर्ग द्वारा बताया गया कि कार्यस्थल पर यदि महिलाओं का उत्पीड़न होता है तो वह अपनी शिकायत लिखित रूप में समिति के समक्ष रख सकती है। समिति आवश्यक जाँच कर अपनी आख्या विभाग के प्रमुख को उचित दण्ड अथवा विभागीय कार्यवाही हेतु संस्तुत करेगी। इस संबंध में विधि व्यवस्था विशाखा बनाम राजस्थान राज्य में माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा दिये गये दिशा-निर्देशों के विषय में भी चर्चा की गई।

जिला एकीकरण समिति ने जनपद हमीरपुर की महान विभूतियों के जन्मोत्सव पर सम्मान समारोह आयोजित किया

हमीरपुर। जिला एकीकरण समिति द्वारा हमीरपुर की महान विभूतियों का जन्मोत्सव झलकारी बाई सभागार जिला पंचायत में अध्यक्ष जिला पंचायत जयंती राजपूत व मनीषा अनुरागी विधायक राठ की अध्यक्षता में मनाया गया। दीवान शत्रुघ्न सिंह स्वामी ब्रह्मानंद स्वामी नित्यानंद एवं श्रीपत सहाय के जीवन मूल्यों पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला। इस अवसर पर जनपद में उत्कृष्ट कार्य व समाज में समरसता और सौहार्द के लिए जिला एकीकरण समिति द्वारा अकबर अली राज्य अध्यापक पुरस्कृत शिक्षक उत्तर प्रदेश शासन को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर जिला पंचायत अध्यक्ष एवं विधायक राठ तथा मुख्य विकास अधिकारी हमीरपुर द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समस्त सदस्य जिला पंचायत, तेज बहादुर मिश्रा गणेश शंकर विद्यार्थी जगदीश चन्द्र गुरूदेव सिंह लखनलाल जोशी तथा जनपदीय अधिकारी उपस्थित रहे।

एनटीपीसी सिंगरौली ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को किया नमन

अवधनामा संवाददाता

सोनभद्र/शक्तिनगर। एनटीपीसी सिंगरौली में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 127 वीं जयंती का आयोजन किया गया, जिसके तहत नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जन्मदिवस को यादगार बनाने एवं नई पीढ़ी को नेताजी के जीवन मूल्यों से परिचित कराने के उद्देश्य से दिनांक 23.01.2024 को मुख्य अतिथि श्री राजीव अकोटकर, परियोजना प्रमुख (एनटीपीसी सिंगरौली) एवं महाप्रबंधक गण, वरिष्ठ प्रबन्धक तथा अन्य कर्मचारी गण द्वारा नेताजी की प्रतिमा पर फूल माला एवं पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए श्री राजीव अकोटकर, परियोजना प्रमुख ने कहा कि हमें आज़ादी से प्राप्त मूल्यों का सम्मान करते हुए राष्ट्र की विद्युत विकास एवं सामाजिक विकास में निरंतर योगदान करते रहना है। उन्होनें नेताजी के आदर्शों एवं विचारों से प्रेरित होकर कहा की उन्हें पूर्ण विश्वास है की इस क्षेत्र का समेकित विकास होगा एवं सभी व्यक्ति नेताजी के मूल्यों को आत्मसात कर राष्ट्र के प्रगति में अपना समुचित योगदान प्रदान करते रहेंगे। इस कार्यक्रम में श्री एस के गुजरानिया, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण), श्री अमरीक सिंह भोगल, महाप्रबंधक (अनुरक्षण), श्री जोसफ बास्टियन, (महाप्रबंधक ऐश डाइक प्रबंधन), श्री सिद्धार्थ मण्डल, मानव संसाधन (विभागाध्यक्ष), एवं एनटीपीसी सिंगरौली के वरिष्ठ अधिकारीगण, यूनियन एवं असोशिएशन के अधिकारिगण, कर्मचारी गण भी उपस्थित थे।

दिल्ली में गणतंत्र दिवस पर शामिल होंगे पद्मश्री उमाशंकर

बांदा। पद्मश्री उमाशंकर पांडेय सम्मानित अतिथि के तौर पर दिल्ली में गणतंत्र दिवस में शामिल होंगे। प्रसार भारती सूचना प्रसारण मंत्रालय की ओर से उन्हें आमंत्रित किया गया है। जल योद्धा उमाशंकर पांडेय ने भूजल संरक्षण की दिशा में एक नया प्रयोग करके देश में पुरुखों के जल जोड़ने के बेजोड़ तरीके से परंपरागत सामुदायिक जल क्रांति को जन्म दिया है, जिसे देश में खेत पर मेड़, मेड़ पर पेड़ के नाम से जाना जाता है। इसका उल्लेख प्रधानमंत्री ने अपनी मन की बात में किया था। बगैर किसी एनजीओ बगैर किसी अनुदान संस्था के समुदाय के आधार पर सफल प्रयोग के कारण उन्हें बुंदेलखंड में जन्मे व्यक्ति को 70 वर्ष में पहली बार सेवा के क्षेत्र की पद्म अलंकरण सम्मान पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया था। इससे पूर्व जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार ने उनके इस माडल को पूरे देश में लागू किया और राष्ट्रीय जल योद्धा, सम्मान से 2020 में सम्मानित किया था।

रीजनल फील्ड जीन बैंक का राज्यपाल करेंगी उद्घाटन

विवि के 151 एकड़ में तैयार किया जाना प्रस्तावित

बांदा। विश्वविद्यालय का नवम दीक्षांत समारोह 29 जनवरी को आयोजित होगा। कुलाधिपति और प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल विवि परिसर में बने रीजनल फील्ड जीन बैंक का उदघाटन करेंगी। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने दी। वह दीक्षांत समारोह से सम्बन्धित तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे।

कुलपति श्री सिंह के नेतृत्व में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में रीजनल फील्ड जीन बैंक की स्थापना के लिये पहल की गई है। कुलपति ने विशेषकर बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र मे स्थानीय वृक्षो एवं वानिकी महत्व के पौधो के संरक्षण के लिये यह जीन बैंक की स्थापना आवश्यक समझी, जिसे विश्व विद्यालय परिसर मे वानिकी महाविद्यालय द्वारा तैयार किया गया है। फील्ड जीन बैंक के अंतर्गत वृक्ष एवं काष्ठीय पौधों की जैव विविधता व संसाधनों का संरक्षण करना है। रीजनल फील्ड जीन बैंक का मुख्य उददेश्य विंध्य क्षेत्र के वृक्षों के प्रजातियों व संसाधनों को संरक्षित करना है। रीजनल फील्ड जीन बैंक विश्वविद्यालय परिसर के कुल क्षेत्रफल 151 एकड़ मे तैयार किया जाना प्रस्तावित है। वर्तमान में लगभग 35 एकड़ का क्षेत्रफल विभिन्न प्रजातियों के वृक्षों को जिनमें सफेद चन्दन, महुआ, फलाश, लाल चन्दन, बांस, जामुन, बेल, अमरूद, बेर व आम मुख्य हैं, के लिए तैयार किया गया है। रीजनल फील्ड जीन बैंक भविष्य में छात्रों के साथ साथ आमजनों की पौधों के बारे में जानकारी करने व जैव विविधता को संरक्षित करने का कार्य भी करेगा। साथ ही यह छात्रों की शोध का स्रोत भी बनेगा।

वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता, डा. संजीव कुमार ने बताया की फील्ड जीन बैंक के अंतर्गत एक तरूवर वाटिका एवं बम्बूसेटप की स्थापना की गयी है। तरूवर वाटिका वह क्षेत्र है जहॉ पर विभिन्न प्रजाति के वृक्षों का संग्रह किया जाता है। वर्तमान में यहां पर 84 प्रजाति के वृक्षों का रोपड़ किया गया है, जिसको निरन्तर बढ़ाया जा रहा है। बब्बूसेटम में बांस की विभिन्न प्रजातियों का संरक्षण किया गया है। विश्वविद्यालय परिसर मे बने इस जीन बैंक मे वर्तमान में 22 बांस प्रजातियों का रोपण किया गया है। यह दोनों प्रक्षेत्र भविष्य में छात्रों की विभिन्न प्रजातियों के प्रति शैक्षणिक ज्ञान और रुचि को बढ़ाने के लिये उपयोगी होंगे।

केन्द्रीय हिंदू विश्वविद्यालय की मांग उठी, आयुक्त ने किया सहयोग का वादा

अवधनामा संवाददाता

बांदा। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय सभागार में मंगलवार को विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय हिंदू विश्वविद्यालय की मांग की गई, ताकि शैक्षणिक विकास को सुनिश्चित किया जा सके। चित्रकूटधाम मंडलायुक्त बालकृष्ण त्रिपाठी ने हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के तौर पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डा. हरीराम मिश्र मौजूद रहे। विचार गोष्ठी में इस विषय पर चिंता व्यक्ति की गई कि कला, संस्कृति और विरासत से परिपूर्ण यह क्षेत्र शैक्षणिक क्षेत्र में इतना पिछड़ कैसे गया। वेद व्यास, बाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास की धरती पर छात्र-छात्राएं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित क्यों हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र प्रदेश का 12.5 प्रतिशत भूभाग और 5.5 प्रतिशत आबादी को धारित करता है और तिलहन, दलहन उत्पादन में प्रदेश में अव्वल है। फिर भी क्षेत्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उपेक्षित है। इसी कारण यह क्षेत्र विकास की धारा में पीछे छूट गया है। इसलिए गोष्ठी में प्रोफेसर हरेराम मिश्र ने यहां पर एक केंद्रीय हिन्दू विश्वविद्यालय की मांग की, ताकि यहां विरासत के साथ सामाजिक आर्थिक शैक्षणिक विकास को सुनिश्चित किया जा सके। जनपद के विभिन्न महाविद्यालय के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं और यहां के समाजसेवियों ने इस मांग को मुहिम छेड़कर पूरा करने की शपथ ली। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे मंडलायुक्त श्री त्रिपाठी ने इस मांग को क्षेत्र के विकास के लिए मील का पत्थर बताते हुए इसे पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

विधानसभा क्षेत्रों में आयोजित होंगे नव मतदाता सम्मेलनः साहू

कार्यक्रमों की समीक्षा कर समझाई गई आगामी रूपरेखा

अवधनामा संवाददाता

बांदा। कनवारा बाईपास स्थित भाजपा कार्यालय में आयोजित जिला बैठक में संगठन द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की समीक्षा के करते हुए आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा समझाई गई। जिला पदाधिकारियों, अभियान प्रमुखों, मोर्चा अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, मंडल प्रभारी, जनप्रतिनिधियों हेतु अपेक्षित बैठक में नमो ऐप, ग्राम संपर्क अभियान, लाभार्थी संपर्क अभियान, बूथ सशक्तीकरण, मन की बात, प्रधानमंत्री विश्वकर्म योजना, नव मतदाता सम्मेलन, रामलला दर्शन, कार्य सेवा आदि कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए जिला प्रभारी रामकिशोर साहू ने कहा कि जिले की चारों विधानसभाओं में प्रत्येक विधानसभा में दो-दो नव मतदाता सम्मेलन आयोजित होने है। यह सम्मेलन युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष मोहित गुप्ता के संयोजकत्व में होंगे। नव मतदाता सम्मेलन में कम से कम एक हजार की संख्या का लक्ष्य रखा गया है। 25 जनवरी को जनपद में होने वाले नव मतदाता सम्मेलनों में बांदा विधानसभा क्षेत्र के मेडिकल कालेज के आडेटोरियम तथा जनता इंटर कालेज खुरहंड, तिंदवारी विधानसभा के शिवदर्शन महाविद्यालय जसईपुर तथा रामलीला मैदान पचनेही, बबेरू विधानसभा के जेपी शर्मा इंटर कालेज बबेरू, विनोवा इण्टर कालेज कमासिन, नरैनी विधानसभा के राजकीय इंजीनियरिंग कालेज तथा ब्लाक सभागार में नव मतदाता सम्मेलन आयोजित होंगे। इन सम्मेलनों को दिन में 11 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सीधे संबंधित करेंगे। जिला प्रभारी श्री साहू ने कहा कि 2047 में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं को शुद्ध भाव से काम करना पड़ेगा। बैठक की अध्यक्षता कर रहे जिला भाजपा अध्यक्ष संजय सिंह ने अपेक्षित पदाधिकारियों का वृत्त लेते हुए संगठन द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में सभी से भागीदारी काआह्वान करते हुए सभी का आभार जताया। बैठक का संचालन जिला महामंत्री अखिलेशनाथ दीक्षित द्वारा किया गया।

बैठक में जल शक्ति राज्यमंत्री रामकेश निषाद, सांसद आरके पटेल,जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील पटेल, सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक पुरुषोत्तम पांडे, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष इंद्रपाल सिंह पटेल, किसान मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष बालमुकुंद शुक्ला, राष्ट्रीय परिषद सदस्य संतोष गुप्ता, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जगराम सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष अखिलेश श्रीवास्तव, पूर्व राष्ट्रीय परिषद सदस्य अजय पटेल, जिला महामंत्री कल्लू सिंह राजपूत तथा विवेकानंद गुप्ता, प्रभाकर अवस्थी, सीताराम वर्मा,जिला उपाध्यक्ष धर्मेंद्र त्रिपाठी तथा मनोज पुरवार, राजेश सेन, मंजू सिंह, ब्लॉक प्रमुख रमाकांत पटेल, जिला मंत्री राजर्षी शुक्ला, देवेंद्र भदौरिया, मनीष गुप्ता तथा दिनेश यादव, महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष वंदना गुप्ता, जिला को सदस्य संतु गुप्ता, राकेश चौहान, जिला मीडिया प्रभारी आनन्द स्वरूप द्विवेदी, उत्तम सक्सेना,सुधीर कुशवाहा, निखिल सक्सेना, दीपक राजपूत, सुमन शर्मा, धीरेंद्र सिंह, दिनेश निषाद, सौरभ शिवहरे,दीपक सिंह, अनूप तिवारी, श्याम बाबू पाल, अनूप सिंह, ओम प्रकाश पांडे, प्रदीप मिश्रा, ज्ञान प्रताप सिंह, ओम प्रकाश राजपूत, रामकृष्ण शुक्ला, राकेश गुप्ता, अमित निगम आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

लाखों भक्तों ने किए रामलला के दर्शन

शाम तक साढ़े पांच लाख पहुंच सकता है आंकड़ा

लखनऊ। रामलला के दर्शन को लगी कतार टूटने का नाम नहीं ले रही है। दोपहर 3:00 बजे तक करीब ढाई लाख श्रद्धालुओं ने रामलला के दरबार में हाजिरी लगा ली है। प्रशासन का कहना है कि अभी करीब 2 लाख श्रद्धालु और दर्शन कर सकते है। भक्तों की भीड़ आधी रात से ही मंदिर के बाहर जमा हो गई थी। भीड़ को देखते हुए यूपी रोडवेज ने अयोध्या की ओर जाने वाली बसें रोक दी हैं। परिवहन निगम के महाप्रबंधक ऑपरेशन मनोज पुंडीर ने बताया कि अयोध्या जाने वाली सभी मार्ग कि बसों का संचालन बंद किया गया है।

स्थानीय प्रशासन के अधिकारी मंदिर परिसर में मौजूद हैं। भक्तों को सुचारू दर्शन सुनिश्चित करने के लिए 8000 से अधिक सुरक्षाकर्मी तैनात हैं। यूपी के प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद और स्पेशल डीजी (लॉ एंड ऑर्डर) प्रशांत कुमार स्थिति पर नजर रखने के लिए राम मंदिर के अंदर मौजूद हैं।

राम मंदिरः रोकी गई अयोध्या जाने वाली सभी रोडवेज बसें

अयोध्या राम मंदिर में भारी भीड़ को देखते हुए अयोध्या जाने वाली यूपी रोडवेज की सभी बसें रोक दी गई हैं। परिवहन निगम के महाप्रबंधक ऑपरेशन मनोज पुंडीर ने बताया कि अयोध्या जाने वाली सभी मार्ग कि बसों का संचालन बंद किया गया है। भीड़ कम होने पर इसकी समीक्षा की जाएगी। अयोध्या में मंदिर की ओर जाने वाले सभी रास्तों को चार से पांच किलोमीटर पहले ही बंद कर दिया गया है। सिर्फ पैदल यात्रियों को ही लाइन से पैदल जाने की अनुमति मिली है। भारी भीड़ को देखते हुए प्रशासन ने यह फैसला लिया है। सुबह से भारी संख्या में लोग मंदिर के बाहर जमा हो गए थे। जिससे प्रशासन के सामने अव्यवस्था के हालात पैदा हो गए थे। परिवहन निगम के महाप्रबंधक ऑपरेशन मनोज पुंडीर ने बताया कि अयोध्या जाने वाली सभी मार्ग कि बसों का संचालन बंद किया गया है। लखनऊ जिलाधिकारी ने निर्देशित किया है कि अभी कोई भी यात्री अयोध्या न भेजे जाएं। बढ़ती हुई भीड़ को नियंत्रण करने में समस्या हो रही है।

अब से कुछ ही देर में अयोध्या पहुंचेंगे मुख्यमंत्री योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अब से थोड़ी देर में अयोध्या पहुंच रहे हैं। उनका हेलीकॉप्टर रामकथा हेलीपैड पर उतरेगा। इस समय शासन के उच्चाधिकारी अयोध्या में मौजूद हैं। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहले दिन श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी है। इससे उन्हें नियंत्रित करने के लिए प्रशासन को कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है।

मामले की जानकारी पर सीएम योगी ने वहां खुद ही जाने का निर्णय लिया है जिससे हालात पर नजर रखी जा सके। वहीं, लोगों की भारी भीड़ देखते हुए जिला प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वो हड़बड़ाहट में अयोध्या न आएं। 10-15 दिन बाद आएंगे तो सुगमता से रामलला के दर्शन हो सकेंगे। जिले के कमिश्नर गौरव दयाल व आईजी रेंज प्रवीण कुमार ने बताया कि अयोध्या में अब तक ढाई लाख श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं और अभी रात तक चार से पांच लाख श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है।

यूपी के छोटे कारोबारियों को मिलेगा धंधा बढ़ाने का मौका

लखनऊ। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) को उत्तर प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र में ग्रोथ की बड़ी संभावनाएं नजर आ रही हैं। एमएसएमई सेक्टर में तेजी से हो रहे सुधार के आधार पर नाबार्ड ने इस क्षेत्र विशेष के लिए प्रवाह तेज करने का सुझाव दिया है।

अपने स्टेट फोकस पेपर में एमएसएमई सेक्टर के ऋण प्रवाह में 175 प्रतिशत की वृद्धि का सुझाव देते हुए नाबार्ड ने इसे 2.91 लाख करोड़ रुपये तक ले जाने की बात कही है। जबकि चालू वित्तीय वर्ष के लिए 1.05 लाख करोड़ रुपये के ऋण संभाव्यता का आकलन किया गया था।

नाबार्ड ने अपने स्टेट फोकस पेपर (वर्ष 2024-25) में प्राथमिकता क्षेत्र के विभिन्न घटकों (कृषि, एमएसएमई, शिक्षा, आवास, निर्यात, नवीकरणीय ऊर्जा) के लिए 5.73 लाख करोड़ रुपये की ऋण संभाव्यता का आकलन किया है, जो कि चालू वित्तीय वर्ष (2023-24) के अनुमानों के मुकाबले 52 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

वहीं, एमएसएमई सेक्टर जो सकल घरेलू उत्पाद, रोजगार और निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देता है, की अनुमानित ऋण क्षमता में सर्वाधिक 175.82 प्रतिशत की वृद्धि का सुझाव दिया है। यह 2.91 लाख करोड़ रुपये से अधिक आकलित की गई है, जबकि चालू वित्तीय वर्ष के लिए इसे 1.05 लाख करोड़ रुपये के दायरे में रखा गया था। नाबार्ड ने अपने स्टेट फोकस पेपर में कहा है कि भारत में मौजूद एमएसएमई उद्योगों की संख्या में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है। एमएसएमई, खादी एवं ग्रामोद्योग, हस्तकला, चमड़ा और कृषि आधारित उद्योग प्रदेश में बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करते हैं। यूपी में हथकरघा उद्योग ही देश के कुल कपड़े का लगभग 15 प्रतिशत का उत्पादन करता है।

सपा का मुसलमानों को 18 प्रतिशत आरक्षण देना का झूंठा ऐलान

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। मुसलमानों को 18 प्रतिशत आरक्षण का झूँठा ऐलान करने की साज़िश में समाजवादी पार्टी ने मुस्लिम धर्मगुरुओं को भी शामिल कर लिया। और हुआ वही जिसका अंदाजा पहले से था वोट लेकर सत्ता में आने के बाद सपा वादा भूल गई। हैरत तो यह कि सपा के सुर में सुर मिलाने वाले मौलाना भी सपा से दूर नही हुए बल्कि उनका साथ पहले की तरह मजबूत है। अब यह बताने की जरुरत नही कि झूठ किसने बोला और शिकार कौन हुआ।

यह बात आल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महाज के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसीम राईन ने अपने बयान में कही है। उन्होंने अपनी बात तफसील से रखते हुए कहा कि वर्ष 2012 के चुनाव से पहले जारी विधानसभा के सपा के घोषणापत्र में मुसलमानो को 18 प्रतिशत आरक्षण देने का ऐलान किया गया। सपा के इस ऐलान में मुसलमानों के धर्मगुरु फिरंगी महली व जमीयत उलेमा ए हिंद के सदर मौलाना मदनी, बुखारी आदि भी शामिल रहे और मुसलमानों से समाजवादी पार्टी के पक्ष में वोट करने की अपील की। सपा के झूठ की कलई आखिर खुल ही गई और पता चल गया कि यह घोषणा केवल सत्ता में लौटने के लिए एक हथियार भर ही था क्योंकि सरकार में आने के बाद सपा मुखिया ने इस पर बात करना भी गंवारा नही किया। उन्होंने कहा कि सपा ने तो मुसलमानों के साथ धोखा किया ही उनसे बड़ा फरेब मौलाना व धर्मगुरुओं ने किया।

डा. जगदीश गाँधी को लखनऊवासियों ने दी नम आँखों से भावभीनी श्रद्धांजलि

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, गोमती नगर द्वितीय कैम्पस का विशाल सभागार आज सी.एम.एस. संस्थापक डा. जगदीश गाँधी के प्रेरक व्यक्तित्व, उनकी स्मृतियों एवं जनमानस की भावनाओं के अतिरेक से भावविभोर रहा, जहाँ हजारों की संख्या में लखनऊवासियों ने नम आँखों डा. जगदीश गाँधी को भावभीनी श्रंद्धान्जलि अर्पित की। उनका पार्थिक शरीर आज अन्तिम दर्शन हेतु सी.एम.एस. गोमती नगर द्वितीय कैम्पस में रखा गया। लखनऊ की तमाम मूर्धन्य हस्तियों के साथ ही छात्रों, शिक्षकों व अभिभावकों के विशाल जनसमुदाय ने नम आँखों से डा. जगदीश गाँधी को श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनके साथ जुड़ी अपनी यादों को संजोया और परमपिता परमात्मा से उनकी पवित्र आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की। डा. जगदीश गाँधी की पत्नी डा. भारती गाँधी, पुत्र श्री विनय गाँधी, पुत्री डा. सुनीता गाँधी, प्रो. गीता गाँधी किंगडन, प्रो. नीता गाँधी फारुही व अन्य परिवारीजनों के साथ ही सी.एम.एस. प्रधानाचार्याओं, कार्यकर्ताओं एवं भारी संख्या में लखनऊ के जनमानस ने डा. जगदीश गाँधी को श्रद्धान्जलि अर्पित की।

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डा. जगदीश गाँधी के निधन पर प्रेषित शोक संदेश में हुए कहा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धान्त को अंगीकार कर डा. जगदीश गाँधी ने सिटी मोन्टेसरी स्कूल के लाखों छात्र-छात्राओं के आचरण में भी इस सिद्धान्त को अंकित करने का कार्य किया। भारत में मॉरीशस के राजदूत ने भी मॉरीशस सरकार की ओर से शोक संदेश प्रेषित किया है। आज लखनऊ की तमाम मूर्धन्य हस्तियों ने सी.एम.एस. गोमती नगर द्वितीय कैम्पस आडिटोरियम पधारकर डा. जगदीश गाँधी को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनमें उप-मुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक, समाजवादी पार्टी के प्रमुख श्री अखिलेश यादव, पूर्व उप-मुख्यमंत्री डा. दिनेश शर्मा, प्रदेश के मुख्य सचिव श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, आई.ए.एस., पूर्व मंत्री, उ.प्र. डा. महेन्द्र सिंह, सांसद श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी, लखनऊ की कमिश्नर सुश्री रोशन जैकब, लखनऊ के जिलाधिकारी डा. सूर्यपाल गंगवार, आई.ए.एस., लखनऊ की पूर्व मेयर सुश्री संयुक्ता भाटिया, भाजपा पदाधिकारी श्री राजीव मिश्रा, श्री विपिन कुमार मिश्रा, आई.ए.एस., एडीशनल सेक्रेटरी, फूड एण्ड सप्लाई, प्रशान्त सिंह अटल, चीफ स्टैण्डिंग काउन्सिल, हाईकोर्ट, न्यायमूर्ति श्री विष्णु सहाय, न्यायमूर्ति श्री राकेश कुमार, पूर्व कार्यवाहक चीफजस्टिस, श्री राकेश कुमार, ए.डी.एम., प्रोटोकाल, फादर लेनिन चाको, फादर डोनाल्ड डिसूजा, इस्माल धर्मानुयायी श्री फिरंगी महली एवं श्री कल्बे सबरेन समेत अनेक प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस अधिकारी, सैन्य अधिकारी, शिक्षाविद, साहित्यकार व समाजसेवी आदि शामिल रहे। इसके अलावा, सभी धर्मों के धर्मगुरू व अनुयायी, राजनीतिक पार्टियों के पदाधिकारियों सहित भारी संख्या में गणमान्य नागरिकों ने डा. जगदीश गाँधी को श्रद्धान्जलि अर्पित की।

सी.एम.एस. के मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी श्री हरि ओम शर्मा ने बताया कि डा. जगदीश गाँधी की स्मृति में आगामी 4 फरवरी, रविवार को अपरान्हः 3 बजे से सी.एम.एस. गोमती नगर द्वितीय कैम्पस ऑडिटोरियम में 'स्मृति सभा' का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर डा. जगदीश गाँधी के प्रेरक व्यक्तित्व व कृतित्व को याद किया जायेगा।

श्रीराम मंदिर की नव्यता, दिव्यता और भव्यता से अभिभूत हूं : कुलाधिपति

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद के चांसलर श्री सुरेश जैन और जीवीसी श्री मनीष जैन प्रभु श्रीराम की भक्ति के रंग में नज़र आए। उन्होंने अयोध्याधाम में श्रीराम की आस्था में बार-बार डुबकी लगाई। लबों पर बार-बार प्रभु श्रीराम के गुणगान रहे।

श्रीराम जन्म भूमि तीर्थ ट्रस्ट क्षेत्र की तय गाइड लाइंस के मुताबिक चांसलर और जीवीसी मंदिर कैंपस में दस बजे पहुंच गए। प्राण प्रतिष्ठा समारोह का शंखनाद होने से पूर्व श्री सुरेश जैन और श्री मनीष जैन और दीगर सेलिब्रिटीज- सियासीदां, फिल्म स्टार्स, टीवी एंकर्स आदि एक-दूसरे से कुशलक्षेम पूछने में मशगूल रहे। ग्रुप फोटोग्राफी और सेल्फी भी हुई। दूसरी ओर फर्स्ट लेडी श्रीमती वीना जैन देर शाम श्री रामलला के श्रीचरणों में नतमस्तक हुईं। समारोह के बाद श्री सुरेश जैन का कहना है, वह और उनका परिवार श्रीराम मंदिर की नव्यता, दिव्यता और भव्यता से अभिभूत हैं। जैन ने कहा, यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, संघ प्रमुख श्री मोहन भागवत और यूपी के सीएम श्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सारगर्भित उदबोधन में भारतीय संस्कृति, संस्कारों और मूल्यों की वकालत और हिंदुस्तान के स्वर्णिम विकास के खाके का मैं कायल हूं। रोशनी में नहाए और फूलों से सुगंधित श्रीराम मंदिर के अविस्मरणीय दृश्यों को कुलाधिपति परिवार ने अपने मोबाइल में सहेज लिया। इस अवसर पर श्रीमती ऋचा जैन की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

भाजपा ने राम मंदिर उद्घाटन में उड़ाईं संविधान की धज्जियां : माले

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। भाकपा (माले) ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी ने अयोध्या में राम मंदिर उद्घाटन के नाम पर संविधान की खूब धज्जियां उड़ाईं। राजनीति और धर्म का अभूतपूर्व घालमेल दर्शनीय था।

माले के राज्य सचिव सुधाकर यादव ने आज जारी एक बयान में कहा कि धर्मनिरपेक्ष संविधान के रहते राज्य से लेकर केंद्र की सरकार तक पूरी तरह धार्मिक हो गई। पूरी राज्य मशीनरी को मंदिर के उद्घाटन में लगा दिया गया। राज्य और धर्म का भेद मिट गया और धर्म जो व्यक्ति का निजी मामला होता है, उसे राज्य का धर्म बना दिया गया। पूरी सरकार हिन्दू बन गई और हिन्दू धर्म को राष्ट्र के धर्म के रुप में प्रदर्शित किया गया। प्रधानमंत्री तक धार्मिक नेता के रुप में व्यवहार किये। पूरे आयोजन को हिन्दू राष्ट्र की ओर बढ़ने के रुप में प्रचारित किया गया। देश के धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक संविधान का इससे बड़ा तिरस्कार हो नहीं सकता।

माले नेता ने कहा कि जिस संविधान के चलते भारत एक गणतंत्र है, उसका अपमान भाजपा और संघ कर रहे हैं। लंबी दूरी की इनकी योजना अंबेडकर लिखित संविधान की जगह मनुस्मृति को ही देश का संविधान और गणतंत्र को हिन्दू राष्ट्र बना देने की है। मौजूदा संविधान स्वतंत्रता आंदोलन की देन है और संविधान का अपमान कर भाजपा व संघ देश की आजादी की लड़ाई और उसकी विरासत का अपमान कर रहे हैं। माले सचिव ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्देशित ट्रस्ट की जगह भाजपा मंदिर निर्माण का श्रेय लूटने में लगी है, जिसे वह आगामी चुनाव में ध्रुवीकरण करने का माध्यम बनाना चाहती है। पिछले दो लोकसभा चुनावों में भाजपा द्वारा किये वादे - अच्छे दिन लाने, काला धन वापस लाने, दो करोड़ रोजगार हर साल देने, किसानों की आय दुगुनी करने वगैरह-वगैरह जब जुमला बन गए।

धर्म संसद का आयोजन लक्ष्मण मेला मैदान में आज से

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। सनातन महासभा द्वारा 24 जनवरी से 28 जनवरी तक श्री राम सनातन महोत्सव (धर्म संसद) का आयोजन लक्ष्मण मेला मैदान में किया जाएगा। महोत्सव को लेकर विस्तृत जानकारी देते हुए मंगलवार को कार्यक्रम स्थल पर आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान धर्म संसद के प्रभारी देवेन्द्र शुक्ल ने बताया कि महोत्सव की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है उन्होंने बताया कि महोत्सव के दौरान पूज्य शंकराचार्य (बद्रिकाश्रम), कामदगिरि पीठाधीश्वर जगदुरु रामस्वरूपाचार्य जी महाराज, अन्तर्राष्ट्रीय कथावाचक तथा सनातन धर्म के पुरोधा ठाकुर देवकीनंदन, इस्कान मन्दिर लखनऊ के अध्यक्ष पूज्य अपरिमेय श्यामदास जी महाराज सहित अयोध्या, काशी, हरिद्वार मथुरा, वृंदावन, नैमिषारण्य, चित्रकूट एवं अन्य प्रांतों के संत-महंत उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम संयोजक डा. प्रवीण ने बताया कि सनातन महोत्सव में सभी के लिए स्वास्थ्य मेला, रोजगार मेला, जनसमाधान शिविर, खादी ग्रामोउद्योग, आयुष विभाग, बैंक आदि के शिविर होंगे।

स्वास्थ्य मेला में देहदान/अंगदान/रक्तदान शिविर, जांच शिविर, कैंसर, ह्रदय, शुगर, न्यूरो, मानसिक रोग आदि के डॉक्टर उपलब्ध रहेंगे। साथ में विभागीय शिविर जैसे बिजली, एलडीए, नगर निगम, पुलिस आदि के लिए प्रयास किया जा रहा है। रघुकुल शक्तिपीठ/रामानन्द फाउन्डेशन के पीठाधीश्वर/अध्यक्ष आनन्द महाराज ने बताया कि धर्म संसद में बागेश्वर धाम के आदरणीय धीरेंद्र शास्त्री जी, पूज्य श्री राघवाचार्य जी महाराज, पूज्य श्री रसिक पीठाधीश्वर जन्मेजा शरण जी महाराज बड़ा स्थान जानकी घाट श्री धाम अयोध्या आदि देश के विभिन्न पीठों के साधु-सन्तों को भी आमंत्रित किया गया है। सह संयोजक रामकिशोर शुक्ल व शैलेन्द्र श्रीवास्तव,एड.बताया ने बताया कि कार्यक्रम में कुछ राजनेताओं के भी उपस्थित रहने की सम्भावना है। जिसमें रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक, जल संसाधन मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह जी, महिला व बाल पुष्टाहार मंत्री डॉ.प्रतिभा शुक्ल, श्री पंकज सिंह जी, श्री मुकेश शर्मा जी, श्री आनंद द्विवेदी जी, महापौर लखनऊ श्रीमती सुषमा खर्कवाल आदि प्रमुख हैं।

प्रदेश की बिजली कंपनियों का बुरा हाल

उपभोक्ता सेवा में सुधार नहीं केस्को टॉप से खिसक कर `बी प्लस' पर

अवधनामा संवाददाता

लखनऊ। रूलर इलेक्ट्रिफिकेशन कारपोरेशन लिमिटेड (आर0ई0सी) द्वारा सुरु की गयी पूरे देश के 62 डिस्कॉम के 32 करोड़ विद्युत उपभोक्ताओ की सभी राज्यों की कंज्यूमर सर्विस रेटिंग 2 दिन पहले जारी की गई है। अभी वर्ष 2022-23 के लिए जारी की गई है वर्तमान जारी रेटिंग में जिसमें प्रमुख रुप से पूरे देश के सभी राज्यों में उपभोक्ताओं को मिलने वाली सभी सेवाओं चाहे वह विद्युत आपूर्ति का मामला हो चाहे वह विद्युत कनेक्शन देने का मामला हो चाहे वह बिलिंग संबंधित मामला हो मीटर संबंधी मामला हो डिफेक्टिव मीटर का मामला हो या तारीफ कैटेगरी सहित विद्युत व्यथा निवारण फोरम में निस्तारण का मामला हो उपभोक्ता व्यावधान संबंधी कोई मामला हो या ट्रांसफार्मर फेल होने का कोई मामला हो उपभोक्ताओं से संबंधित सभी समस्याएं जो उपभोक्ताओं के सामने आती हैं और उसका निस्तारण राज्य के सभी बिजली कंपनियों द्वारा तय मानक के आधार पर किया जाता है उसके संबंध में आरईसी द्वारा एक मानक बनाकर उस पर 100 मार्क के आधार पर अलग-अलग श्रेणी में ग्रेडिंग किए जाने का प्रावधान किया है जहां बिजली डिस्कॉम के अंतर्गत पूरे देश में दिल्ली के बाद उत्तर प्रदेश की निजी क्षेत्र की कंपनी नोयडा पावर कंपनी को `` ए प्लस ``श्रेणी का ग्रेड दिया गया है वही पूरे देश में उत्तर प्रदेश की केस्को कम्पनी जो वर्ष 2021-22 में सबसे ऊपर दिल्ली के बाद टॉप पर थे अब वह खिसक कर `` बी प्लस `` पर आ गयी वही पक्षिमांचल कंपनी `` सी प्लस `` पे ही अटकी है वही दक्षिणांचल पूर्वांचल मध्यांचल ने थोड़ा सुधार कर 'बी' में अपनी जगह बना ली है 62 डिस्कॉम की रेटिंग में जो 52 व 53 के साथ 54 वे स्थान पे है जिसको बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता।

बिजली कम्पनियां	ग्रेड	नम्बर
कानपुर इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई कम्पनी (केस्को)	बी प्लस	70से 80
दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम	बी	60 से 70
मध्यांचल विद्युत वितरण निगम	बी	60 से 70
पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम	बी	60 से 70
पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम	सी प्लस	50 से 60

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा ने कहा दिल्ली सहित प्रदेश की निजी क्षेत्र की बिजली कंपनी एनपीसीएल सबसे ऊपर `` ए प्लस `` में टॉप पे वही आन्ध्रा प्रदेश की तीन बिजली कम्पनिया `` ए`` ग्रेड पाकर ऊपरी पायदान पर वही प्रदेश की बिजली कम्पनियो में अपेक्षा के अनरूप उपभोक्ता सेवा में सुधार नहीं केस्को टॉप `` ए`` ग्रेड से खिसकी । सबसे निचले पायदान पर जम्मू कश्मीर व झारखण्ड ।

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा ने कहा जिस प्रकार से केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय की देखरेख में कंजूमर सर्विस रेटिंग आप डिस्कॉम का खुलासा किया गया है उससे एक बात तो साफ हो गई कि प्रदेश में बिजली कंपनियों द्वारा उपभोक्ताओं की सेवाओं मैं भारी गिरावट देखा जा रहा है।